RNI NO.UPHIN/2010/36547
वर्ष 14 अंक 96
लखनऊ, बृहस्पतिवार, 25 जनवरी, 2024
पृष्ठ 12 मूल्य ₹ 3
लखनऊ
नगर संस्करण

लखनऊ, नई दिल्ली, रायपुर और फरीदाबाद से प्रकाशित

पायनियर

www.dailypioneer.com

गणतंत्र दिवस पर मुख्य अतिथि होंगे फ्रांस के राष्ट्रपति

राष्ट्रीय-10

पीएम का मंत्रियों से आग्रह, अयोध्या में भीड़ न बढ़ाएं

रामलला के दर्शन करने में श्रद्धालुओं को दें वरीयता

दीपक कुमार झा। नई दिल्ली/अयोध्या

अयोध्या में राम मंदिर के लिए भारी भीड़ उमड़ने के एक दिन बाद, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बुधवार को अपने सभी कैबिनेट सहयोगियों को सलाह दी कि वे अभी अयोध्या में भगवान राम के दर्शन के लिए दौरा करने से बचें और फरवरी के मध्य से अपनी तीर्थयात्रा की योजना बनाएं। इसके अलावा, सरकार और सत्ताधारी पार्टी भाजपा के सूत्रों ने द पायनियर को बताया कि प्रत्येक पार्टी सांसद और पार्टी पदाधिकारियों को अपने निर्वाचन क्षेत्र या अधिकार क्षेत्र के भीतर लोगों, विशेषकर महिलाओं और बुजुर्ग राम भक्तों के लिए अयोध्या यात्रा की सुविधा प्रदान करने का लक्ष्य दिया गया है। सूत्रों ने कहा कि कैबिनेट बैठक के दौरान प्रधानमंत्री ने भारी भीड़ के कारण और वीआईपी प्रोटोकॉल के कारण होने वाली असुविधा को रोकने के लिए यह सुझाव दिया। 22 जनवरी को प्राण प्रतिष्ठा समारोह के एक दिन बाद राम मंदिर में भक्तों की भारी संख्या में भीड़ उमड़ने के बाद पीएम की सलाह आई है। सूत्रों ने कहा, मंत्री फरवरी के अंत में दर्शन के लिए राम मंदिर जाएंगे।

सूत्रों ने कहा कि पार्टी के सांसद और पूरी मंत्रिपरिषद अपने निर्वाचन क्षेत्र से कम से कम 2500 लोगों/भक्तों को अयोध्या तीर्थयात्रा के लिए सुविधा देंगे। अप्रैल-मई में होने वाले संभावित लोकसभा चुनावों से पहले बड़ी संख्या में अयोध्या आने वालों को सक्षम बनाने के लिए राज्य के मंत्रियों और नेताओं द्वारा भी इसी पैटर्न को दोहराया जा सकता है। तीन दशकों से भाजपा के लिए प्रमुख चुनावी मुद्दा और पार्टी के घोषणापत्र में अयोध्या में राम मंदिर के साथ अनुच्छेद 370 का मुद्दा रहा हैद्ध अयोध्या में मंदिर निर्माण के साथ जम्मू-कश्मीर में धारा 370 निरस्त करने की प्रक्रिया भी पूरी हो चुकी है। यह दूसरी बार था जब पीएम को हवाई अड्डे और रेलवे स्टेशन सहित कई परियोजनाओं का उद्घाटन करने के बाद दिसंबर में पहली बार अयोध्या जाने से परहेज करने का आग्रह करना पड़ा। इससे पहले मोदी ने भारी भीड़ की आशंका को देखते हुए 30 दिसंबर को लोगों से प्राण प्रतिष्ठा के दिन अयोध्या जाने से बचने के लिए कहा था। बुधवार को हुई कैबिनेट बैठक में मोदी ने मंत्रियों से अयोध्या में बहुप्रतीक्षित राम मंदिर के उद्घाटन के बाद जनता से मिले फीडबैक के बारे में भी पूछा। सोमवार को अयोध्या मंदिर में नए राम लला की मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा की गई, इस कार्यक्रम की अगुवाई पीएम मोदी ने की। समारोह का पूरे देश में सीधा प्रसारण किया गया। प्राण प्रतिष्ठा समारोह में शीर्ष राजनेताओं, व्यापारियों, खिलाड़ियों और मशहूर हस्तियों सहित कई हजार लोगों को आमंत्रित किया गया था। अभिषेक समारोह समाप्त होने के तुरंत बाद आमंत्रित लोगों ने भगवान राम के दर्शन किए।

जिसके बाद अगले दिन मंगलवार सुबह आम जनता के लिए मंदिर के दरवाजे खुल गए, पहले दिन करीब पांच लाख श्रद्धालुओं ने मंदिर में दर्शन किए। मंगलवार की सुबह तीन बजे से ही श्रद्धालु कतार में लग गये थे, श्रद्धालुओं की भारी भीड़ के कारण दर्शन को कुछ देर के लिए रोकना पड़ा। अयोध्या में राम मंदिर में दर्शन के लिए प्रतिदिन दो बार समय निर्धारित किया गया है, जो सुबह 7 बजे से 11.30 बजे तक और फिर दोपहर 2 बजे से शाम 7 बजे तक है। मंदिर की ओर जाने वाली सड़कों पर वाहनों की पहुंच अस्थायी रूप से निलंबित कर दी गई है, जिससे भक्तों को पैदल आना जरूरी हो गया है। एक व्यापक सुरक्षा योजना बनाई गई है, जिसमें यूपी पुलिस, रैपिड एक्शन फोर्स (आरएएफ) और निजी सुरक्षा गार्ड के जवान शामिल हैं, साथ ही अयोध्या में पिछले कुछ दिनों से भीड़ प्रबंधन के लिए 8,000 से अधिक पुलिस अधिकारियों को नियुक्त किया गया है। उत्तर प्रदेश के डीजी लॉ एंड ऑर्डर, प्रशांत कुमार ने कहा कि भीड़ प्रबंधन में सुधार किया गया है और भक्तों को बहुत सुगम तरीके से दर्शन की सुविधा दी जा रही है। प्रशांत कुमार ने द पायनियर को बताया, मंदिर में दर्शन को कई चैनल/कतार की व्यवस्था की गई है ताकि सभी आगंतुक मंदिर में समय बिता सकें। साथ उन्होंने अपील कि खासकर बुजुर्ग और दिव्यांग लोगों से की धैर्य रखें और पवित्र शहर में जल्दबाजी या हड़बड़ी न करें। प्रशासन और कानून व्यवस्था ने तीर्थयात्रियों के लिए विस्तृत व्यवस्था की है।

भ्रमित सुर में बोल रहा विपक्षी इंडिया गठबंधन

सौगर सेनगुप्ता/पीएनएस। कोलकाता/नई दिल्ली

तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी) सुप्रीमो व पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने बुधवार को राज्य में अकेले आम चुनाव लड़ने की घोषणा की, जबकि उनके पंजाब समकक्ष और आम आदमी पार्टी के नेता भगवंत मान ने विश्वास जताया है कि अरविंद केजरीवाल के नेतृत्व में आप राज्य में सभी लोकसभा सीटें जीतेगी। इसके साथ इंडिया गठबंधन को दोहरा झटका लगा है। टीएमसी और आप दोनों सात माह पुराने विपक्षी इंडिया गठबंधन की प्रमुख पार्टी है जिसके अध्यक्ष कांग्रेस प्रमुख मल्लिकार्जुन खड़गे हैं। दिलचस्प बात यह है कि जून 2023 में लंबे समय से सहयोगी विपक्षी समूह की कल्पना करने वाले जेडीयू अध्यक्ष व बिहार के सीएम नीतीश कुमार लंबे समय तक भाजपा के सहयोगी रहने के बाद नाता तोड़ने के बाद एक बार फिर एनडीए में आने के लिए उत्सुक हैं।

कांग्रेस और तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी) के बीच सीटों के बंटवारे पर चल रहे टकराव के बीच बैठकों पर विराम लगाते हुए ममता बनर्जी ने अचानक घोषणा की कि उनकी पार्टी पश्चिम बंगाल में अकेले लोकसभा चुनाव में उतरेगी। उनका कांग्रेस के साथ कोई संबंध नहीं है। ममता बनर्जी ने कहा कि बंगाल में कोई गठबंधन नहीं है, कांग्रेस को 300 सीटों पर चुनाव लड़ने दें और क्षेत्रीय दलों को शेष सीटों पर चुनाव लड़ने दें। हम उन सीटों के संबंध में हस्तक्षेप बर्दाश्त नहीं करेंगे और अगर कोई (कांग्रेस) हस्तक्षेप करता है तो उसे हमे अपने तरीके से संभाल लेंगे। हम बंगाल में अकेले लड़ेंगे। इसी तरह की घोषणा पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत मान ने राज्य में कांग्रेस पार्टी के साथ गठबंधन की संभावना को खारिज करते हुए कहा, आप उनके (कांग्रेस) साथ नहीं जा रही है। साथ यह भी दावा किया कि आम आदमी पार्टी 2024 के आम चुनाव में पंजाब की सभी 13 लोकसभा सीटे जीतेगी। कैबिनेट बैठक के बाद चंडीगढ़ में मीडिया से बात करते हुए मान ने कहा, मैंने कई मौकों पर (शेष पेज 9)

केंद्र सरकार ने 4जी लक्ष्य प्राप्त करने के लिए जंगलों में मोबाइल टावर की अनुमति दी

अर्चना ज्योति। नई दिल्ली

केंद्रीय पर्यावरण मंत्रालय ने देश भर के राष्ट्रीय उद्यानों और वन्यजीव आवासों में तकनीकी प्रगति और प्राकृतिक आवासों के संरक्षण के बीच संतुलन बनाने का प्रयास करते हुए सावधानी पूर्वक कदम उठाते हुए बाघों के घरों के महत्वपूर्ण वन्यजीव क्षेत्र व वन संरक्षित क्षेत्रों में मोबाइल टावरों की स्थापना के लिए नियमन में ढील दी है। इससे सरकार को देश के 24,680 अछूते गांवों में निर्बाध 4जी इंटरनेट कनेक्टिविटी बढ़ाने की अपनी महत्वाकांक्षी परियोजना को आगे बढ़ाने में मदद मिलेगी। इसमें कम से कम 16,464 दूरसंचार टावरों के निर्माण की परिकल्पना की गई है। हालांकि, संरक्षित क्षेत्रों में इस तरह के निर्माण के लिए हरी झंडी इन शर्तों के साथ दी गई है कि संरक्षित भूमि को 'उपयोगकर्ता एजेंसी' को केवल तभी आवंटित किया जा सकता है जब कोई निजी या वैकल्पिक राजस्व भूमि उपलब्ध न हो। हाल ही में जारी अपने दिशानिर्देश में, मंत्रालय ने यह भी कहा कि उपयोगकर्ता एजेंसी को वैकल्पिक भूमि की अनुपलब्धता की पुष्टि करते हुए जिला मजिस्ट्रेट से एक शपथ पत्र लेना होगा। एक उपयोगकर्ता एजेंसी मोबाइल टावर के निर्माण और संचालन का प्रस्ताव करने और उसकी देखरेख करने वाली इकाई को संदर्भित करती है, जो एक मोबाइल नेटवर्क ऑपरेटर, सरकारी एजेंसी या संरक्षित क्षेत्र के भीतर स्थापना के लिए अनुमति मांगने वाली कोई अन्य पार्टी हो सकती है। विशेष रूप से, वन्य जीवन (संरक्षण) अधिनियम, 1972 के तहत अधिसूचित मुख्य/महत्वपूर्ण बाघ आवास में मोबाइल टावरों की स्थापना के किसी भी प्रस्ताव को अनुमति नहीं दी जाएगी। राष्ट्रीय उद्यानों में मोबाइल टावरों के निर्माण और ऑप्टिकल फाइबर केबल बिछाने के लिए मंत्रालय के तहत राष्ट्रीय वन्य जीवन बोर्ड (एससीएनबीडब्ल्यूएल) की स्थायी (शेष पेज 9)

बुलंदशहर में मेगा प्रोजेक्ट लॉन्च करेंगे पीएम मोदी

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पश्चिमी उत्तर प्रदेश के बुलंदशहर में लोकसभा चुनाव का आगाज करेंगे। वह अपनी पहली चुनावी रैली को गुरुवार को संबोधित करेंगे। यह देखते हुए कि वाराणसी पीएम का निर्वाचन क्षेत्र है, इसके बावजूद उनके बुलंदशहर से चुनाव अभियान शुरू करने के निर्णय ने नई रणनीति को लेकर सियासी अटकलें तेज हो गई हैं। प्रधानमंत्री 19,100 करोड़ रुपये से अधिक की विकास परियोजनाओं का शुभारंभ करेंगे, जिसमें दो स्टेशनों से माल गाड़ियों को हरी झंडी दिखाकर समर्पित माल गलियारे (डीएफसी) पर न्यू खुर्जा और न्यू रेवाड़ी के बीच 173 किलोमीटर लंबी डबल-लाइन विद्युतीकृत खंड शामिल है। बुलंदशहर में रैली 2024 के लोकसभा चुनावों के लिए चुनाव अभियान की शुरुआत होगी और यह अयोध्या में राम मंदिर की प्राण प्रतिष्ठा के कुछ दिनों बाद हो रही है।

भाजपा का दावा है कि बुलंदशहर में पीएम मोदी की रैली में करीब पांच लाख लोग शामिल होंगे। भाजपा नेताओं का मानना है कि पीएम मोदी के लिए भी बुलंदशहर भाग्यशाली है क्योंकि प्रधानमंत्री ने 2014 के लोकसभा चुनाव के लिए अपना अभियान इसी शहर से शुरू किया था। प्रधानमंत्री का इरादा उन क्षेत्रों के मतदाताओं और समर्थकों से जुड़ने का भी है जहां पिछले चुनावों में पार्टी को चुनौतियों का सामना करना पड़ा था। पश्चिमी उत्तर प्रदेश की लड़ी गई सीटों पर जीत सुनिश्चित करने के लिए जीत के मंत्र को साझा करने और समर्थन जुटाने पर ध्यान केंद्रित किया गया है। भाजपा, वर्ष 2014 के लोकसभा चुनावों में 80 में से 71 सीटें जीतकर उत्तर प्रदेश में जीत हासिल की थी। वर्ष 2019 के आम चुनावों में नौ सीटों की गिरावट देखी गई। विशेष रूप से, 2019 में छह निर्वाचन क्षेत्रों में हार के साथ, पश्चिमी उत्तर प्रदेश की 14 सीटों में से आठ पर भाजपा का कब्जा है। आगामी 2024 के लोक सभा चुनावों के साथ, प्रधान मंत्री मोदी का लक्ष्य इस प्रवृत्ति को पलटना है। खासकर 14 में से आठ सीटों पर वर्तमान में भाजपा का कब्जा है। कांग्रेस और समाजवादी पार्टी आगामी लोकसभा चुनावों के लिए सीट-बंटवारे को लेकर बातचीत चल रही है। उत्तर प्रदेश में राजनीतिक परिदृश्य आने वाले महीनों में एक दिलचस्प मुकाबले के लिए तैयार दिख रहा है।

इस अवसर पर, प्रधान मंत्री मोदी 19,100 करोड़ रुपये से अधिक की विकास परियोजनाओं का शुभारंभ करेंगे, जिसमें मालगाड़ियों को हरी झंडी दिखाकर समर्पित माल ढुलाई गलियारे (डीएफसी) पर न्यू खुर्जा और न्यू रेवाड़ी के बीच 173 किलोमीटर लंबी डबल-लाइन विद्युतीकृत खंड शामिल है। अधिकारियों ने कहा कि यह नया डीएफसी खंड महत्वपूर्ण है क्योंकि यह पश्चिमी और पूर्वी माल गलियारों के बीच महत्वपूर्ण कनेक्टिविटी स्थापित करता है। यह खंड इंजीनियरिंग की अपनी अनोखी उपलब्धि के लिए भी जाना जाता है क्योंकि इसमें ऊंची विद्युतीकरण वाली एक किलोमीटर लंबी डबल-लाइन रेल सुरंग है, जो दुनिया में अपनी तरह की पहली सुरंग है। इस सुरंग को डबल-स्टैक कंटेनर ट्रेनों को निर्बाध रूप से संचालित करने के लिए डिजाइन किया गया है। यह नया डीएफसी खंड डीएफसी ट्रैक पर मालगाड़ियों के स्थानांतरण के कारण यात्री ट्रेनों के संचालन को बेहतर बनाने में मदद करेगा। प्रधानमंत्री मथुरा-पलवल और चिपियाना बुजुर्ग-दादरी खंडों को जोड़ने वाली चौथी रेल लाइन और कई सड़क विकास परियोजनाओं का भी उद्घाटन करेंगे। उन्होंने कहा कि 5,000 करोड़ रुपये से अधिक की संचयी लागत पर विकसित ये सड़क परियोजनाएं कनेक्टिविटी में सुधार करेंगी और क्षेत्र में आर्थिक विकास में मदद करेंगी। पीएम मोदी जिन अन्य परियोजनाओं का उद्घाटन करेंगे उनमें इंडियन ऑयल की टूंडला-गवारिया पाइपलाइन और ग्रेटर नोएडा में एकीकृत औद्योगिक टाउनशिप (आईआईटीजीएन) शामिल हैं, जिसे प्रधानमंत्री के तहत बुनियादी ढांचा कनेक्टिविटी परियोजनाओं की एकीकृत योजना और समन्वित कार्यान्वयन के दृष्टिकोण के अनुरूप विकसित किया गया है। 1,714 करोड़ रुपये की लागत से निर्मित, यह परियोजना 747 एकड़ में फैली हुई है और दक्षिण में ईस्टर्न पेरिफेरल एक्सप्रेसवे और पूर्व में दिल्ली-हावड़ा ब्रॉड गेज रेलवे लाइन के साथ पूर्वी और पश्चिमी समर्पित माल गलियारों के चौराहे के पास स्थित है। अधिकारियों ने कहा कि यह रणनीतिक स्थान इंजीनियरिंग का अद्वितीय कनेक्टिविटी सुनिश्चित करता है क्योंकि मल्टी-मोडल कनेक्टिविटी के लिए अन्य बुनियादी ढांचे इस परियोजना के आसपास मौजूद हैं। अप्रैल-मई में लोकसभा चुनाव होने की संभावना है, ऐसे में ये परियोजनाएं सत्तारूढ़ भाजपा के लिए अपनी विकासवादी साख को बढ़ावा देने में काम आएंगी, खासकर इसलिए क्योंकि यह राजनीतिक रूप से महत्वपूर्ण राज्य उत्तर प्रदेश में है।

यूपी को नई पहचान दिला रही ओडीओपी योजना: मुख्यमंत्री

इसरो वैज्ञानिक ऋतु कारीधाल को सम्मानित करते मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि उत्तर प्रदेश स्थापना दिवस प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के विजन को धरातल पर उतरने का एक सशक्त माध्यम बना है। वर्ष 2018 में आज ही के दिन हमारी सरकार ने एक जिला एक उत्पाद योजना का शुभारंभ किया था, जो आज उत्तर प्रदेश को एक नई पहचान दिला रही है। इस कार्यक्रम को शुरु करने का परिणाम है कि पहले की सरकारों में यूपी का निर्यात जहां 86 हजार करोड़ रुपए का था। वहीं आज उत्तर प्रदेश 2 लाख करोड़ रुपए का ओडीओपी निर्यात कर रहा है। उन्होंने कहा कि प्रदेश में 96 लाख एमएसएमई यूनिट क्रियाशील हैं, जिन्होंने कोरोना कालखंड में दूसरे प्रदेश से वापस आए उत्तर प्रदेश के 40 लाख लोगों को रोजगार दिया। हमारी सरकार प्रदेश की एमएसएमई यूनिट को किसी दुर्घटना या आपदा पर पांच लाख रुपए का सुरक्षा बीमा कवर उपलब्ध करा रही है।

योगी ने बुधवार को अवध शिल्पग्राम से सातवें उत्तर प्रदेश दिवस का शुभारम्भ किया। साथ ही उन्होंने उत्तर प्रदेश गौरव सम्मान 2023-24 का वितरण और ओडीओपी उत्पादों की ई-मार्केटिंग के लिए 'ओडीओपी मार्ट पोर्टल' की लॉन्चिंग भी की। इस दौरान उन्होंने कहा कि उत्तर प्रदेश के सातवें स्थापना दिवस की बधाई दी और कहा कि नोएडा में पिछले वर्ष आयोजित हुए इंटरनेशनल ट्रेड शो के माध्यम से दुनिया ने उत्तर प्रदेश के पोटेंशियल को देखा। उस ट्रेड शो में 500 से अधिक विदेशी बायर्स आए थे। सीएम योगी ने कहा कि प्रदेश के तीसरे स्थापना दिवस पर हमारी सरकार ने अप्रेंटिसशिप की नई स्कीम लागू की थी, (शेष पेज 9)

लक्षद्वीप ने लिखी उम्मीदों की मनमोहक कहानी, प्रधानमंत्री के दौरे से बदली तस्वीर

पायनियर समाचार सेवा। कोच्चि

अरब सागर में द्वीपों के समूह लक्षद्वीप एक बार फिर अपनी शैली के साथ सामान्य स्थिति में वापस लौट आया है, जहां पिछले कुछ महीनों तक अलगाववादी ताकते नशीले पदार्थों का व्यापार केंद्र बनाने के लिए भारत विरोधी विरोध प्रदर्शन किया था। अब सुरम्य द्वीपों के निवासी केंद्र द्वारा चलाए जा रहे नीली क्रांति में रंग भरते हुए अर्थव्यवस्था को पूरी गति से चलाने में व्यस्त हैं। अब लक्षद्वीप की आबादी के जीवन को फिर से जीवंत करने में अगाती, अरेबियनेसिस, कोया, सुलिपाल्मा और पुरूषोत्तमनी की विशेष भूमिका है।

यह सब संभव हुआ इसी महीने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के द्वीपों के दो दिवसीय दौरे के साथ। जहां पीएम मोदी ने स्थानीय निवासियों, विशेषकर महिलाओं के साथ बातचीत की। पीएम के साथ जब महिलाओं ने साझा किया कि वे जीवन के दोनों लक्ष्यों को पूरा करने के लिए कैसे संघर्ष कर रही हैं, तो प्रधानमंत्री ने उन्हें नीली क्रांति लाने की विकास योजना प्रधानमंत्री मत्स्य सम्पदा योजना (पीएम एमएसवाई) की क्षमता के बारे में समझाया जो टिकाऊ और स्थानीय जिम्मेदार लोगों के माध्यम से संभव है। पीएम मोदी ने इस अवसर पर भारतीय कृषि

अनुसंधान परिषद (आईसीएआर) के तहत आने वाली इकाई नेशनल ब्यूरो ऑफ फिश जेनेटिक रिसोर्सेज के वैज्ञानिकों को सम्मानित किया। आईसीएआर के निदेशक डॉ. यूके सरकार ने प्रधानमंत्री को प्रायद्वीपीय समुद्री मछली आनुवंशिक संसाधन केंद्र द्वारा विकसित सजावटी झींगा की पांच किस्मों के बारे में जानकारी दी। इन झींगा मछलियों का प्रजनन महिलाओं के लिए एक आदर्श पेशा है क्योंकि इसमें देखभाल, कौशल और निश्चित रूप से मातृ स्पर्श की आवश्यकता होती है। डॉ. सरकार ने कहा कि अद्वितीय रंग और डिजाइन पैटर्न वाले सुंदर झींगा को हमारे वैज्ञानिकों द्वारा विकसित किया गया है। जिसे हमने लक्ष्यद्वीप की महिलाओं को सौंप दिया है।

प्रधान वैज्ञानिक और परियोजना के मुख्य वास्तुकार डॉ. टीटी अजित कुमार ने कहा कि सामुदायिक जलीय कृषि इकाइयों के लिए प्रत्येक में 2.5 लाख रुपये का निवेश और न्यूनतम दस महिला मछुआरों ने प्रधानमंत्री के नई दिल्ली पहुंचने से पहले काम करना शुरू कर दिया। 45 महिलाएं इन अनोखे झींगा के प्रजनन में पूरी तरह से लगी हुई हैं जो देखने में सुखद हैं। हमने सजावटी मछली की नस्लें विकसित की हैं और उन्हें अच्छा बाजार मिला है। अजित ने द पायनियर को बताया, सजावटी झींगा मछली की नस्लों को नीली क्रांति में जोड़ने से नए आयाम स्थापित होंगे। डॉ. सरकार के अनुसार, सजावटी झींगा का सीमित प्रजनन तटीय समुदायों के लोगों के लिए वैकल्पिक आजीविका के रूप में उभरने की क्षमता रखता है। अजित का कहना है कि लक्ष्यद्वीप में विकसित झींगा मन्नार की खाड़ी में पाले गए झींगा से अलग होगा। समय के साथ, लक्ष्यद्वीप और मन्नार की खाड़ी की नस्लें वैश्विक ट्रेडमार्क के रूप में उभरेंगी। केंद्र सरकार द्वारा कावारत्ती में एक अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे के लिए हरी झंडी देने के साथ, झींगा स्टैंड के विपणन के बारे में द्वीपवासियों की चिंता हल हो गई। (शेष पेज 9)

हर रामभक्त को रामलला का सुगम दर्शन कराना हमारा कर्तव्य

सीएम ने की अयोध्याधाम में दर्शनार्थियों की व्यवस्था की समीक्षा

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने अयोध्याधाम में रामलला के दर्शन की आकांक्षा लिए उमड़े आस्था के महासागर के बीच हर श्रद्धालु के सहज, सुगम व संतोषपूर्ण दर्शन के लिए सभी आवश्यक प्रबंध करने के निर्देश दिए हैं। मंगलवार को अयोध्या में श्रीरामजन्मभूमि ट्रस्ट के पदाधिकारियों व स्थानीय प्रशासन के साथ परिस्थितियों का जायजा लेने के बाद बुधवार को मुख्यमंत्री ने शासन स्तर के अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए।

मुख्यमंत्री ने कहा कि अयोध्याधाम में आस्था का जनसमुद्र देखा जा सकता है। पूरे देश से श्रद्धालुओं का आगमन हो रहा है। हर कोई अपने आराध्य प्रभु के दर्शन का पुण्य लाभ चाहता है। भारी संख्या में श्रद्धालुओं का आगमन स्वाभाविक है। ऐसी परिस्थितियों में हर श्रद्धालु

की सुरक्षा, सुविधा व सुगम दर्शन की व्यवस्था करना हम सभी का कर्तव्य है। स्थानीय प्रशासन और मंदिर न्यास के बेहतर समन्वय के साथ क्राउड मैनेजमेंट किया जाना चाहिए। राम पथ, भक्ति पथ, धर्म पथ और जन्मभूमि पथ पर, जहां भी दर्शनार्थी हों, कतारबद्ध खड़े हों। भीड़ न लगे। कतार चलायमान रहे। बुजुर्गों/बच्चों/महिलाओं का विशेष ध्यान दें। दर्शनार्थियों की भावनाओं का सम्मान करते हुए प्रमुख पथों पर लो/ट्यून में राम भजन बजने चाहिए। सुरक्षा में तैनात पुलिसकर्मियों का व्यवहार मर्यादित होना चाहिए।

कतारबद्ध श्रद्धालुओं के लिए जगह-जगह पर पेयजल की व्यवस्था कराएं। दिव्यांग अथवा अति बुजुर्ग श्रद्धालु के लिए आवश्यकतानुसार व्हीलचेयर के प्रबंध भी होने चाहिए। ठंड बहुत है, ऐसे में अलाव की व्यवस्था कराएं। भक्ति पथ और जन्मभूमि पथ पर पर जूट मैटिंग कराएं। प्लास्टिक की कुर्सियां लगाएं ताकि बुजुर्ग एवं वृद्धजन आवश्यकतानुसार विश्राम कर सकें। सभी घाटों सहित पूरे नगर में साफ-सफाई--स्वच्छता लगातार होती रहे। मशीनीकृत सफाई हो।

मुख्यमंत्री ने कहा कि मुख्य सचिव, डीजीपी, अपर मुख्य सचिव मुख्यमंत्री, प्रमुख सचिव परिवहन और प्रमुख सचिव नगर विकास बेहतर समन्वय से श्रद्धालुओं की सुरक्षा और सुविधा के लिए आवश्यक प्रबंधन सुनिश्चित कराएंगे।

वीआईपी जन अयोध्या आगमन से एक सप्ताह पूर्व करें सूचित

मुख्यमंत्री ने कहा कि अयोध्याधाम में अपने आराध्य प्रभु श्रीरामलला के दर्शन की आकांक्षा लिए पूरे देश से भारी संख्या में श्रद्धालुओं के आगमन से उत्पन्न अविस्मरणीय स्थिति के दृष्टिगत अति विशिष्ट/ विशिष्ट/ गणमान्य जन द्वारा अयोध्या आगमन का कार्यक्रम बनाने से एक सप्ताह पूर्व स्थानीय प्रशासन, श्रीरामजन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र न्यास अथवा राज्य सरकार को सूचित करना हितकर होगा। मुख्यमंत्री निर्देश दिए कि एक होल्डिंग एरिया तैयार करें, जहां दर्शनार्थियों का बड़ा समूह एकत्रित हो सके। यहां से श्रद्धालुओं को धीरे-धीरे दर्शन के लिए छोड़ा जाना उचित होगा। यहां पर उनके सामान, जूता, चप्पल, मोबाइल आदि सामान की सुरक्षा के प्रबंध होने चाहिए।

गणतंत्र दिवस पर न होने पाए किसी की धार्मिक भावनाओं का अपमान

मुख्यमंत्री ने निर्देशित किया कि 26 जनवरी को राष्ट्रीय पर्व गणतंत्र दिवस है और उल्लासमय-उत्साहपूर्ण वातावरण में कतिपय अराजक तत्व माहौल को खराब करने का कुत्सित प्रयास कर सकते हैं। यह सुनिश्चित किया जाए कि किसी गीत-संगीत/नारेबाजी अथवा किसी भी अन्य कृत्य से किसी की धार्मिक भावनाओं का अपमान अथवा तिरस्कार न हो। यदि कोई विद्वेष फैलाने वाले ऐसे प्रयास करता हुआ पाया जाए तो उनके विरुद्ध जीरो टॉलरेंस की नीति के अनुरूप कठोरतम कार्रवाई हो।

राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री व भाजपा अध्यक्ष ने दी उत्तर प्रदेश दिवस की बधाई

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

उत्तर प्रदेश दिवस को लेकर राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और भाजपा अध्यक्ष जेपी नड्डा ने एक्स के माध्यम से बधाई दी। राष्ट्रपति मुर्मू ने एक्स पर लिखा कि 'उत्तर प्रदेश दिवस पर राज्य के सभी निवासियों को मेरी हार्दिक शुभकामनाएं। देश में सबसे अधिक आबादी वाला यह राज्य भारत की सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक प्रगति में अग्रणी भूमिका निभा रहा है। मैं उत्तर प्रदेश के कौशलयुक्त, परिश्रमी और निष्ठावान लोगों के सुख-समृद्धि की मंगल कामना करती हूं। मुझे विश्वास है कि यह राज्य और यहां के निवासी सदा विकास के पथ पर अग्रसर रहेंगे।

प्रधानमंत्री मोदी ने एक्स पर पोस्ट करते हुए कहा कि 'अध्यात्म, ज्ञान और शिक्षा की तपोभूमि उत्तर प्रदेश के अपने सभी परिवारजनों को राज्य के स्थापना दिवस की अनेकानेक शुभकामनाएं। बीते सात वर्षों में प्रदेश ने प्रगति की एक नई गाथा लिखी है, जिसमें राज्य सरकार के साथ जनता-जनार्दन ने भी बढ़-चढ़कर भागीदारी की है। मुझे विश्वास है कि विकसित भारत की संकल्प यात्रा में उत्तर प्रदेश अग्रणी भूमिका निभाएगा। भाजपा अध्यक्ष जेपी नड्डा ने एक्स पर लिखा कि 'संस्कृति, अध्यात्म व विरासत की पुण्यभूमि उत्तर प्रदेश के स्थापना दिवस की समस्त प्रदेशवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के मार्गदर्शन और मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में प्रदेश निरंतर प्रगति और प्रतिष्ठा के पथ पर अग्रसर है। सेवा, सुशासन और विकास का हमारा संकल्प विकसित उत्तर प्रदेशश् का पथ प्रशस्त कर रहा है। वहीं सीएम योगी ने एक्स पर पोस्ट करते हुए राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री और भाजपा अध्यक्ष को धन्यवाद दिया।

सूडा मुख्यालय में दिलाई गई मताधिकार प्रयोग की शपथ

लखनऊ। राष्ट्रीय मतदाता दिवस की पूर्व संध्या पर राज्य नगरीय विकास अभिकरण सूडा के मुख्यालय में सभी अधिकारियों व कर्मचारियों को शपथ दिलाई गई। यह शपथ ग्रहण कार्यक्रम निदेशक सूडा डॉ. अनिल कुमार की अगुवाई में हुआ। कार्यक्रम का आगाज करते हुए निदेशक सूडा डॉ. अनिल कुमार ने कहा कि लोकतंत्र की सबसे बड़ी ताकत मताधिकार की शक्ति है। ये अधिकार ही हमें अपने लिए, देश के लिए प्रतिनिधि चुनने का अधिकार देता है। हम भाग्यवान हैं कि हम भारत देश में जन्मे हैं। हमारे देश में लोकतंत्र की एक स्वस्थ परंपरा हैं। जिसमें देश के प्रत्येक व्यस्क नागरिक को मतदान का अधिकार है। अपने इस अधिकार का प्रयोग करना प्रत्येक नागरिक का दायित्व है। हम खुशनसीब हैं कि हमें अपने मताधिकार का प्रयोग करने की स्वतंत्रता है। वरना आज के समय में भी विश्व के मानचित्र में आपको अनेक ऐसे देश मिल जाएंगे, जहां पर रहने वालों को उनके कोई अधिकार तक नहीं हासिल हैं। ऐसे में देश के प्रत्येक मतदाता को अपने मताधिकार का प्रयोग करना चाहिए। इसके साथ निदेशक सूडा ने कहा कि प्रत्येक अधिकार अपने साथ कुछ जिम्मेदारियां भी लेकर आता है। अत: हम जितना अपने अधिकारों को लेकर जागरुक हैं उतना ही अपने कर्तव्यों व दायित्वों को लेकर भी सजग रहना चाहिए। इस शपथ ग्रहण कार्यक्रम में अपर निदेशक सूडा आनंद कुमार शुक्ला, वित्त नियंत्रक सूडा संजीव गुप्ता, कार्यक्रम अधिकारी सूडा अतुल सिंह चौहान व परियोजना अधिकारी विजया तिवारी सहित बड़ी संख्या में अधिकारी व कर्मचारी उपस्थित रहे।

कांग्रेस मुख्यालय में मनाई गई कर्पूरी ठाकुर की जयंती

लखनऊ। स्वतंत्रता संग्राम सेनानी, शिक्षक, राजनीतिज्ञ तथा बिहार राज्य के दूसरे उपमुख्यमंत्री तथा दो बार मुख्यमंत्री कर्पूरी ठाकुर की जयंती बुधवार को प्रदेश कांग्रेस मुख्यालय पर मनाई गई। इस मौके पर उत्तर प्रदेश कांग्रेस कमेटी के प्रदेश उपाध्यक्ष, प्रभारी प्रशासन दिनेश सिंह तथा संगठन महासचिव अनिल यादव ने स्व. कर्पूरी ठाकुर के चित्र पर पुष्प अर्पित कर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की। इस अवसर पर सिंह ने कहा कि कर्पूरी ठाकुर का जन्म भारत में ब्रिटिश शासन काल के दौरान समस्तीपुर के एक गांव पितौंझिया में हुआ था जिसे अब कर्पूरी ग्राम कहा जाता है। उन्होंने 1940 में मैट्रिक की परीक्षा पटना विश्वविद्यालय से द्वितीय श्रेणी में पास की। इसके पश्चात 1942 का भारत छोड़ो आंदोलन छिड़ गया तो उसमें कूद पड़े। परिणामस्वरूप 26 महीने तक भागलपुर के कैंप जेल में जेल-यातना भुगतने के उपरांत उन्हें 1945 में रिहा किया गया।

निर्धारित एसओपी के अनुरूप हो संवेदनशील व महत्वपूर्ण प्रतिष्ठानों की सुरक्षा: डीजीपी

● गणतंत्र दिवस पर विशेष सुरक्षा व्यवस्था व सुचारू यातायात को लेकर पुलिस प्रमुख ने दिए विस्तृत निर्देश

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

डीजीपी विजय कुमार ने गणतंत्र दिवस समारोह पर पूरे प्रदेश में विशेष सुरक्षा इंतजाम और सुचारू यातायात व्यवस्था बनाए रखने को लेकर बुधवार को पुलिस महकमे के आला अधिकारियों को विस्तृत निर्देश दिए। उन्होंनें कहा कि संवेदनशील एवं अन्य महत्वपूर्ण प्रतिष्ठानों की सुरक्षा निर्धारित एसओपी के अनुरूप सुनिश्चित की जाए।

डीजीपी अपने निर्देशों में कहा कि, रेलवे स्टेशन, मेट्रो स्टेशन, बस स्टेशन, एयरपोर्ट, सिनेमाहाल, मल्टीप्लेक्स, मनोरंजन के स्थल, शॉपिंग मॉल, होटल, धर्मशाला, गेस्टहाउस, भीड़-भाड़ वाले स्थानों एवं धार्मिक स्थलों पर विशेषरूप से सुरक्षा प्रबन्ध किए जाएं। स्निफर डॉग एवं बम डिस्पोजल स्कवाड द्वारा

सघन चेंकिग कराई जाए तथा सुरक्षा कर्मियों को ब्रीफ करने के उपरान्त ड्यूटी पर लगाया जाए। इस अवसर पर आयोजित होने वाले कार्यक्रमों की सुरक्षा, यातायात व्यवस्था के लिए प्रभावी व्यवस्थापन किया जाए। कार्यक्रम से पूर्व एंटी-सबोटॉज चेकिंग कराते हुए विशेष सुरक्षा प्रबन्ध किए जाएं।

प्रदेश एवं जनपदों के बार्डर पर निरन्तर प्रभावी चेकिंग सुनिश्चित की जाए। समस्त चेकपोस्ट एवं बैरियर ड्यूटी को सतर्क व समुचित ब्रीफ किया जाए। समस्त सीसीटीवी कैमरों को क्रियाशील कर लिया जाए। समस्त कमिश्नरेट, जनपद की सोशल मीडिया टीम 24 गुणे 7 सोशल मीडिया के प्रत्येक प्लेटफार्म पर निगरानी रखें तथा मुख्यालय स्थित सोशल मीडिया टीम से समन्वय रखते हुए कोई आपत्तिजनक, भ्रामक पोस्ट का तुरंत संज्ञान लेकर उचित कार्रवाई करें। डीजीपी ने निर्देश दिए हैं कि समस्त जनपद व कमिश्नरेट में नियमित रूप से प्रात:कालीन पोस्टर पार्टी का गठन कर चेकिंग सुनिश्चित की जाए। गणतंत्र दिवस के आयोजनों की अचूक सुरक्षा व्यवस्था के दृष्टिगत समस्त राजपत्रित अधिकारियों एवं पुलिस बल को समुचित ब्रीफ करते हुए उच्च सतर्कता रखी जाए।

पुलिसजनों ने ली लोकतंत्र की मर्यादा बनाए रखने की शपथ

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

डीजीपी विजय कुमार ने राष्ट्रीय मतदाता दिवस पर गुरुवार को सार्वनिक अवकाश होने के दृष्टिगत आज बुधवार को पुलिस मुख्यालय में नियुक्त सभी अधिकारियों और कर्मचारियों को शपथ दिलाई। इस दौरान डीजीपी के जीएसओ सहित अन्य सभी वरिष्ठ अफसर मौजूद रहे।

पुलिस मुख्यालय में नियुक्त समस्त अधिकारियों और कर्मचारियों द्वारा शपथ ली गई कि 'हम, भारत के नागरिक, लोकतंत्र में अपनी पूर्ण आस्था रखते हुए यह शपथ लेते हैं कि हम अपने देश की लोकतांत्रिक परम्पराओं की मर्यादा को बनाए रखेंगे तथा स्वतंत्र, निष्पक्ष एवं शांतिपूर्ण निर्वाचन की गरिमा को अक्षुण्ण रखते हुए, निर्भीक होकर, धर्म, वर्ग, जाति, समुदाय, भाषा अथवा अन्य किसी भी प्रलोभन से प्रभावित हुए बिना सभी निर्वाचनों में अपने मताधिकार का प्रयोग करेंगे।

राजभर ने कहा एनडीए 400 से अधिक सीटें जीतेगी, तीसरी बार पीएम बनेंगे मोदी

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

सुहेलदेव भारतीय समाज पार्टी के अध्यक्ष ओम प्रकाश राजभर ने बिहार के पूर्व सीएम रहे जननायक कर्पूरी ठाकुर को उनकी 100वीं जयंती पर श्रद्धांजलि अर्पित की है। उन्होंने कहा है कि विपक्ष जातिवार जनगणना और पीडीए की बातें जितनी भी कर ले आज एनडीए के सामने कोई है नहीं। दलितों, पिछड़ों और वंचितों का काम तो पीएम नरेंद्र मोदी कर रहे हैं। 2024 लोकसभा चुनाव में 400 से अधिक सीटों के साथ एनडीए गठबंधन जीतेगा और नरेंद्र मोदी तीसरी बार पीएम बनेंगे।

बुधवार को मीडिया से बातचीत में ओम प्रकाश राजभर ने बिहार के पूर्व सीएम जननायक कर्पूरी ठाकुर को उनकी 100वीं जयंती पर भारत रत्न से सम्मानित करने के फैसले पर पीएम को बधाई दी। उन्होंने कहा कि कर्पूरी ठाकुर ने अति पिछड़े, दलित व वंचित समाज की लड़ाई को आगे बढ़ाया। वह पहले मुख्यमंत्री थे जिन्होंने बिहार में पिछड़ों को 26 फीसदी आरक्षण दिया। जननायक की जयंती पर उन्हें भारत रत्न दिए जाने का संदेश पूरे देश में गया है। दलित, वंचित समाज आज एनडीए के साथ खड़ा है। गरीबों को योजनाओं का पूरा लाभ मिल रहा है।

अमृतकाल के दूसरे गणतंत्र दिवस को भव्य तरीके से मनाने की तैयारी

● मुख्य सचिव ने जारी किया निर्देश, विस्तृत कार्ययोजना तैयार कर उसके क्रियान्वयन की प्रक्रिया हुई शुरू

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

रामलला प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम के उपरांत पूरी तरह से भक्ति मय व राममय हो चुके उत्तर प्रदेश में 26 जनवरी को देश के राष्ट्रीय पर्व गणतंत्र दिवस के आयोजन को लेकर भी योगी सरकार ने तैयारियां शुरू कर दी हैं। सीएम योगी आदित्यनाथ के विजन अनुसार अमृतकाल के दूसरे गणतंत्र दिवस को भव्य तरीके से मनाए जाने के लिए विस्तृत कार्ययोजना को तैयार कर उसके क्रियान्वयन की प्रक्रिया शुरू हो गई है। इसके अनुसार पूरे प्रदेश में पारंपरिक सादगी युक्त मगर आकर्षक तरीके से राष्ट्रीय पर्व मनाया जाएगा। मुख्य सचिव दुर्गा शंकर मिश्र द्वारा इस संबंध में सीएम योगी के आदेशानुसार प्रदेश के सभी जिलाधिकारियों को निर्देशित किया गया है कि एक परामर्श समिति का आयोजन के दृष्टिगत गठन किया जाए। इसमें स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों, शहीदों के परिजनों, विभिन्न समाजिक संगठनों, राजनीतिक दलों, सरकारी विभागों, शैक्षिक संस्थाओं तथा जिला सैनिक कल्याण कार्यालय के प्रतिनिधियों को शामिल किया जाएगा जो गणतंत्र दिवस के आयोजन में होने वाले सांस्कृतिक कार्यक्रमों की रूपरेखा तय कर सकें। इसके अतिरिक्त देश के युवाओं को 'मेरा युवा भारत' ऐप के बारे में जागरुक करने व इससे जोड़ने के लिए प्रेरित करने की मुहिम भी छेड़ी जाएगी। इस वर्ष 26 जनवरी को देश का 75वां गणतंत्र दिवस मनाया जाएगा। खास बात यह है कि आजादी के अमृतकाल में यह दूसरा गणतंत्र दिवस होगा और इसी बात को ध्यान में रखकर पारंपरिक सादगी युक्त आकर्षक तरीके से प्रदेश भर में विभिन्न आयोजन होंगे। ऐसे में मुख्य सचिव के निर्देशानुसार सरकारी भवनों में साढ़े आठ बजे व शिक्षण संस्थानों में 10 बजे झंडारोहण की प्रक्रिया पूरी की जाएगी।

PUBLIC NOTICE

This public notice is being issued under the instruction of our clientess, Mrs. Nilima Gupta W/o Mr. Shyam Hari Gupta, resident of F-5/6, DLF City Phase-I, near Community Centre, Sikanderpur Ghosi, Gurgaon, Haryana-122002, who intends to purchase the property bearing no. A-10/22, situated in DLF Phase-I also known as DLF Qutub Enclave Complex, Gurugram, Haryana, for a valuable consideration, owned and possessed by Mr. Vijay Kumar Khanna s/o Late Sh. R.P. Khanna, resident of A 301, Aurelia, Pan Card Club Road, Baner, Pune- 4111045, for the sale of which he has entered into an Agreement to Sell with Mr. Toshank Dhingra S/o Narender Dhingra, residing at 31A, Anubhav Apartment, Sector-13, Rohini, New Delhi- 110085 on 18th December, 2023 and Mr. Toshank Dhingra by virtue of the terms in his agreement has agreed to nominate his right under his agreement to sell thereby executed an agreement to sell with our clientess on 22hd January, 2024.

This public notice is being issued with a view to make certain 'that there is no encumbrance to the property bearing A-10/22, situated in DLF Phase-I also known as DLF Qutub Enclave Complex, Gurugram, Haryana, accordingly, if any persons' has any right, title or interest in the above said property of any nature whatsoever, either through Shri Vijay Kumar Khanna or Mr. Toshank Dhingra, may feel free to submit their written objection or their claim over the property bearing no. A-10/22, situated in DLF Phase-I also known as DLF Qutub Enclave Complex, Gurugram, Haryana and any objection against the aforementioned agreement(s) to sell.

The objections, if any, along with the justifiable grounds, must be submitted in writing within twenty (20) days from the date of this publication to the undersigned at the following address:

Date: 25.01.2024
Place: New Delhi

N.P Singh Associates
Advocates & Solicitors
G-3, L.G.F, South Extension, Part-II, New Delhi- 110049
Cont. No : 011-46020893, 46020894
E-mail: npsinghandassociates@gmail.com

प्रदेश वैक्सीन उत्पादन में आत्मनिर्भर बनेगा: पशुधन मंत्री

37 जनपदों में बनने वाले 74 वृहद गो संरक्षण केन्द्रों का हुआ वर्चुअली शिलान्यास

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

पशुधन एवं दुग्ध विकास मंत्री धर्मपाल सिंह ने बुधवार को पशुपालन निदेशालय के परिसर में स्थित पशु जैविक औषधि संस्थान के पुनर्रोद्धार एवं आधुनिकीकरण कार्य का शुभारम्भ किया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि 15 करोड़ रुपये की लागत की कार्य योजना से संस्थान द्वारा 31 दिसम्बर 2024 तक गलाघोटू, बीक्यू, ईटीवी एवं स्वाइन फीवर वैक्सीन का उत्पादन प्रारम्भ होगा और भविष्य में प्रदेश वैक्सीन उत्पादन में आत्मनिर्भर बनेगा।

सिंह ने कार्यक्रम में वर्चुअली रूप से प्रदेश के 37 जनपदों में 118.49 करोड़ रूपये की लागत से बनने वाले 74 वृहद गो संरक्षण केन्द्रों का भी शिलान्यास किया। जिसमें करीब 30 हजार निराश्रित गोवंश को आश्रय प्राप्त होगा। पशुधन मंत्री श्री धर्मपाल सिंह ने उ0प्र0 स्थापना दिवस के अवसर पर पशुपालन विभाग की

विभिन्न योजनाओं एवं निर्माण कार्यों का शिलान्यास एवं शुभारम्भ किया।

मंत्री सिंह ने इस अवसर पर मुख्यमंत्री प्रगतिशील पशुपालक प्रोत्साहन योजना के तहत 05 लाभार्थियों मलिहाबाद की खुशबू एवं पीयूष कुमार सिंह को 10 हजार रुपये, अनुपम कुमार द्विवेदी वीरेन्द्र कुमार तथा चन्द्र शेखर को 15 हजार रुपये की धनराशि बैंक खाते में डीबीटी के माध्यम से अंतरित की। उन्होंने चयनित लाभार्थियों से संवाद किया और प्रशस्ति पत्र वितरित करते हुए उन्हें प्रोत्साहित किया। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार द्वारा देशी नस्ल की गायों को संरक्षित करने हेतु प्रोत्साहित किया जा रहा है। योजना के तहत स्वदेशी नस्ल के उच्च गुणवत्तायुक्त स्वदेशी गायों के दुग्ध उत्पादन के दृष्टिगत उनके नस्ल के आधार पर 15000 रूपये अथवा 10000 रूपये का पुरस्कार संबंधित गौवंश के पशुपालक को जीवनकाल में एक बार देय होगा तथा एक पशुपालक को अधिकतम 02 गोवंश हेतु पुरस्कार दिया जायेगा। पशुधन मंत्री ने मुख्यमंत्री स्वदेशी गो संवर्द्धन योजना अंतर्गत 06 लाभार्थियों को चयन पत्र दिये और वाराणसी, अयोध्या, बरेली, गोरखपुर, प्रयागराज व ललितपुर के लाभार्थियों से संवाद कर उनके सुझाव प्राप्त किए और उनकी समस्याओं का निदान किया। इस योजना में लाभार्थी द्वारा 02 स्वदेशी गोवंश का क्रय प्रदेश के बाहर से किया जायेगा तथा उसका बीमा कराया जायेगा। योजना में कुल 02 लाख रूपये तक का व्यय 40 प्रतिशत अधिकतम 80 हजारद्ध अनुदान लाभार्थी के खाते में डीबीटी के माध्यम से भेजा जायेगा। मंत्री सिंह ने उत्तर प्रदेश पशुधन विकास परिषद द्वारा विभिन्न जोनल केन्द्रों, जनपद स्तर तक उच्चगुणवत्तायुक्त अतिहिमीकृत वीर्य स्ट्राज एवं तरल नत्रजन उपलब्ध कराये जाने के लिए 90 लाख रूपये की लागत से 09 बहुउद्देशीय वाहनों को भी हरी झंडी दिखाकर रवाना किया।

कर्पूरी ठाकुर को 'भारतरत्न' दिया जाना सामाजिक न्याय के आंदोलन की जीत: अखिलेश

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

समाजवादी पार्टी के राज्य मुख्यालय सहित विभिन्न जनपदों में बुधवार को जननायक कर्पूरी ठाकुर की जयंती सादगी से मनाई गई। समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव ने समाजवादी पार्टी के डॉ. राममनोहर लोहिया सभागार में कर्पूरी ठाकुर के चित्र पर माल्यार्पण कर नमन किया। कर्पूरी ठाकुर के संघर्षपूर्ण राजनीतिक जीवन पर वक्ताओं ने प्रकाश डाला। अखिलेश यादव ने कहा कि जननायक कर्पूरी ठाकुर को मरणोपरान्त घोषित 'भारतरत्न' सामाजिक न्याय के आंदोलन की जीत है जो यह दर्शाती है कि सामाजिक न्याय व आरक्षण के परम्परागत विरोधियों को भी मन मार कर अब पीडीए के 90 प्रतिशत लोगों की एकजुटता के आगे झुकना पड़ रहा है। अखिलेश यादव ने मांग की कि सामाजिक न्याय के पुरोधाओं डॉ. राममनोहर लोहिया, बीपी मण्डल, चौधरी चरण सिंह, नेताजी मुलायम सिंह यादव को भारतरत्न दिया जाए। सामाजिक न्याय के लिए संघर्ष करने वाले इन महापुरूषों ने समाज की विषमता को खत्म करने, पिछड़ों, दलितों, अल्पसंख्यकों और गरीबों के उत्थान के लिए पूरा जीवन समर्पित कर दिया।

कांग्रेस कल से 29 तक प्रदेशभर में निकालेगी जिला स्तरीय भारत जोड़ो न्याय यात्रा

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

उत्तर प्रदेश कांग्रेस कमेटी द्वारा पूरे प्रदेश में किए जा रहे जोनल संवाद कार्यक्रम के उपरांत अवध जोन के अन्तर्गत आने वाल लखनऊ की जनपद स्तरीय संवाद कार्यशाला का आयोजन बुधवार को कांग्रेस मुख्यालय पर किया गया। प्रदेश कांग्रेस प्रवक्ता डॉ. हिलाल अहमद नकवी ने बताया कि प्रदेश महासचिव व प्रभारी लखनऊ राकेश राठौर की मौजूदगी और जिला कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष वेद प्रकाश त्रिपाठी के नेतृत्व में कार्यशाला संपन्न हुई। प्रवक्ता ने बताया कि जिले में आगामी 26 जनवरी से 29 जनवरी 2024 तक लखनऊ के सभी ब्लाकों एवं वार्डों में जननायक राहुल गांधी के नेतृत्व में निकाली जा रही भारत जोड़ो न्याय यात्रा के समर्थन में प्रदेश के सभी जनपदों में जिला स्तरीय भारत जोड़ो न्याय यात्रा निकाली जाएगी। जिसके लिए इस संवाद कार्यशाला का आयोजन कर लखनऊ के सभी ब्लाकों एवं वार्डों में प्रभारी नियुक्त कर दिए गए हैं। प्रवक्ता ने बताया कि इस संवाद में लखनऊ में कांग्रेस संगठन को मजबूत बनाने के साथ-साथ क्राउडफंडिंग किस प्रकार से अधिक अधिक हो सके इस पर भी योजना तैयार की गई।

पायनियर वर्गीकृत

सूचना

सूचित होकि मेरे पुत्र मोहम्मद ओमान खान व उसकी पत्नी आयषा खान को उनके गलत आचरण, चाल चलन, मार पीट व कहना न मानने के चलते अपने जीवन व समस्त चल व अचल सम्पत्ति से पूरी तरह से बेदखल कर दिया है। अब उनके द्वारा किये गये किसी भी कार्य से मेरा व मेरे परिवार के किसी भी सदस्य का कोई वास्ता व सरोकार नही होगा। (श्रीमती बार्बरा खान पत्नी मोहम्मद आदिल खान निवासिनी-ई-4/876, विनय खण्ड, गोमती नगर, थाना-गोमती नगर, लखनऊ)

शुभम् हाउसिंग डेवलपमेंट फाइनेंस कं. लि.
कॉर्पोरेट कार्यालय: 425, उद्योग विहार फेज IV, गुड़गांव-122015 (हरियाणा)
फोन: 0124-4212530/31/32, ई-मेल: customercare@shubham.co वेबसाइट: www.shubham.co

वित्तीय परिसंपत्तियों के प्रतिभूतिकरण और पुनर्निर्माण और सुरक्षा हित प्रवर्तन अधिनियम 2002 की धारा 13(2) के तहत नोटिस (इसके बाद इसे "अधिनियम" कहा गया)

इस नोटिस के द्वारा आपके ध्यान में लाया जाता है कि आपका ऋण खाता सुरक्षित ऋणदाता शुभम् हाउसिंग डेवलपमेंट फाइनेंस कंपनी लिमिटेड, जिसका पंजीकृत कार्यालय 608 - 609, 6 वीं मंजिल, ब्लॉक-सी अंसल इंपीरियल टॉवर, कम्युनिटी सेन्टर, नारायणा विहार, नई दिल्ली-110028 (इसके बाद इसे 'एसएचडीएफसीएल' कहा गया है) के द्वारा एनपीए घोषित कर दिया गया और आप एसएचडीएफसीएल को अपने ऋण के विरुद्ध कुल बकाया का भुगतान करने के लिए उत्तरदायी हैं। आप आकस्मिक खर्चों, लागत, शुल्कों आदि के साथ उपरोक्त राशि पर संविदात्मक दर पर भविष्य का ब्याज का भुगतान करने के लिए भी उत्तरदायी हैं, इसलिए, हम आपसे इस नोटिस की तारीख से 60 दिनों के भीतर एसएचडीएफसीएल के प्रति अपनी पूरी देनदारियों का निर्वहन करने का आह्वान करते हैं, ऐसा न करने पर एसएचडीएफसीएल को अधिनियम की धारा 13(4) के तहत शक्ति का प्रयोग करने का अधिकार होगा। **उधारकर्ताओं और सुरक्षित आस्तियों का विवरण इस प्रकार है:**

क्र. सं.	ऋण खाता नं. (कर्जदार का नाम)	आवेदक का पता	मांग सूचना की तिथि और राशि	सुरक्षित आस्तियां
1.	VRN_1406_023799, नितेश प्रसाद, विकास निर्मल	ग्राम पोस्ट-रघुनाथपुर जिला-बक्सर बिहार-802101	रु. 7,67,162/- & 20/01/2024	आराजी नंबर 236 मौजा हरिशंकरपुर परगना-राजू तह एवं जिला-चंदौली वाराणसी उत्तर प्रदेश-232101 में स्थित
2.	0KAN1706000005006651 & 0KAN1904000005019365, विशाल मिश्रा, शालिनी मिश्रा	519, यशोदा नगर, साउथ के ब्लॉक, अजय ट्रेडर्स के पास, कानपुर, उत्तर प्रदेश 208011	रु. 5,96,639/- & रु. 4,75,272/- & 20/01/2024	मकान नं. के-519 का भाग, यशोदा नगर, कानपुर नगर, उत्तर प्रदेश-208011 में स्थित
3.	0KAN1902000005017659, राम सिंह, रमा कान्ती यादव, शुभम् सिंह	2/39, रमा देवी चौराहा पटेल नगर, कानपुर नगर, उत्तर प्रदेश-208007	रु. 16,49,734/- & 20/01/2024	मकान नं. 164, सर्वोदयपुर सेकेंड, कानपुर नगर आराजी नंबर 162 मौजा सर्वोदयपुर, कानपुर नगर, उत्तर प्रदेश-208011 में स्थित
4.	0ALB1911000005024880, सना उल्ला, मोहम्मद शानू, राजू	13/5, मुट्ठर रोड रीगल गेस्ट हाउस के पास, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश-211002	रु. 6,31,542/- & 20/01/2024	फ्लैट नं. 9, ईडब्ल्यूएस (भूतल), डबल मंजिला, कटरा मालती बाजार हाउसिंग स्कीम, फकीरी गंज, परगना और तहसील-सदर और जिला-इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश - 211002 में स्थित
5.	0LKW2011000005031704, पुष्कर अर्जुन कुमार त्रिपाठी, प्रणव दीक्षित, कादम्बिनी	1X660, MW BHEL साइट ऑफिस पावर हाउस पनकी, कानपुर नगर उत्तर प्रदेश 208020	रु. 16,37,927/- & 20/01/2024	प्लॉट नं. 30 का हिस्सा, खसरा नं. 89 रघुनाथन कुंज, गांव-रसूलपुर कायस्थ, परगना-मोहना, तहसील- बख्शी का तालाब, जिला-लखनऊ उत्तर प्रदेश-226203 में स्थित
6.	0LKO2204000005046299, रवि प्रकाश मिश्रा, कामल तिवारी	मुक्कम खिजराबाद, पोस्ट बरवारी पुर, खिजरा बाद प्राथमिक विद्यालय सुल्तानपुर उत्तर प्रदेश-228145	रु. 13,61,424/- & 20/01/2024	प्लॉट नं. 08 का हिस्सा, गाटा नं. 271 मिन ग्राम रसूलपुर, कायस्थ, परगना-मोहना, बीकेटी जिला लखनऊ उत्तर प्रदेश-226021 में स्थित
7.	0VRN2205000005047095, राकेश कुमार पांडे, निर्मला पांडे	प्लॉट नं. 542/1, भगवानपुर सनबीम अकादमी के पास वाराणसी उत्तर प्रदेश-221005	रु. 13,31,106/- & 20/01/2024	आराजी नं. 542/2, मौजा भगवानपुर परगना देहात अमानत तहसील जिला वाराणसी उत्तर प्रदेश-221003 में स्थित
8.	0KAN2208000005050229, योगेन्द्र दुबे, रोशनी दुबे	कटका रनिया बनियान फैक्ट्री के पास, कटका कानपुर, देहात, उत्तर प्रदेश-209301	रु. 10,95,984/- & 20/01/2024	भूखंड जोकि आराजी नं. 283 का भाग, केएफए ग्राम कटका तहसील अकबरपुर कानपुर देहात उत्तर प्रदेश-209101 में स्थित

रक्तदान से दूसरों की जिंदगी बचाने का लें संकल्प

उत्तर प्रदेश स्थापना दिवस पर राजभवन में स्वैच्छिक रक्तदान शिविर व साइकिल रैली का आयोजन

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

उत्तर प्रदेश की राज्यपाल आनंदीबेन पटेल ने बुधवार को उत्तर प्रदेश स्थापना दिवस के अवसर पर राजभवन में आयोजित रक्तदान शिविर का शुभारम्भ किया। राजभवन में किंग जॉर्ज मेडिकल विश्वविद्यालय के ट्रांसफ्यूजन मेडिसिन विभाग द्वारा आयोजित स्वैच्छिक रक्तदान शिविर में बड़ी संख्या में राजभवन कार्मिकों व अध्यासितों द्वारा रक्तदान किया गया। रक्तदान शिविर में कुल 64 यूनिट रक्त संग्रहण किया गया।

इस अवसर पर राज्यपाल ने कहा कि रक्तदान के साथ-साथ अंगदान भी एक पुनीत और महत्वपूर्ण कार्य है। उन्होंने कहा कि कोई भी संस्था यदि अच्छा कार्य करें तो उसका प्रचार प्रसार होना चाहिएए इससे अन्य को प्रेरणा मिलती है। राज्यपाल ने रक्तदाताओं का धन्यवाद करते हुए कहा कि विगत चार-पांच वर्षों से राजभवन में रक्तदान शिविर का आयोजन किया जा रहा है। उन्होंने सभी को उत्तर प्रदेश स्थापना दिवस की बधाई देते हुए कहा कि स्थापना दिवस के दिन रक्तदान शिविर के माध्यम से दूसरों की जिंदगी को बचाने का संकल्प एक अच्छा कार्य है। इसमें समाज के लिए एक अच्छा संदेश भी है। राज्यपाल ने बताया कि राजभवन में उत्तर प्रदेश स्थापना दिवस के अवसर पर आज कई कार्यक्रमों का आयोजन किया जा रहा है, जिसमें फिट इंडिया के तहत साइकिल रैली तथा उत्तर प्रदेश की कला एवं संस्कृति पर आधारित सांस्कृतिक कार्यक्रम भी शामिल हैं। इस अवसर पर राज्यपाल जी स्वैच्छिक रक्तदान कर रहे रक्तदाताओं से भी मिलीं, उन्हें धन्यवाद व बधाई दी तथा रक्तदान प्रमाण.पत्र भी प्रदान किया। इस अवसर पर किंग जॉर्ज मेडिकल विश्वविद्यालय की कुलपति डॉ सोनिया नित्यानंद ने कहा कि राजभवन परिवार के सदस्यों द्वारा रक्तदान दूसरों के लिए प्रेरणा स्रोत होता है। उन्होंने कहा कि एक रक्तदान से तीन लोगों की जिंदगी बचा सकते हैं। ट्रान्सफ्यूजन मेडिसिन विभाग की विभागाध्यक्ष डॉ तूलिका चंद्रा ने कहा कि उत्तर प्रदेश की धरती वह धरती है जहां पर महर्षि दधीचि ने

समाज एवं देश के कल्याण के लिए अपनी हड्डियां तक भी दान दे दिये थे। हमें अपने पूर्वजों के आदर्शों का अनुकरण करते हुए अंगदान तथा रक्तदान के लिए आगे आना चाहिए। रक्तदान करने से हमारे स्वास्थ्य का परीक्षण भी हो जाता है तथा हमें संभावित बीमारियों के बारे में जानकारी भी प्राप्त हो जाती है। उन्होंने बताया कि रक्तदान करने के पश्चात शरीर में रक्त का निर्माण बहुत तेजी से होता है और किसी भी प्रकार की कोई कमजोरी भी नहीं आती है। उन्होंने जनसामान्य से अपील की कि रक्तदान करने के पश्चात कमजोरी आती है, ऐसी भ्रांतियों से बचें और रक्तदान के लिए आगे आएं।

उत्तर प्रदेश स्थापना दिवस के अवसर पर विभिन्न कार्यक्रमों की श्रृंखला में फिट इण्डिया के तहत राज्यपाल जी ने राजभवन परिसर से राजभवन कार्मिकों और अध्यासितों की साइकिल रैली को हरी झण्डी दिखाकर रवाना किया। यह रैली भारत माता के उद्घोष के साथ राजभवन परिसर से समता मूलक चौराहा होते हुए पुन: राजभवन आकर सम्पन्न हुई। रैली में राजभवन कार्मिकों द्वारा उल्लासपूर्वक प्रतिभाग किया गया।

बच्चों के विकास में विद्यालय और घर की भूमिका काफी महत्वपूर्ण

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

प्रदेश की राज्यपाल आनंदीबेन पटेल बुधवार को एक निजी स्कूल के वार्षिक समारोह में सम्मिलित हुईं। इस अवसर पर राज्यपाल ने उत्तर प्रदेश स्थापना दिवस की बधाई देते हुए कहा कि छोटे.छोटे बच्चे ही अगले 25 वर्ष में देश की दिशा और दशा तय करेंगे तथा भारत को आगे बढ़ाना है तो हमें अभी से सोचना पड़ेगा कि बच्चों की दिशा किस तरफ हो। उन्होंने कहा कि भारत की सोच वसुधैव कुटुंबकम की है।

राज्यपाल ने कहा कि शिक्षा, स्वास्थ्य व अन्य गतिविधियों से ही बच्चों का सर्वांगीण विकास संभव है। उन्होंने कहा कि बच्चों की रुचि को देखते हुए उनका विकास किया जाए तथा बच्चों को खेलने दें व खिलने दें। उपस्थित शिक्षकगणों को संबोधित करते हुए राज्यपाल ने कहा कि आज बच्चों को एक अच्छा प्लेटफार्म दें तभी बच्चे आगे चलकर अपना स्वयं का प्लेटफार्म विकसित करेंगे। उन्होंने कहा कि बच्चों के विकास में स्कूल, परिवार और घर की भूमिका काफी महत्वपूर्ण होती है। राज्यपाल ने कहा कि आज शिक्षा, जल, स्वास्थ्य आदि पर सरकार द्वारा ध्यान केंद्रित किया जा रहा है। प्रदेश में नए.नए अस्पताल खुल रहे हैं, डॉक्टर की संख्या में बढ़ोतरी हो रही है, नर्सिंग कॉलेज खोले जा रहे हैं, सफाई अभियान जारी है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने उज्ज्वला योजना के तहत महिलाओं को गैस कनेक्शन उपलब्ध करवाया, जिससे महिलाओं में धुंआजनित बीमारियों को कम करने में मदद मिली। बीमारियों के पीछे की वजह जानकर उस पर कार्य करने की जरूरत है। राज्यपाल ने कहा कि एक रिसर्च के अनुसार 8 वर्ष की उम्र में बच्चे पूरे जीवन का 80 प्रतिशत सीख लेते हैं। इसलिए इस उम्र में बच्चों में अच्छे संस्कार, अच्छी आदतें विकसित की जाए। राज्यपाल ने गर्भ में पल रहे शिशु हेतु गर्भ संस्कार की आवश्यकता बताई। इस क्रम में उन्होंने जर्मनी देश के प्राथमिक विद्यालयों के भ्रमण के अनुभव साझा किये एवं महाभारत काल के अभिमन्यु के प्रसंग का भी उल्लेख किया।

पोस्टमार्टम में लापरवाही पर बदायूं के दो और डॉक्टर निलंबित, भेजे गए बरेली

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

बदायूं में पोस्टमार्टम में लापरवाही पर दो और डॉक्टरों पर गाज गिरी है। डिप्टी सीएम ब्रजेश पाठक ने दोनों डॉक्टरों को निलंबित कर अपर निदेशक चिकित्सा-स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण बरेली से संबद्ध करने के निर्देश दिए हैं। दोनों डॉक्टरों के खिलाफ अनुशासनात्मक कार्रवाई भी की जा रही है।

आरोप है कि दस नवम्बर, 2023 को बदायूं के थाना अलापुर के कुतरई गांव निवासी पूजा की ससुराल वालों ने देहज की मांग के चलते हत्या कर दी थी। पिता गंगाचरण ने मुकदमा दर्ज कराया। पुलिस ने शव पोस्टमार्टम हाउस भेज दिया था। सीएमओ ने दो चिकित्सकों डॉ मोहम्मद उबेश एवं डॉ मोहम्मद आरिफ हुसैन की संयुक्त कमेटी गठित की थी। उन्होंने शव का पोस्टमार्टम किया। आरोप है कि पोस्टमार्टम में सतर्कता नहीं बरती गयी। पोस्टमार्टम के बाद जब परिजनों ने लाश का बैग खोला तो पूजा की दोनो आंखें गायब थीं। डिप्टी सीएम ब्रजेश पाठक ने तत्काल प्रभाव से दोनों डॉक्टरों को निलम्बित करते हुए अपर निदेशक, चिकित्सा स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण कार्यालय, बरेली से सम्बद्ध कर दिया है। साथ ही दोनों के विरुद्ध अनुशासनात्मक कार्यवाही भी किये जाने के आदेश दिये हैं। इस प्रकरण में मुख्य चिकित्साधिकारी डॉ प्रदीप वाष्णेय को पहले ही निलंबित कर स्वास्थ्य महानिदेशालय में सम्बद्ध किया जा चुका है।

धमकी देने वाले डॉक्टर के खिलाफ अभियोजन की संस्तुति

ड्यूटी के दौरान सहकर्मियों से अभद्र भाषा का प्रयोग कर धमकी देना महोबा के खरेला सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र के डॉक्टर को भारी पड़ा। शिकायत के बाद डिप्टी सीएम ब्रजेश पाठक ने आरोपी डॉ राजेश कुमार वर्मा के खिलाफ अभियोजन चलाये जाने की स्वीकृति दी है। डॉ राजेश पर जैतपुर सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र में तैनाती के दौरान कई असंवैधानिक कृत्यों में संलिप्त रहने के आरोप हैं। साथ ही सहकर्मी के साथ अभद्र भाषा का प्रयोग करते हुए फोन पर दुर्व्यवहार किया एवं धमकी देने का भी आरोप है। पीड़ित कार्मिक द्वारा रिपोर्ट दर्ज कराने के बाद जांच हुई। विभाग की जांच में समस्त आरोप सत्य पाये गए। डिप्टी सीएम ने डॉ. वर्मा के विरुद्ध अभियोजन चलाये जाने की स्वीकृति दी है।

राज्यपाल से मिले क्राफ्टरूट्स से जुड़े 100 से अधिक कारीगर

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

प्रदेश की राज्यपाल आनंदीबेन पटेल से बुधवार को राजभवन में देश भर से आए 100 से अधिक कारीगरों ने भेंट की। ये कारीगर यहाँ सफेद बारादरी में 20 जनवरी से 23 जनवरी तक चली ग्राम श्री एवं क्राफ्टरूट्स द्वारा आयोजित हैंडीक्राफ्ट प्रदर्शनी के लखनऊ में समापन उपरांत आगामी गन्तव्य कानपुर जाने से पूर्व अनार पटेल के नेतृत्व में राजभवन भ्रमण और राज्यपाल से मुलाकात के लिए आए थे। कुछ कारीगरों ने स्नेह और श्रद्धा के साथ राज्यपाल को हस्त

निर्मित सामान भेंट स्वरूप प्रदान किए। राज्यपाल ने कारीगरों के सम्मान में स्वल्पाहार आयोजित किया। इस दौरान राज्यपाल ने कारीगरों से उनके व्यवसाय सम्बन्धी, कार्य में प्रगति, आर्थिक उपार्जन से सक्षमता वृद्धि की जानकारियां भी लीं। कारीगरों से वार्ता करते हुए राज्यपाल जी ने उनकी कला और कई विलुप्त होती कलाओं के संवर्द्धन में लगे कारीगरों की प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि क्राफ्टरूट्स संस्था से जुड़े लोग स्वयं भी आत्मनिर्भर हुए हैं और अपने साथ अन्य परिवारों को जोड़कर उन्हें भी आत्मनिर्भर बनाया हैं। राजभवन में कारीगरों के आगमन को एक स्मरणीय अवसर बताते हुए उन्होंने कहा कि यहाँ बड़े-बड़े लोग, वरिष्ठ अधिकारी, जनप्रतिनिधि,स्कूल के बच्चे, विश्वविद्यालयों के पदाधिकारी आते रहे हैं। लेकिन इतनी बड़ी संख्या में पहली बार कारीगरों का आगमन हुआ है। जो कि ऐतिहासिक है और एक पुनीत अवसर है।

यूपी दिवस में एकेटीयू के इनोवेशन हब के स्टार्टअप का हुआ प्रदर्शन

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

अवध शिल्प ग्राम में मंगलवार को यूपी दिवस का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ रहे। कार्यक्रम में डॉ एपीजे अब्दुल कलाम प्राविधिक विश्वविद्यालय के इनोवेशन हब ने भी कुलपति प्रो जेपी पांडेय के निर्देशन में अपने पांच स्टार्टअप को यूपी आईटी इलेक्ट्रॉनिक विभाग के स्टॉल के साथ प्रतिभाग किया। वहीं कुछ इन्क्युबेशन सेंटर ने भी अपने प्रोडक्ट का प्रस्तुतिकरण किया। जबकि सेंटर फॉर एक्सीलेंस को भी प्रदर्शित किया गया। स्टॉल पर काफी संख्या में लोगों ने जाकर स्टार्टअप की जानकारी ली। लोगों ने नये आइडिया की काफी सराहना भी की। इनोवेशन हब ने राम मंदिर के थ्री डी प्रिंट को मुख्य सचिव को भेंट किया। कार्यक्रम में इनोवेशन हब के हेड महीप सिंह, मैनेजर वंदना शर्मा, रितेश सक्सेना और यूपी आईटी इलेक्ट्रॉनिक विभाग के प्रमुख सचिव अनिल सागर व मैनेजिंग डायरेक्टर रवि रंजन मौजूद रहे।

प्रदेश के 7 जनपद होंगे फाइलेरिया मुक्त, नाइट ब्लड सर्वे की रिपोर्ट पर लिया गया फैसला

● 10 फरवरी से 17 जिलों में चलेगा एमडीए राउन्ड

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

यूपी में छह और जनपद फाइलेरिया मुक्ति की राह पर हैं। इनमें अंबेडकरनगर, जालौन, मऊ, भदोही, चित्रकूट और महोबा शामिल है। इन जनपदों में पिछले वर्ष फरवरी में सर्वजन दवा सेवा (एमडीए) राउन्ड के बाद नाइट ब्लड सर्वे (एनबीएस) हुआ। इस रिपोर्ट के आधार पर इस बार के एमडीए राउन्ड में इन जिलों को बाहर कर दिया गया है।

इस बार फाइलेरिया मुक्ति के लिए 10 फरवरी में जिन 17 जिलों में अभियान संचालित होगा, उनमें अमेठी, अयोध्या, आजमगढ़, बलिया, बांदा, बाराबंकी, बरेली, हमीरपुर, जौनपुर, जालौन, लखनऊ, पीलीभीत, शाहजहांपुर, प्रयागराज, प्रतापगढ़ सोनभद, उन्नाव और वाराणसी हैं। पिछले वर्ष फरवरी में जिन 18 जिलों में अभियान चला गया था, उनमें अमेठी, अयोध्या, अंबेडकरनगर, आजमगढ़, बलिया, बांदा, बाराबंकी, हमीरपुर, जालौन, लखनऊ, पीलीभीत, शाहजहांपुर, मऊ, सोनभद्र, जौनपुर, भदोही, चित्रकूट और महोबा शामिल हैं। पिछली वर्ष की तुलना में इनमें अमेठी, आजमगढ़, बलिया, बांदा, बाराबंकी, बरेली, हमीरपुर, जौनपुर, जालौन, लखनऊ, पीलीभीत, शाहजहांपुर और सोनभद्र तो वही हैं। जबकि इस बार अंबेडकरनगर, जालौन, मऊ, भदोही, चित्रकूट और महोबा हटाकर इनके स्थान पर जौनपुर, प्रयागराज, प्रतापगढ़, उन्नाव और वाराणसी नए जनपद जोड़े गए हैं। गत वर्ष की तुलना में इस बार के एमडीए राउन्ड में बाहर होने वाले छह जिलों में अब ट्रांसमिशन असेस्मेंट सर्वे किया जाएगा। इसमें भी नेगेटिव रिपोर्ट आने पर जनपदों को पूरी तरह फाइलेरिया मुक्त घोषित कर दिया जाएगा। वर्तमान में प्रदेश में फाइलेरिया प्रभावित 50 जिले हैं। प्रदेश में वर्तमान में लिम्फोडिमा के 95097 मरीज हैं। इसमें 24207 मरीज हाइड्रोसील के हैं। संयुक्त निदेशक फाइलेरिया डॉ रमेश सिंह ठाकुर ने बताया कि 10 फरवरी से शुरू होने वाले एमडीए राउन्ड की

तैयारियां चल रही हैं। स्वास्थ्य टीम और फ्रंट लाइन कार्यकर्ताओं को प्रशिक्षित किया जा रहा है। इस अभियान के तहत यह टीम घर-घर जाकर अपने सामने दवा खिलाएगी।

यहां चलेगा अभियान

इस बार कुल 17 जनपदों में कुल 10 जिलों में ट्रिपल ड्रग और 7 जिले में डबल ड्रग का सेवन कराएंगे। ट्रिपल ड्रग वाले जिले में अमेठी, आजमगढ़, बांदा, बाराबंकी, बरेली, लखनऊ, प्रतापगढ़, प्रयागराज, उन्नाव और वाराणसी शामिल है। जबकि बलिया, हमीरपुर, जालौन, जौनपुर, पीलीभीत, शाहजहांपुर और सोनभद्र में डबल ड्रग का सेवन कराया जाएगा।

यह भी जानें

- फाइलेरिया मच्छर जनित रोग है और किसी को कभी भी हो सकता है
- यह बीमारी संक्रमित व्यक्ति को विकलांग बना सकती है। इसका संक्रमण अक्सर बचपन में ही हो जाता है
- इस बीमारी के लक्षण 10 वर्ष से 15 वर्ष बाद दिखते हैं
- यह न तो आनुवंशिक या पुस्तैनी बीमारी हैं न ही गर्भवस्था या पूर्णिमा व अमावस्या में उभरने वाली बीमारी है
- फाइलेरिया रोग किसी भी व्यक्ति को आर्थिक या सामाजिक रूप से कमजोर बना देता है
- एमडीए के दौरान दवाई खाकर जीवन भर के लिए इस बीमारी से बचाव संभव है
- शरीर में माइक्रोफाइलेरिया होने पर इस दवा के प्रतिकूल प्रभाव दिख सकते हैं जो कुछ देर बाद स्वत: ठीक हो जाते हैं

यूपी लोक सेवा आयोग की परीक्षाओं में एलयू के चार छात्रों ने शानदार प्रदर्शन किया

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

एक दिन पूर्व उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग द्वारा घोषित परिणाम में लखनऊ विश्वविद्यालय के चार छात्रों ने शानदार प्रदर्शन किया है। इनमें मध्यकालीन और आधुनिक इतिहास के दीपक सिंह को डिप्टी कलेक्टर के रूप में, भूगोल की आकांक्षा गौतम को डीएसपी के रूप में, राजनीति विज्ञान की दीप्ति त्रिपाठी को माल कर अधिकारी के रूप में और प्राणीशास्त्र की सुश्री रिया सिन्हा को लेखाधिकारी के रूप में चुना गया है। विवि के कुलपति प्रो आलोक कुमार राय ने इस उपलब्धि पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि यूपीपीएससी परीक्षाओं में हमारे छात्रों की सफलता लखनऊ विश्वविद्यालय के

लिए बेहद गर्व का क्षण है। यह अकादमिक प्रतिबद्धता, हमारे संकाय और हमारे छात्रों के समर्पण का एक प्रमाण है हम उन्हें उनकी असाधारण उपलब्धि के लिए बधाई देते हैं और उनके भविष्य के प्रयासों में निरंतर सफलता की कामना करते हैं। दीपक सिंह, जिन्होंने यूपीपीएससी परीक्षाओं में 20वीं रैंक हासिल की, ने उपलब्धि पर अपने विचार साझा करते हुए कहा कि मैं लखनऊ विश्वविद्यालय द्वारा प्रदान किए गए समर्थन और मार्गदर्शन के लिए बेहद आभारी हूं। व्यापक पाठ्यक्रम, समर्पित संकाय और उपलब्ध संसाधन कैंपस ने मेरी सफलता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। यह उपलब्धि सिर्फ मेरी नहीं है बल्कि विश्वविद्यालय में मुझे मिली उत्कृष्ट शिक्षा का प्रतिबिंब है।

मुख्यमंत्री अभ्युदय कोचिंग के जरिए एसडीएम, डिप्टी एसपी सहित 19 अभ्यर्थियों ने प्राप्त की सफलता

● प्रदेश के 75 जनपदों में संचालित है मुख्यमंत्री अभ्युदय योजना

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

सीएम योगी की प्रेरणा एवं मार्गदर्शन में समाज कल्याण विभाग द्वारा संचालित मुख्यमंत्री अभ्युदय योजना एवं परीक्षा पूर्व प्रशिक्षण केंद्र से जुड़े अभ्यर्थियों ने यूपीपीसीएस 2023 के परिणाम में अभूतपूर्व सफलता पाई है। इनमे से उपजिलाधिकारी, डिप्टी एसपी, डिप्टी जेलर, ट्रेजरी ऑफिसर, सब रजिस्ट्रार सहित 19 पदों पर अभ्यर्थियों का चयन हुआ है। प्रदेश के युवाओं को समान अवसर प्रदान करने एवं विभिन्न सेवाओं के चयन में उत्तर प्रदेश का प्रतिनिधित्व बढ़ाने के उद्देश्य से मुख्यमंत्री अभ्युदय योजना उत्तर प्रदेश के समस्त जनपदों में संचालित की जा रही है। इसमें ग्रामीण परिवेश से जुड़े आर्थिक रूप से पिछड़े एवं संसाधनों के अभाव में भी लक्ष्य के प्रति समर्पित उत्साही छात्रों को नि:शुल्क कोचिंग की सुविधा प्रदान की जाती है। साथ ही विभाग द्वारा संचालित नि:शुल्क आवासीय सुविधायुक्त परीक्षा पूर्व प्रशिक्षण केंद्रों में भी प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी हेतु मार्गदर्शन एवं प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है। मुख्यमंत्री अभ्युदय योजनांतर्गत अभ्यर्थियों को ई.कंटेंट भी उपलब्ध कराए जाते है। साथ ही मेंस की परीक्षा उत्तीर्ण अभ्यर्थियों का मॉक इंटरव्यू भी ऑफलाइन के साथ ही ऑनलाइन माध्यम से संचालित के किया गया जिससे अधिक से अधिक प्रतियोगी योजना का लाभ प्राप्त कर सफ्ल हो सके। समाज कल्याण मंत्री असीम अरुण द्वारा चयनित अभ्यर्थियों को सफलता हेतु बधाई देते हुए उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएं प्रदान की गई है और अवगत कराया की ऑनलाइन एवं ऑफलाइन मोड में संचालित करते हुए गुणवत्तापरक अध्ययन सामग्री नि:शुल्क उपलब्ध कराई जा रही है।

मतदान करने की लगी गयी शपथ

डॉ एपीजे अब्दुल कलाम प्राविधिक विश्वविद्यालय में मंगलवार को राष्ट्रीय मतदाता दिवस के अवसर पर मंगलवार को मतदान करने की शपथ दिलाई गयी। कुलपति प्रो जेपी पांडेय के निर्देशन में सभी अधिकारियों, शिक्षकों छात्रों और कर्मचारियों ने चुनावों मतदान करने की शपथ ली। इस मौके पर कुलसचिव रीना सिंह, परीक्षा नियंत्रक प्रो राजीव कुमार सहित अन्य लोग मौजूद रहे।

राम जैसा ना कोई हुआ है ना होगा

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

नवयुग कन्या महाविद्यालय के हिंदी विभाग द्वारा बुधवार को एक दिवसीय संगोष्ठी आयोजित की गई। इस संगोष्ठी का विषय था समसामयिक परिप्रेक्ष्य में श्री राम। मुख्य वक्ता प्रो हरिशंकर मिश्रा, पूर्व आचार्य हिन्दी विभाग लखनऊ विश्वविद्यालय एवं लखनऊ की अवधी कहानी लेखिका डा रश्मि शील विशिष्ट वक्ता के रूप में उपस्थित रहीं। कार्यक्रम का प्रारंभ दीप प्रज्वलन और सरस्वती वंदना से हुआ। श्रीराम दरबार पर माल्यार्पण और पुष्प अर्पित किए गए। छात्रा साक्षी दुबे ने सरस्वती वंदना प्रस्तुत की। अतिथियों का स्वागत पुष्प पौध और अंग वस्त्र से किया गया। कार्यक्रम का संचालन करते हुए डा अपूर्वा अवस्थी ने कहा कि संपूर्ण भारतीय संस्कृति में जो कुछ भी सर्वोत्तम है उसके प्रतिनिधि राम हैं। राम दो अक्षर का नाम है जिसमें सभी गुण समाहित है, निदा की एक ग़ज़ल का उद्धरण देते हुए कहा जिन चेहरों से रोशन है इतिहास के दर्पण,चलती फिरती धरती पर वो कैसे होंगे, पहले तो हम जैसे होंगे, सूरत का मूरत बन जाना, बरसों बाद का है अफसाना, पहले तो हम जैसे होंगे। डा रश्मि शील ने अपने वक्तव्य में कहा कि आज हमारी भारतीय संस्कृति के सामने कयी ख़तरे हैं इसलिए हम अपनी संस्कृति के जो पुराने आदर्श हैं उन्हें सामने लाते हैं। राम भी एक ऐसे ही आदर्श हैं। राम के चरित्र में व्यापकता है।

Bandhan Bank
रीजनल ऑफिस: नेताजी मार्ग, मीठाखली छ: रास्ते के पास, एलिसब्रिज, अहमदाबाद-06. फोन : +91-79-26421671-75

सांकेतिक आधिपत्य (कब्जा) सूचना

एतदर्थ सूचना दी जाती है कि वित्तिय आस्तियों का प्रतिभूतिकरण एवं पूर्नगठन तथा प्रतिभूतिहित प्रर्वतन अधिनियम, 2002 कि धारा 13(12) एवं प्रतिभूतिहित प्रर्वतन नियम, 2002 के नियम 3 के साथ पढते हुए अधिनियम के अंतर्गत प्रदत्त अधिकारों के प्रयोग के तहत प्राधिकृत अधिकारी ने खाते(अकाउंट) के सामने उल्लेखित तिथि को डिमांड नोटिस (मांग पत्र) भेजा था व नोटिस प्राप्ति के 60 दिवस के अन्दर राशि की मांग की गई थी । ऋणी द्वारा भुगतान करने में असफल रहने पर कर्जदार और आम जनता को नोटिस द्वारा सूचित किया जाता है की अधोहस्ताक्षरकर्ता ने उपरोक्त अधिनियम कि धारा 13 की उपधारा(4) सपठित नियम 8 के तहत नीचे लिखे लोन खातों में वर्णित बंधक सम्पत्ति का सांकेतिक कब्जा ले लिया है । अत: आप कर्जदार और आम जनता को सूचित किया जाता है कि नीचे वर्णित संपत्तियों के बारे में कोई व्यवहार न करें और इन संपत्तियों के साथ किसी व्यवहार पर वह राशि, ब्याज, खर्च एवं शुल्क के साथ बैंक को चुकाना होगा । सुरक्षित सम्पत्ति को रिडीम/वापस लेने के संबंध में अधिनियम की धारा 13 की उपधारा (8) में उपलब्ध प्रावधानों के तहत ऋणियों का ध्यान आमंत्रित किया जाता है ।

ऋणियों के नाम और ऋण खाता सं.	बंधक संपत्ति का विवरण (प्रतिभूती आस्तियां)	मांगपत्र की तिथि	सांकेतिक कब्जे की तिथि	कुल बकाया राशि, मांगपत्र की तारीख तक
श्री राज नारायण शुक्ला श्री मौसम कुमार 20007670000013	सभी अचल संपत्ति जो गाटा संख्या 460 मिंज, ग्राम जैतुपुर, परगना तहसील रायबरेली, तालुका और जिला:रायबरेली, उत्तर प्रदेश-229001 पर स्थित है और जो आवरित है: उत्तर-पूनम रावत का प्लॉट, पूर्व: प्लॉट स्टेशन मास्टर रावत, पश्चिम: छोटे लाल का प्लॉट, दक्षिण:रायबरेली से परसदेपुर रोड	20.10.2023	20.01.2024	रू.19,04,561.44 (जो दिनांक 30.09.2023)

स्थान: रायबरेली
तारीख: 25/01/2024

प्राधिकृत अधिकारी
बंधन बैंक लिमिटेड

बुलंदशहर से पीएम मोदी आज देंगे हजारों करोड़ की सौगात

● सीएम योगी ने अधिकारियों संग समीक्षा बैठक कर परखी तैयारियां

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ/बुलंदशहर

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी गुरुवार को बुलंदशहर दौरे पर आ रहे हैं, इसको लेकर तैयारियां पूर्ण हो चुकी हैं। बुधवार को मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने यहां पुलिस शूटिंग रेंज ग्राउंड स्थित पीएम के कार्यक्रम स्थल का निरीक्षण किया। मुख्यमंत्री ने इस दौरान प्रधानमंत्री द्वारा लोकार्पित और शिलान्यास की जाने वाली परियोजनाओं की समीक्षा करते हुए अधिकारियों को दिशा-निर्देश दिए।

मुख्यमंत्री ने जनसभा स्थल पर की जा रही तैयारियों के लिए जनप्रतिनिधियों, संगठन कार्यकर्ताओं तथा अधिकारियों के साथ समीक्षा बैठक करते हुए निर्देशित किया कि जनसभा में प्रतिभाग करने वाली जनता को किसी भी प्रकार की कठिनाई का सामना ना करना पड़े। इसके लिए गुणवत्तापूर्ण व्यवस्था करने के उन्होंने निर्देश दिए और बैठक में उपस्थित मण्डल के अधिकारियों से कहा कि शासन द्वारा मंडल में चल रहे निर्माण कार्यों को शीघ्र गुणवत्तापूर्ण पूरा कराया जाए। बता दें कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी बुलंदशहर और मेरठ मंडल के लिए हजारों करोड़ की परियोजनाओं का शिलान्यास और लोकार्पण करेंगे। लोकार्पित होने वाली परियोजनाओं में कल्याण सिंह के नाम पर मेडिकल कॉलेज, डेडिकेटेड फ्रेट कॉरिडोर के एक सेक्शन का लोकार्पण, अलीगढ़ से कन्नौज के बीच फोरलेन हाइवे सहित विभिन्न प्रोजेक्ट्स शामिल हैं। मुख्यमंत्री ने प्रस्तावित कार्यक्रम स्थल का स्थलीय निरीक्षण करते हुए व्यवस्थाओं के लिए अधिकारियों को निर्देशित किया। मुख्यमंत्री ने स्थलीय निरीक्षण करते हुए कार्यक्रम में आने वाली गाड़ियों की पार्किंग की व्यवस्था को ठीक प्रकार से कर्मचारी और अधिकारियो मुस्तैद रहने हेतु निर्देशित किया। इस अवसर पर प्रदेश भाजपा अध्यक्ष भूपेन्द्र सिंह चौधरी सहित स्थानीय जनप्रतिनिधि और मंडलीय तथा जनपदीय अधिकारी मौजूद रहे।

उपमुख्यमंत्री ने फ्लैग ऑफ कर लाभार्थियों को किया दिल्ली रवाना

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

देश की राजधानी दिल्ली में गणतंत्र दिवस परेड 2024 के अवसर पर उत्तर प्रदेश के प्रधानमंत्री आवास योजना ग्रामीण के 10 लाभार्थियों को विशेष अतिथि के रूप में कर्तव्य पथ पर प्रतिभाग के लिए उत्तर प्रदेश से आमंत्रित किया गया है। जनपद वाराणसी, अयोध्या, गोरखपुर, बाराबंकी एवं खीरी से दो-दो लाभार्थी गणतंत्र दिवस परेड 2024 में प्रतिभाग के लिए चिन्हित किये गये है।

उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य द्वारा बुधवार को 7 कालीदास मार्ग से फ्लैग ऑफ कर इन लाभार्थियों को दिल्ली के लिए रवाना किया गया। इसके पूर्व उपमुख्यमंत्री द्वारा सभी लाभार्थियों से परिचय प्राप्त किया गया तथा उन्हें अंगवस्त्र एवं पुष्पगुच्छ देकर सम्मानित किया गया तथा कार्यक्रम में प्रतिभाग करने के लिए चयनित किये जाने पर उन्हें बधाई भी दी। उन्होंने गणतंत्र दिवस आयोजित होने वाली परेड के कार्यक्रम में प्रधानमंत्री आवास योजना.ग्रामीण के लाभार्थियों को आमंत्रित किये जाने के लिए प्रधानमंत्री को धन्यवाद दिया।

उप मुख्यमंत्री ने इस अवसर पर बताया कि प्रधानमंत्री आवास योजना .ग्रामीण में देश में टाप पर है। प्रधानमंत्री आवास योजना ग्रामीण के 10 लाभार्थियों को विशेष अतिथि के रूप में कर्तव्य पथ पर प्रतिभाग के लिए उत्तर प्रदेश से आमंत्रित किया गया है। यह उत्तर प्रदेश के लिए गौरव की बात है। जिसमें हमारी थारू जनजाति की एक महिला, एक दिव्यांग और सामान्य लाभार्थी भी शामिल हैं। उप मुख्यमंत्री ने बताया कि उत्तर प्रदेश को अब तक कुल 36.15 लाख आवास निर्माण का लक्ष्य भारत सरकार से प्राप्त हुआ था, जिसके सापेक्ष अब तक 34.34 लाख आवास का निर्माण पूर्ण कराया जा चुका है, शेष आवास निर्माणाधीन है। इसी तरह मुख्यमंत्री आवास योजना .ग्रामीण के अन्तर्गत 2.57 लाख लाभार्थियों को पक्के घर दिये गये है। उपमुख्यमंत्री मौर्य ने कहा कि प्रधानमंत्री का विचार रहता है कि गरीब से गरीब व्यक्ति राष्ट्रीय पर्व में देश की राजधानी में आमंत्रित हो। इनमें से कई ऐसे लोग भी हैं, जो कभी दिल्ली नहीं गए होंगे। लेकिन आज वे दिल्ली जा रहे हैं।

मां की हत्या करने वाले बेटे को आजीवन कारावास

विधि संवाददाता। लखनऊ

पैसों की खातिर अपनी मां की हत्या करने वाले आरोपी बेटे इंद्रेश कुमार कटियार को सत्र अदालत ने उम्र कैद की सजा सुनाई है। एडीजे शालिनी सागर ने इस पर 60 हजार का जुर्माना भी लगाया है।

सरकारी वकील मो. इंतजार अहमद गाजी के मुताबिक इंद्रेश अक्सर अपनी मां शकुंतला देवी से खर्चे के लिए पैसों की मांग करता था। इसके लिए उनसे लड़ाई झगड़ा भी करता था। 26 फरवरी 2016 को भी उसने पैसों की मांग की और उनसे झगड़े पर अमादा था। उसकी मां लॉबी में बैठी थीं। तभी वह गुस्से में छत से कुल्हाड़ी लेकर आया और अपनी मां पर प्रहार करने लगा। यह मंजर देखकर उसके छोटे भाई अमित की पत्नी श्वेता चिल्लाई तो उसे भी कुल्हाड़ी लेकर दौड़ा लिया। उसने खुद को कमरे में बंद कर लिया। तब वह आंगन में गया और हाथ मुंह धोकर घर का दरवाजा बाहर से बंद कर भाग गया। इस दौरान अमित बाथरूम में था। मुहल्लेवालों और पुलिस के आने पर दरवाजा तोड़ा गया। अमित और उसकी पत्नी को बाहर निकाला गया। तब तक शकुंतला देवी की मौत हो चुकी थी। इस घटना की एफआईआर अमित कुमार कटियार ने थाना अलीगंज में दर्ज कराई थी।

हाईकोर्ट ने अकबर नगर में ध्वस्तीकरण पर लगी रोक बढ़ाई

विधि संवाददाता। लखनऊ

राजधानी के अकबर नगर इलाके में ध्वस्तीकरण पर लगी रोक को हाईकोर्ट की लखनऊ खंडपीठ ने सात फरवरी तक के लिए बढ़ा दी है। पीठ ने इसके साथ ही यह स्पष्ट भी किया है कि जिन लोगों ने ध्वस्तीकरण के खिलाफ याचिकाएं अथवा हस्तक्षेप प्रार्थना पत्र दाखिल किया है उन्हें ही सात फरवरी के बाद भी रोक का लाभ मिलेगा।

पीठ ने यह भी कहा है कि अकबर नगर में ध्वस्तीकरण की कार्रवाई से प्रभावित व्यक्ति चाहे तो सात फरवरी तक अदालत आ सकता है। जस्टिस विवेक चौधरी एवम जस्टिस मनीष कुमार की पीठ ने यह आदेश अकबर नगर के निवासियों की ओर से दाखिल 11 याचिकाओं पर एक साथ सुनवाई करते हुए दिया है। पीठ ने अपने आदेश में कहा है कि चीफ जस्टिस के आदेश से एकल पीठ व खंडपीठ के समक्ष विचाराधीन सभी याचिकाएं इस खंडपीठ के समक्ष सुनवाई के लिए सूचीबद्ध की गई हैं। वहीं सुनवाई के दौरान प्रतिवादियों की ओर से जवाबी हलफनामा भी दाखिल किया गया। पीठ के समक्ष याचिककर्ताओं की ओर से कहा गया कि वो 40-50 सालों से उस स्थान पर कब्जे में हैं। तब यूपी अर्बन प्लानिंग एंड डेवलपमेंट एक्ट 1973 लागू भी नहीं हुआ था। लिहाजा उक्त कानून के तहत उन्हें बेदखल करने की कार्रवाई नहीं की जा सकती। वहीं राज्य सरकार और एलडीए की ओर से कहा गया कि याचिकाकर्ता विवादित संपत्तियों पर अपना स्वामित्व नहीं सिद्ध कर सके हैं। यह भी कहा गया कि वहां के लोगों के पुनर्वास की व्यवस्था की गई है।

21 दिसंबर को लगी थी ध्वस्तीकरण पर रोक: 21 दिसम्बर 2023 को एकल पीठ ने ध्वस्तीकरण पर रोक लगाई थी। कहा था कि प्रथम दृष्टया यह प्रतीत होता है कि याचिकाकर्ता समेत तमाम लोग प्रश्नगत क्षेत्र में बिना किसी स्वामित्व के कब्जे में हैं। वो समय बीतने के साथ कब्जे में रहे और वहां नगर निगम की सुविधाएं और सरकारी सड़कें भी पहुंची। पीठ ने पाया था कि कुछ लोगों से तो नगर निगम बकायदा कर भी वसूल रहा है। वहां एक सरकारी स्कूल भी है। एकल पीठ ने कहा था कि इसमें कोई संदेह नहीं कि याचिकर्ता अपना स्वामित्व सिद्ध करन पाने में अब तक असफल रहे हैं लेकिन उन्होंने अपना कब्जा सिद्ध किया है। भले ही वह अनाधिकृत कब्जा है।

फर्जीवाड़े में पांच वर्ष की सजा

विधि संवाददाता। लखनऊ

आपसी मिलीभगत से फर्जी व कूटरचित दस्तावेज के जरिए दुर्बल आय वर्ग के मकान का नामांतरण कराने के मामले में अदालत ने अखिलेश कुमारीए दिलीप सिंह व संतोष कुमार वैश्य को पांच वर्ष की सजा सुनाई है। भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम की विशेष जज रेखा शर्मा ने आरोपियों पर अलग अलग 28 हजार का जुर्माना भी ठोंका है।

सरकारी वकील लक्ष्मी पांडेय के मुताबिक आरोपी संतोष कुमार वैश्य को दुर्बल आय वर्ग का भवन इंदिरा नगर लखनऊ में आवंटित हुआ था। वह आर्थिक कारणों से अपने मकान को बेचना चाहता था। उसने अखिलेश कुमारी के पति दुर्गा प्रसाद उपाध्याय से 45 हजार रुपए में बेचने का अनुबंध किया। फिर कोर्ट फीस का 17 हजार 512 रुपए बचाने के लिए फर्जी मृत प्रमाण पत्र तथा उत्तराधिकार प्रमाण पत्र लगाकर आवास विकास परिषद के अधिकारियों को लाभ पहुंचाते हुए भवन का अंतरण अखिलेश कुमारी के नाम करा लिया गया।

इस मामले की रिपोर्ट थाना गाजीपुर में दर्ज कराई गई थी और विवेचना भ्रष्टाचार निवारण संगठन द्वारा की गई थी। विशेष अदालत ने इस मामले के अन्य आरोपी तत्कालीन संपत्ति अधिकारी राजेंद्र कुमार श्रीवास्तव, लेखाकार सुरेश कुमार श्रीवास्तव, कनिष्ठ लेखा अधिकारी शिव शंकर गुप्ता व अखिलेश कुमारी के पति दुर्गा प्रसाद उपाध्याय को साक्ष्य के अभाव में दोष मुक्त कर दिया है।

मुख्य निर्वाचन अधिकारी ने मतदाता दिवस की दिलाई शपथ

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

मुख्य निर्वाचन अधिकारी नवदीप रिणवा ने राष्ट्रीय मतदाता दिवस की पूर्व संध्या पर मुख्य निर्वाचन अधिकारी कार्यालय लखनऊ में अधिकारियों एवं कर्मचारियों को मतदाता दिवस की शपथ दिलाई। उन्होंने इस अवसर पर कहा कि हम सबको निर्वाचन के समय अपने वोट देने के अधिकार का उपयोग पूरे जोश के साथ करना चाहिए। उन्होंने कहा कि प्रत्येक मतदाता का कर्तव्य है कि अपनी मतदाता सूची को अपडेट रखे और अगर कोई संसोधन हो तो उसे निर्धारित फॉर्म भरके ठीक करवाने का कार्य करे। मुख्य निर्वाचन अधिकारी ने बताया कि प्रत्येक वर्ष की 25 जनवरी को पूरे देश में राष्ट्रीय मतदाता दिवस का आयोजन किया जाता है। इस वर्ष भी भारत निर्वाचन आयोग के निर्देशानुसार 25 जनवरी 2024 को राष्ट्रीय मतदाता दिवस का आयोजन विभिन्न स्तरों पर किया जा रहा है। राष्ट्रीय मतदाता दिवस की पूर्व संध्या पर अथवा राष्ट्रीय मतदाता दिवस के दिन स्कूल व शैक्षणिक संस्थाओं में प्रजातांत्रिक मूल्यों के उत्प्रेरण हेतु 'वोट जैसा कुछ नहीं, वोट जरूर डालेंगे हम' विषय पर विभिन्न गतिविधियां यथा निबन्ध, वाद-विवाद प्रतियोगिता, ड्राइंग और क्विज प्रतियोगिता आदि का आयोजन किया गया। इसके अतिरिक्त सभी कार्यालयों में राष्ट्रीय मतदाता दिवस मनाये जाने हेतु भारत निर्वाचन आयोग के निर्देशों के अनुसार आयोजन किये जायेंगे और आयोजित कार्यकमों में अधीनस्थ अधिकारियों, कर्मचारियों को मतदाता शपथ दिलायी गयी है।

सूचना निदेशालय में शपथ दिलायी गयी

लखनऊ। भारत निर्वाचन आयोग के निर्देशानुसार बुधवार को मतदाता दिवस के उपलक्ष्य में मतदाता शपथ का आयोजन सूचना निदेशालय के ऑडिटोरियम में किया गया। इस अवसर पर संयुक्त निदेशक दिनेश कुमार गुप्ता ने उपस्थित सभी अधिकारियों कर्मचारियों को मतदाता शपथ दिलाई। इस अवसर पर उपनिदेशक प्रभात शुक्ला व ललित मोहन, सहायक निदेशक सतीश चन्द्र भारती सहित अन्य अधिकारी कर्मचारी उपस्थित रहे।

हमीरपुर में मनाया गया उत्तरप्रदेश स्थापना दिवस

लखनऊ। हमीरपुर में बुधवार को उत्तर प्रदेश स्थापना दिवस को हर्षोउल्लास के साथ मनाया गया। मुख्य कार्यक्रम चौरादेवी प्रांगण में आयोजित किया गया, जिसका विधायक सदर डा मनोज प्रजापति, जिलाधिकारी राहुल पाण्डेय ने फीता काटकर शुभारंभ किया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि मंत्री जलशक्ति सिंचाई एवं जल संसाधन बाढ़ नियंत्रण परती भूमि विकास लद्यु सिंचाई नमामि गंगे एवं ग्रामीण जलापूर्ति विभाग उप्र स्वतंत्र देव सिंह रहे। इस अवसर पर भारत सरकार एवं राज्य सरकार द्वारा संचालित कल्याणकारी योजनाओं की जानकारी संबंधित अधिकारियों द्वारा दी गयी। मुख्य अतिथि द्वारा सरकार द्वारा अच्छादित योजनाओं से लाभान्वित लाभार्थियों प्रधानमंत्री आवास शहरी से क्षमा प्रजापति, बुधिया, कुसुमकली, नीलम, अनीता, रजनी, दिलीप, जितेन्द्र, कालका व शिवकुमार स्वनिधि योजना तथा अन्य सरकारी योजनाओं से लाभान्वित लाभार्थियों को सम्मानित किया तथा जाति, धर्म, वर्ग सम्प्रदाय से ऊपर उठकर प्रधानमंत्री व मुख्यमंत्री को साथ देने की अपील की। उन्होंने प्रांगण में विभिन्न विभागों द्वारा लगाये गये स्टालों का अवलोकन किया। विभिन्न विभागों ने अपने-अपने स्टाल लगाये, जहां पर सरकार द्वारा संचालित विभिन्न योजनाओं के संचालन और उनके क्रियान्वयन को प्रर्दशित किया गया।

राष्ट्रीय बालिका दिवस के मौके पर गोष्ठी आयोजित

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

राष्ट्रीय बालिका दिवस पर बुधवार को मुख्य चिकित्सा अधिकारी कार्यालय में एक गोष्ठी सम्पन्न हुई। गोष्ठी की अध्यक्षता कर हुए मुख्य चिकित्सा अधिकारी डा मनोज अग्रवाल ने बताया कि बालिकाओं को उनके अधिकारों के प्रति जागरूक करने के उद्देश्य से हर साल 24 जनवरी को राष्ट्रीय बालिका दिवस का आयोजन होता है। हर साल यह किसी न किसी थीम के साथ मनाया जाता है। इस साल इस दिवस की थीम है डिजिटल जेनरेशन.हमारी जेनरेशन है।

इस मौके पर पीसीपीएनडीटी के नोडल अधिकारी डा केडी मिश्रा ने एक्ट की जानकारी देते हुए बताया कि भ्रूण हत्या रोकने के लिये यह अधिनियम सरकार द्वारा लागू किया गया है। इस अधिनियम के तहत गर्भ में पल रहे बच्चे के लिंग की जांच करना या करवाना कानूनन दंडनीय अपराध है।

लिंग जांच करके बताने वाले को पाँच साल की सजा या एक लाख का जुर्माना तो है ही साथ में जो व्यक्ति भ्रूण लिंग जांच करवाता है उस को को पाँच साल की सजा या 50,000 रुपये तक का जुर्माना हो सकता है द्य

नोडल अधिकारी ने बताया कि प्यारी बिटिया डॉट कॉम साइट के माध्यम से अल्ट्रासाउंड करने वाले डायगनोस्टिक केंद्रों और करवाने वालों की पूरी जानकारी रखी जाती है। वरिष्ठ परामर्शदाता डा आरके चौधरी ने जानकारी दी कि भ्रूण हत्या को रोकने के लिए सरकार द्वारा मुखबिर योजना चलाई जा रही है।

मुखबिर योजना के तहत तीन सदस्यीय टीम का गठन किया जाता है। जिसमें एक गर्भवती होती है। जो भी व्यक्ति भ्रूण हत्या होने की सूचना टीम को देता है उसे इनाम के तौर पर दो लाख रुपए की प्रोत्साहन राशि दी जाती है। इस योजना की अहम बात है कि सूचना देने वाले का नाम गुप्त रखा जाता है। टीम को भ्रूण हत्या करने वाले केंद्रों का स्टिंग ऑपरेशन करना होता है और इसका वीडियो बनाकर स्वास्थ्य विभाग को देना होता है। इसके बाद स्वास्थ्य विभाग पुलिस को लेकर आगे की कार्यवाही करती है । स्टिंग करने वाली टीम को प्रति स्टिंग दो लाख रुपए दिये जाने का प्रावधान है जिसमें एक लाख रुपए गर्भवती को, 60,000 रुपए मुखबिर को और 40,000 रुपए टीम के तीसरे सदस्य को दिए जाते हैं। इस मौके पर जिला स्वास्थ्य शिक्षा एवं सूचना अधिकारी योगेश रघुवंशी, विधिक सलाहकार प्रदीप कुमार मिश्रा, पटल सहायक संजीव श्रीवास्तव, पीसीपीएनडीटी के शादाब रसूल और सुधांशु कुमार श्रीवास्तव, पीएमएमवीईवाई के जिला समन्वयक सुधीर कुमार वर्मा, सभी सरकारी अस्पतालों की महिला रोग विशेषज्ञ और रेडियोलॉजिस्ट मौजूद रहे।

ओलावृष्टि से क्षतिग्रस्त हुई फसलों से प्रभावित किसानों के लिए धनराशि स्वीकृत

लखनऊ। उत्तर प्रदेश सरकार ने ओलावृष्टि से क्षतिग्रस्त हुई फसलों के कृषकों को राहत सहायता प्रदान किये जाने हेतु वर्तमान वित्तीय वर्ष में 65 लाख 75 हजार 178 रूपये की धनराशि स्वीकृति की है। इस संबंध में आज शासनादेश जारी किया गया है। जारी शासनादेश के अनुसार उक्त धनराशि जिलाधिकारी महोबा के निवर्तन पर रखने के निर्देश दिये गये हैं। इस संबंध में राहत आयुक्त जीएस नवीन कुमार ने बताया कि जिस मद में शासन द्वारा धनराशि स्वीकृत की जा रही है उसी मद में धनराशि का उपयोग किया जायेगा। अन्य किसी भी मद विभागीय कार्य हेतु धनराशि का व्यय नहीं किया जायेगा। उन्होंने बताया कि राज्य आपदा मोचक निधि की धनराशि का व्यय सक्षम अधिकारी द्वारा वित्तीय एवं प्रशासनिक स्वीकृति प्राप्त करने के उपरान्त नियमानुसार प्रक्रिया का अनुपालन सुनिश्चित करते हुए निर्धारित अवधि के अंदर किया जायेगा।

मनरेगा कर्मियों को सात माह से नहीं मिला मानदेय, रोजी-रोटी पर संकट

● मोहनलालगंज ब्लाक के 67 मनरेगा कर्मियों को नए साल में भी नहीं मिल सका बकाया मानदेय

संवाददाता। मोहनलालगंज

पांच दर्जन से अधिक मनरेगा कर्मियों को सात माह से मानदेय नही मिल सका है। लिहाजा मोहनलालगंज ब्लाक में मनरेगा की रफ्तार मन्द पड़ रही है। उधर मानदेय बकाया होने से मनरेगा कर्मियों के परिवार तंगहाली झेल रहे हैं। परेशानहाल मनरेगा कर्मियों ने शासन से मानदेय भुगतान कराने की मांग की है। मोहनलालगंज की ग्राम पंचायतों में तैनात 58 ग्राम रोजगार सेवक 6 तकनीकि सहायक और ब्लाक की मनरेगा सेल में कार्यरत अतिरिक्त कार्यक्रम अधिकारी एकाउण्टेन्ट व कम्प्यूटर आपरेटर को जुलाई माह से मानदेय नही मिल सका है। सात माह बीत चुके हैं लेकिन नए वर्ष में अब तक इन मनरेगा कर्मियों को मानदेय का भुगतान नही हो सका है। लिहाजा तंगहाली झेल रहे मनरेगा कर्मियों के परिवार पाई.पाई को मोहताज हो गए हैं। बच्चों के स्कूल से फीस चुकाने के मैसेज आ रहे हैं और घर का राशन खत्म होने की नौबत आ गई है। लेकिन अनगिनत शिकायतों के बावजूद जिला प्रशासन से मनरेगा कर्मियों को कोरा आश्वासन तक नही मिल पा रहा है। इस संदर्भ में डीसी मनरेगा का पक्ष लेने की कोशिश की गई लेकिन उन्होने फोन काल रिसीव नही की।

जेब में फूटी कौड़ी नही, मन्द पड़ रही मनरेगा की रफ्तार

जेब में फूटी कौड़ी नही होने से मनरेगा कर्मियों के कामकाज पर असर पड़ने लगा है। साइट इंस्पेक्शन और भागदौड़ में खाली जेब बाधक बन रही है। लिहाजा मोहनलालगंज ब्लाक में मनरेगा की रफ्तार मन्द पड़ने लगी है। हालांकि अफसर मनरेगा में तेजी लाने के लिए लगातार दबाव बना रहे हैं। जिसे लेकर परेशान मनरेगा कर्मियों ने जल्द मानदेय भुगतान नही होने पर काम करने में हाथ खड़े करने शुरु कर दिए हैं।

ढाई हजार मनरेगा श्रमिकों को मजदूरी की दरकार

मोहनलालगंज की ग्राम पंचायतों में तकरीबन ढाई हजार मनरेगा श्रमिकों की मजदूरी भी दो माह से बकाया है। नवम्बर से बकाया मजदूरी भुगतान को लेकर मनरेगा श्रमिक लगातार सचिव और प्रधान से मांग कर रहे हैं। श्रमिकों का कहना है कि समय रहते मजदूरी का भुगतान नही हो सका तो वह लोग कामकाज ठप कर देंगे। जिसे लेकर ब्लाक प्रशासन के अधिकारी परेशान हैं।

समेसी उपकेन्द्र की बन्द पड़ी लाइन से डेढ हजार मीटर तार चोरी

मोहनलालगंज। पुरसेनी के सूनसान इलाके से चोरों ने समेसी विद्युत उपकेन्द्र की बन्द पड़ी 33 केवी लाइन का तकरीबन डेढ हजार मीटर बिजली का तार चोरी कर लिया। पेट्रोलिंग के दौरान तार चोरी का खुलासा होने पर जेई ने पुलिस से शिकायत की। लेकिन बारह दिन तक टालमटोल करने के बाद मंगलवार को पुलिस ने एफआईआर दर्ज की है।

सेस तृतीय खण्ड के समेसी विद्युत उपकेन्द्र की पुरानी 33 केवी लाइन मोहनलालगंज से होकर गुजरती है। कई वर्ष पूर्व एसजीपीजीआई के पारेषण उपकेन्द्र से इस सोर्स को बन्द किए जाने के बाद से समेसी उपकेन्द्र की यह लाइन बन्द पड़ी है। लेकिन विभाग के जिम्मेदारों ने अब तक इस लाइन की सुध नही ली। लिहाजा चोरों ने मोहनलालगंज में पुरसेनी नहर पुल से मऊ तक तकरीबन 8 पोल की थ्री फेस लाइन के लगभग 1500 मीटर बिजली के तार काटकर चोरी कर लिए। 10 जनवरी को लाइन स्टाफके साथ लाइन की पेट्रोलिंग करने पहुंचे जेई आशीष कुमार को तार गायब मिले तो उन्होने विभाग के अधिकारियों और कोतवाली पहुंचकर पुलिस से शिकायत की। लेकिन 12 दिन तक पुलिस अधिकारी जांच के बहाने टरकाते रहे। विद्युत विभाग के अधिकारियों के हस्तक्षेप पर मंगलवार को पुलिस ने तार चोरी की एफआईआर दर्ज कर ली है। हालांकि इंस्पेक्टर आलोक राव ने बताया लाइन बन्द पड़ी है। इसलिए तार चोरी की सूचना विभाग के अधिकारियों ने देर से दी। तहरीर मिलते ही एफआईआर दर्ज कर जांच की जा रही है।

एसडीओ बोले उसी दिन दी गई थी तहरीर: समेसी के एसडीओ उपेन्द्र पटेल ने बताया तार चोरी की शिकायत उसी दिन पुलिस से की गई थी। एसआई जांच करने भी गए थे लेकिन। लेकिन एफआईआर अब दर्ज की जा सकी है।

सरोजनीनगर स्पोर्ट्स लीग के वॉलीबॉल मैच में एसकेडी ने मारी बाजी

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

सरोजनीनगर स्पोर्ट्स लीग के चौथे चरण में खेले जा रहे इंटर स्कूल ब्वॉयज वॉलीबॉल चैंपियनशिप का ग्रैंड फिनाले बुधवार को वृंदावन योजना स्थित एसकेडी एकेडमी में खेला गया। अद्भुत जोश और अपरिमित उमंग से भरे इंटर स्कूल ब्वॉयज वॉलीबॉल चैंपियनशिप का फाइनल मुकाबला पीबीएसएन इंटर कॉलेज और एसकेडी एकेडमी के बीच हुआ। 3 चरण के इस मैच में पहले चरण में एसकेडी एकेडमी ने 25 एवं पीबीएसएन इंटर कॉलेज ने 12 पॉइंट, दूसरे चरण में एसकेडी एकेडमी ने 25 एवं पीबीएसएन इंटर कॉलेज ने 13 पॉइंट, तीसरे चरण में एसकेडी एकेडमी ने 25 एवं पीबीएसएन इंटर कॉलेज ने 20 पॉइंट बटोरे। तीनों चरण में एसकेडी एकेडमी ने बढ़त बनाकर फाइनल का खिताब अपने नाम कर लिया। मैच के उपरांत विधायक डॉ राजेश्वर सिंह ने विजेता टीम एसकेडी एकेडमी को 25 हजार और उपविजेता टीम पीबीएसएन इंटर कॉलेज को 11 हजार रुपये की इनामी राशि के साथ प्रशस्ति पत्र, वॉलीबॉल और ट्रॉफी देकर सम्मानित किया। वहीं वॉलीबॉल फेडरेशन ऑफ इंडिया को भी डॉ राजेश्वर सिंह ने 21000 रुपये देकर सम्मनित किया। बता दें कि इंटर कॉलेज बॉयज वॉलीबॉल चैंपियनशिप में कुल 28 टीमों ने हिस्सा लिया है। जिसमें 336 से अधिक खिलाडियों नें अपना बेहतरीन प्रदर्शन किया। इस रोमांचक मैच के दौरान विधायक डॉ राजेश्वर सिंह समेत सभी दर्शकों नें ताली बजाकर युवा खिलाड़ियों का उत्साहवर्धन किया।

वॉलीबॉल चैंपियनशिप फाइनल के उपरांत खिलाड़ियों का हौसला बढ़ाते हुए अपने संबोधन में डॉ राजेश्वर सिंह ने कहा कि हमारे देश में 55 प्रतिशत आबादी 25 साल से कम है, हमारा देश युवाओं का देश है तथा आने वाले 30 से 40 सालों में देश की जिम्मेदारी युवाओं के कंधे पर है। उन्होंने अपने संबोधन में आगे कहा कि स्पोर्ट्समैन देश का सर्वोत्तम नागरिक होता है। उसके अंदर अनुशासन और समर्पण की भावना होती है। वह आम नागरिकों से ज्यादा स्वस्थ होता है। इसलिए हमारा प्रयास है कि हम खेल में युवाओं को ज्यादा से ज्यादा आगे बढ़ाएं। डॉ राजेश्वर सिंह ने आगे कहा कि हमारे देश की मोदी सरकार और प्रदेश की योगी सरकार भी युवाओं को खेल में आगे बढ़ाने के लिए हमेशा तत्पर रहती है। ओलंपिक में मेडल लेकर आए खिलाड़ियों को उत्तर प्रदेश सरकार ने सरकारी नौकरी दी और उनको 42 करोड रुपए प्रदान कर प्रोत्साहित भी किया। इस मौके सरोजनीनगर स्पोर्ट्स लीग को निरंतर आगे बढ़ाने के लिए विधायक डॉ राजेश्वर सिंह द्वारा अगले सप्ताह से गर्ल्स वॉलीबॉल चैंपियनशिप कराने की घोषणा की गई।

प्रदेश की सांस्कृतिक विरासत को संजोने का हो रहा कार्यः चौबे

●उत्तर प्रदेश दिवस का हुआ भव्य आयोजन

संवाददाता। सोनभद्र

उत्तर प्रदेश स्थापना दिवस के अवसर जनपद मुख्यालय स्थित डायट परिसर उरमौरा में सदर विधायक भूपेश चौबे ने आयोजित कार्यक्रम का दीप प्रज्जवलन व माँ सरस्वती के प्रतिमा पर माल्यार्पण कर शुभारंभ किया। कार्यक्रम के दौरान सदर विधायक भूपेश चौबे ने कहा कि उत्तर प्रदेश राज्य स्थापना दिवस दिनांक 24 जनवरी 2018 से निरंतर आयोजित किया जा रहा है।

आयोजन के माध्यम से समस्त विभागों द्वारा अपनी योजनाओं से सम्बन्धित स्टाल लगाकर सरकार द्वारा संचालित योजनाओं की जानकारी दी जा रही है, उत्तर प्रदेश दिवस के आयोजन की मुख्य थीम उत्तर प्रदेश की समृद्धि सांस्कृतिक विरासत को संजोना है, निवेश एवं रोजगार पर आधारित संगोष्ठियां उद्यमी सम्मेलन के माध्यम से लोगों को जागरूक करना है, आयोजन के माध्यम से उत्तर प्रदेश के समृद्धि व सांस्कृतिक विरासत को संजोने का कार्य किया जा रहा है।

इसमें उत्तर प्रदेश की स्थापना से लेकर अब तक की विकास यात्रा से सम्बन्धित अभिलेख प्रदर्शनी भी सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग द्वारा लगायी गयी है, जिसके माध्यम से लोग उत्तर प्रदेश के इतिहास की जानकारी प्राप्त कर सकते हैं, उत्तर प्रदेश दिवस के अवसर पर इस देश के अमर शहीद बलिदानियों व देश की आजादी में अपने प्राण न्यौछावर करने वाले अमर शहीदों को याद व नमन करने का दिन है और उन्हें श्रद्धासुमन अर्पित कर, देश के जन-जन तक उनकी गौरव गाथा को पहुंचाने के साथ ही उनके त्याग व बलिदान से देश के नौजवानों को प्रेरणा लेने की जरूरत है।

इस अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में बन्देमातरम् गीत का गायन एवं आजादी से जुड़ें लोकगीत गायनों की सुन्दर प्रस्तुति राजकीय बालिका इण्टर कालेज माँ वैष्णो माडर्न पब्लिक स्कूल विन्ध्य कन्या महाविद्यालय डी0ए0वी0 कालेज श्री एकेडमी आदिवासी सिल्थम कालेज के छात्र छात्राओं द्वारा समूह गायन रासलीला देशभक्ति नृत्य कौव्वाली माँ सरस्वती की वन्दना आदि की मनमोहक प्रस्तुति की गयी माँ वैष्णो माडर्न स्कूल की की छात्रा अराध्या नन्दन ने भरत नाट्यम नृत्य की सुन्दर प्रस्तुति की गयी।

इस मौके पर सीडीओ सौरभ गंगवार, अपर जिलाधिकारी न्यायिक सुभाष चन्द्र यादव, जिला प्रोबेशन अधिकारी सुधाशु शेखर शर्मा जिला कृषि अधिकारी हरिशंकर मिश्र पर्यटन सूचना अधिकारी बृजेश कुमार यादव जिला विद्यालय निरीक्षक आर0पी0 यादव, जिला खादी ग्रामोद्योग अधिकारी किरन श्रीवास्तव अपर जिला सूचना अधिकारी विनय कुमार सिंह उपस्थित रहें। कार्यक्रम का संचालन आनन्द त्रिपाठी द्वारा किया गया।

विकास को हर व्यक्ति तक पहुंच रही सरकारः अजीत रावत

सोनभद्र। भारतीय जनता पार्टी अनुसूचित जाति मोर्चा प्रदेश संगठन के निर्देश पर बस्ती संपर्क अभियान बुधवार को रावर्टसगंज विधानसभा क्षेत्र के ग्राम पंचायत जमुआव में आयोजित की गई। पीएम मोदी सीएम योगी के द्वारा चलाई जा रही महत्वाकांक्षी योजनाओं की जानकारी देते हुए योजनाओं का लाभ पात्रों तक पहुंचाने का भरोसा दिलाया। भाजपा अनुसूचित जाति मोर्चा के क्षेत्रीय अध्यक्ष व सदर ब्लाक प्रमुख अजीत रावत नें गोष्ठी को संबोधित करते हुए कहाकि पीएम मोदी के 10 साल बेमिसाल भाजपा सरकार सबका साथ सबका विकास सबका विश्वास वाली सरकार है शहर से लेकर गांव तक पात्र व्यक्तियों तक उसका लाभ पहुंचाया जा रहा है जिसके लिए भाजपा पदाधिकारी व सरकार के अंग लगे हुए हैं जिससे एक भी पात्र व्यक्ति लाभ से वंचित न रहे अंतिम छोर के पात्र व्यक्ति तक लाभ पहुंचाने का कार्य भाजपा की सरकार कर रही है।

महिलाओं की सुरक्षा और सम्मान को लेकर सदैव तत्पर रहती है पुलिस

राष्ट्रीय बालिका दिवस पर कार्यक्रम का आयोजन

संवाददाता। सकलडीहा, चन्दौली

कोतवाली परिसर में बुधवार को अमर ज्योति सेवा केंद्र द्वारा राष्ट्रीय बालिका दिवस के अवसर पर कार्यक्रम आयोजित किया गया । कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रभारी निरीक्षक राजीव कुमार सिंह द्वारा दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। कार्यक्रम के दौरान ग्रामीण किशोरियों द्वारा स्वागत गीत एंव नाटक के माध्यम से महिला सुरक्षा और सशक्तिकरण को लेकर सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए ।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए प्रभारी निरीक्षक राजीव कुमार सिंह ने कहा कि आज महिलाओं की सुरक्षा को लेकर केंद्र और प्रदेश की सरकार सदैव तत्पर है। लगातार विभिन्न कानून जारी किए जा रहे हैं। समाज में आज महिलाएं पुरुषों से कंधा से कंधा मिलाकर समाज एवं देश के विकास में अपनी अग्रणी भूमिका निभा रही हैं । वहीं महिला कानून अधिकारों को लेकर शासन द्वारा चलाए जा रहे मिशन शक्ति दीदी के बारे में विस्तार से जानकारी दी। इसके अलावा सुकन्या समृद्धि योजना, मुख्यमंत्री सामूहिक विवाह योजना, मुख्यमंत्री आवास योजना, वृद्धा पेंशन योजना, उज्ज्वला योजना, कन्या सुमंगला योजना, निराश्रित महिला पेंशन योजना एवं बालिकाओं को विभिन्न हेल्पलाइन नम्बर 1090, 1098, 1076, 112/1098, 102, 1930 के बारे में जानकारी देते हुए पुलिस सहायता लेने की बात कही। इस मौके पर कस्बा प्रभारी धर्मदेव सिंह, महिला दरोगा मीरा यादव, संस्था निदेशक ज्ञान प्रकाश, संस्था कोऑर्डिनेटर सुजीत कुमार व संचालन सांध्य यादव महिला महिला समन्वयक ने किया।

प्रभु श्रीराम का चरित्र भारतीय संस्कृति का प्राण हैः महापौर

प्रयागराज। महापौर कैंप कार्यालय कीडगंज में श्री राम जन्मभूमि मंदिर में भगवान श्रीराम के स्थापित होने पर भगवान श्रीराम के जीवन चित्रण पर चित्रकला कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर चित्रकला में भाग लेने वाले सभी बच्चों को पुरस्कृत करते हुए महापौर गणेश केसरवानी ने कहा कि भारत की पहचान मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम से है और भगवान श्रीराम का चरित्र भारतीय संस्कृति की प्राण है। कहा कि हमें आने वाली पीढ़ी के लिए बच्चों के द्वारा अपनी भारतीय संस्कृति और विरासत को बढ़ाने का काम करना है। इस प्रकार की प्रतियोगिताएं निश्चित रूप से बच्चों को अपनी संस्कृति के प्रति मार्गदर्शन करती है। मीडिया प्रभारी राजेश केसरवानी ने बताया कि इस अवसर पर 132 बच्चों ने भाग लिया। सभी बच्चों ने मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचंद्र के जीवन चरित्र को चित्रण करने का काम किया।कार्यक्रम का संचालन एवं संयोजक पार्षद मुकेश कसेरा रहे। इस अवसर पर भाजपा नेता पदुम जायसवाल प्रमोद मोदी राजेश केसरवानी संस्कार सिन्हा दिलीप केसरवानी त्रियुगी नारायण दीक्षित विवेक मिश्रा मौजूद रहे।

प्रदेश के हर जिले में बनेंगे अटल आवासीय विद्यालयः अनिल राजभर

●मंत्री ने की अटल आवासीय विद्यालय के संचालन एवं लेबर सेस की समीक्षा

●श्रम विभाग के लाभार्थियों को हित लाभ प्रमाणपत्रों का किया वितरण

संवाददाता। प्रयागराज

मंत्री श्रम एवं सेवायोजन समन्वय विभाग अनिल राजभर ने बुधवार को सर्किट हाउस के सभागार में श्रम विभाग के अटल आवासीय विद्यालय के संचालन एवं लेबर सेस की प्रयागराज मण्डल की समीक्षा बैठक की। मंत्री राजभर ने बैठक में कहा कि श्रमिकों के बच्चों के लिए प्रदेश के 18 मण्डलों में बनाये गये अटल आवासीय विद्यालयों की उपयोगिता को देखते हुए अब इन्हें प्रदेश के प्रत्येक जनपद में बनाया जायेगा। मंत्री ने बताया कि अटल आवासीय विद्यालय की प्रधानमंत्री ने स्वयं प्रशंसा की है एवं पूरे देश में श्रमिकों के बच्चों के लिए अटल आवासीय विद्यालय बनाये जाने की योजना पर विचार किया जा रहा है।

बैठक में मंत्री राजभर को उप श्रमायुक्त प्रयागराज ने ग्राम बेलहट तहसील कोरांव में बनाये गये अटल आवासीय विद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थियों की संख्या शिक्षकों की संख्या लाइब्रेरी कम्प्यूटर लैब प्ले ग्राउण्ड मेस मैनेजमेंट एवं विद्यालय के संचालन हेतु फर्नीचर आईटी इक्यूपमेंट नेटवर्किंग सीसीटीवी पीए सिस्टम आदि विभिन्न आवश्यक सामाग्रियों के क्रय हेतु निर्गत टेण्डर एवं कार्यादेश की अद्यतन स्थिति से अवगत कराया। जिस पर मंत्री राजभर ने समस्त कार्यों को गुणवत्तापूर्ण ढंग से व उपकरणों की विशिष्टताओं की जांच कर भुगतान की कार्यवाही किए जाने के साथ ही प्रधानाचार्य के पास कुछ मद में बजट रखने के लिए कहा। बैठक में मंत्री राजभर ने फैसिलिटी मैनेजेंट की समीक्षा करते हुए सुपरवाईजर और प्लम्बर की नियुक्ति यथाशीघ्र कराये जाने के लिए कहा। बैठक में मंत्री अनिल राजभर ने विद्यालय के हस्तांतरण के लिए गठित निरीक्षण समिति की रिपोर्ट को मंत्री को उपलब्ध कराने व विद्यालय में डीएलपी पीरियड में डीपीआर के अनुरूप निर्माण सम्बंधी किसी प्रकार की कमी के परिलक्षित होने पर उक्त कार्य को पूर्ण कराये जाने की समस्त जिम्मेदारी कार्यदायी संस्था को दिए जाने के लिए कहा है। मंत्री राजभर ने उप श्रमायुक्त को वन विभाग से सम्पर्क कर विद्यालय की भूमि पर उग सकने वाले पेड़ों का चिन्हीकरण करते हुए नक्षत्र वाटिका अमृट वाटिका व मियावॉकी पद्धति से वृक्षारोपण कर परिसर और आस पास के क्षेत्र को हरा भरा बनाने के लिए कहा है।

उन्होंने विद्यालय के मेस की समय समय पर रैण्डमली जांच स्वयं और सम्बंधित श्रम प्रवर्तन अधिकारी से कराये जाने हेतु निर्देशित किया है। जिससे कि बच्चों को दिए जाने वाले भोजन और खाद्य पदार्थों की गुणवत्ता सुनिश्चित हो सके। बैठक में उप श्रमायुक्त ने मंत्री को मानक संचालन प्रक्रिया के तहत वर्ष 2024 25 में कक्षा छह और कक्षा नौ हेतु प्रत्येक में 140 कुल 240 बच्चों के प्रवेश हेतु प्रवेश परीक्षा कराये जाने के सम्बंध में जानकारी दी गयी।

क्विक न्यूज

संस्था ने 25 टीबी रोगियों को दिये ऊनी शाल

मिर्जापुर। आभा फाउंडेशन के अध्यक्ष श्री अमित श्रीनेत्र द्वारा अपनी पत्नी आभा सिंह के स्मृति में जिला क्षय रोग कार्यालय के हाल में जिला मंडली चिकित्सालय के अधीक्षक डॉक्टर तरुण सिंह की उपस्थिति में जनपद के 25 टीबी प्रभावित रोगियों को पूर्व की भांति उनी साल भेंट करने का नेक कार्य किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ तरुण सिंह ने अपने संबोधन में आभा फाउंडेशन की सराहना करते हुए आए मरीजों को नियमित दवा सेवन करने का सुझाव दिया साथ ही उन्होंने मरीज से अन्य लोगों को भी रोग के प्रति जागरूक करने की उम्मीद जताई। वहीं जिला क्षय रोग अधिकारी डॉ अनिल कुमार ओझा द्वारा लोगों को टीबी के समस्त लक्षणों से परिचित कराते हुए सरकारी स्तर से उपलब्ध समस्त निरूशुल्क सुविधाओं की जानकारी प्रदान की गई।

बालिका दिवस पर स्वास्थ्य विभाग ने निकाली रैली

मिर्जापुर। बालका दिवस जिले के सभी विभागों में धूमधाम से मनाया गया। इसी के तहत बुधवार को स्वास्थ्य विभाग की ओर से मुख्य चिकित्साधिकारी कार्यालय से रैली निकाली गई जो पेटोल टंकी होते हुए महिला चिकित्सालय पर जाकर समापन किया गया। रैली को हरी झण्डी मुख्य चिकित्साधिकारी डॉक्टर छोटे लाल वर्मा ने दिखाया। इस अवसर पर जिला कार्यक्रम प्रबन्धक अजय, अपर मुख्य चिकित्साधिकारी डॉक्टर अनिल ओझा, अपर मुख्य चिकित्साधिकारी डॉक्टर गुलाब वर्मा, जिला मलेरिया अधिकारी डॉक्टर संजय द्विवेदी व कार्यक्रम का संचालन चन्दशेखर मिश्र ने किया।

मतदान और सशक्त लोकतंत्र निर्माण पर हुई परिचर्चा

बीजपुर, सोनभद्र। महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ एनटीपीसी परिसर शक्तिनगर में राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई प्रथम द्वितीय व तृतीय के तत्वावधान में बुधवार को मतदाता जागरूकता अभियान कार्यक्रम के अंतर्गत भारत में मतदान और सशक्त लोकतंत्र का निर्माण विषय पर परिचर्चा का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का प्रारम्भ डॉ0 प्रभाकर लाल के नेतृत्व में स्वयंसेवकों छात्र-छात्राओं समस्त शिक्षक व कर्मचारियों को मतदान शपथ दिलाया गया। प्रभारी डॉ0 प्रदीप कुमार यादव ने भारतीय लोकतंत्र में युवाओं का मतदान के प्रति सक्रिय योगदान के महत्व को रेखांकित किया। वरिष्ठ शिक्षक डॉ0 मानिक चंद पाण्डेय ने इस परिचर्चा में मतदान हमारा पहला कर्तव्य है।

तदर्थ शिक्षकों की बहाली के लिए शिक्षकों ने किया विरोध प्रदर्शन, बांधी काली पट्टी

संवाददाता। मीरज़ापुर

नौ नवंबर 2023 के शासनादेश से प्रदेश के माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत तदर्थ शिक्षकों की सेवा समाप्त करने पर शिक्षकों में भारी गुस्सा है। उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षक संघ शर्मा गुट के आह्वान पर जिले के सभी माध्यमिक विद्यालयों में शिक्षकों ने बांह में काली पट्टी बांधकर प्रदर्शन किया। साथ ही 18 सूत्री मांगों का ज्ञापन मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ को भेजा गया।

एएस जुबिली इंटर कॉलेज में जिलामंत्री डॉ0 रमा शंकर शुक्ल के नेतृत्व में विरोध प्रदर्शन किया गया। ज्ञापन में तदर्थ शिक्षकों की बहाली, पुरानी पेंशन, चयन बोर्ड की धारा 12, 18 और 21 को यथावत लागू करने, वित्त विहीन शिक्षकों को समान कार्य के लिए समान वेतन, कैशलेस चिकित्सा की सुविधा, एनपीएस कटौती में पारदर्शिता, बोर्ड परीक्षा मूल्यांकन पारिश्रमिक सीबीएसई के समान करने, अवशेष देयकों का शीघ्र भुगतान, शिक्षकों के स्थानांतरण की प्रक्रिया सरल बनाने, सामूहिक बीमा फिर शुरू करने, एक अप्रैल 2005 के पूर्व विज्ञापन वाले सभी शिक्षकों को पुरानी पेंशन देने, अवकाशों में विद्यालय खोलने पर उपार्जित अवकाश प्रदान करने की मांग की गई। इस मौके पर प्रधानाचार्य राधाकांत त्रिपाठी, उपाध्यक्ष भूपेश सिंह, राकेश कुमार यादव, पंकज श्रीवास्तव, नरेंद्र श्रीवास्तव, राजेश श्रीवास्तव, राजेश हरिजन, सुरेन्द्र सिंह, पूनम उपाध्याय, मणिशंकर यादव, आरपी सिंह आदि थे। मिश्रीलाल इंटर कालेज मवैया में मण्डलीय मंत्री गणेश प्रसाद सिंह, बल्लभ भाई पटेल इंटर कालेज गांगपुर में जिलाध्यक्ष सत्यभूषण सिंह, शिव प्रताप सिंह इंटर कॉलेज में कोषाध्यक्ष रश्मि व उपाध्यक्ष वंदना, बसन्त विद्यालय इंटर कालेज में डॉ0 धर्मराज सिंह, शिव इंटर कालेज में बलवंत सिंह, बीएलजे इंटर कॉलेज में सुरेश कुमार जायसवाल, आदर्श इंटर कालेज विसुन्दरपुर में अरविंद दुबे के नेतृव में प्रदर्शन किया गया।

महामंडलेश्वर स्वामी भवानी नंद गिरि पहुंची मेला, हुआ भव्य स्वागत

प्रयागराज। किन्नर अखाड़ा की महामंडलेश्वर स्वामी भवानी नंद गिरि महाराज अयोध्या धाम में भगवान श्रीराम के प्राण प्रतिष्ठा और लोकार्पण समारोह में शामिल होने के बाद आज माघ मेला के ओल्ड जीटी रोड पर लगे शिविर में पहुंची। उप्र किन्नर वेलफेयर बोर्ड की वरिष्ठ सदस्य और किन्नर अखाड़ा उप्र की प्रदेश अध्यक्ष महामंडलेश्वर स्वामी कौशल्यानंद गिरि टीना मां ने शिष्यों और बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने किन्नर महामंडलेश्वर स्वामी भवानी नंद गिरि महाराज का भव्य स्वागत और अभिनंदन किया। महामंडलेश्वर स्वामी भवानी नंद गिरि महाराज ने बताया कि वह दो हफ्ते से अयोध्या धाम में भगवान श्रीराम मंदिर के प्राण प्रतिष्ठा और लोकार्पण समारोह में शामिल होने के कल्पवास और साधना के लिए तीर्थराज प्रयागराज आ गयी हैं। उन्होंने बताया कि माघ मेला के दूसरे मुख्य स्नान पर्व पौष पूर्णिमा का स्नान संगम में शिष्यों सहित करूंगी।

दुबई में भारतीय गणतंत्र दिवस कवि सम्मेलन और मुशायरा 27 जनवरी को

अम्बेडकर नगर। विदेशी सरजमीं दुबई में भारतीय गणतंत्र दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित होनेवाला भारत महोत्सव आलमी कवि सम्मेलन और मुशायरा समारोह 27 जनवरी 2024 को आयोजित होने जा रहा है। जश्न-ए-हिंदुस्तान के संस्थापक तथा मुख्य आयोजक सैय्यद सलाहुद्दीन ने कहा कि पिछले 22 वर्ष 2003 से लगातार आयोजित हो रहे भारतीय गणतंत्र दिवस कवि सम्मेलन और मुशायरा समारोह का गौरवशाली इतिहास है और वह इस भव्य परंपरा को हमेशा कायम रखेंगे.भारत महोत्सव के संस्थापक सै सलाहुद्दीन ने आगे कहा कि यह गौरवशाली आयोजन हमारे लिए महज कवि सम्मेलन और मुशायरा नहीं बल्कि भारत के संविधान और लाल किले की साहित्यिक परंपराओं का दिल की गहराइयों से सम्मान है, यह दुनिया का एकमात्र समारोह है जिसकी शुरुआत भारतीय राष्ट्रीय गीत से होती है .

भारतीय गणतंत्र दिवस समारोह को धूमधाम से विदेशी सरजमीं पर दुबई में करनेवाली आयोजन समिति के सदस्य सै मेराजुद्दीन किछौछवी ने बताया कि आगामी 27 जनवरी शनिवार को दुबई के भव्य शेख राशिद स्टेडियम में रात्रि 8.00 बजे अपनी गौरवशाली विरासत से शुरू होगा और कार्यक्रम की अध्यक्षता पूर्व सांसद उदय प्रताप सिंह तथा निज़ामत प्रो. नय्यर जलालपुरी करेंगे .जश्न-ए-हिंदोस्तान में मशहूर मशहूर शायर और कवि उदय प्रताप सिंह, प्रो नय्यर जलालपुरी, अंजुम रहकर,ताहिरा फ़राज़ ,डॉ. कलीम क़ैसर ,डॉ माजिद देवबंदी ,अलताफ ज़िया , राधिका गुप्ता और दमदार बनारसी दुबई में भारत की शान और मान बढ़ाते हुये शिरकत करेंगे।

इस ऐतिहासिक वैश्विक आयोजन के संस्थापक सै सलाहुद्दीन ने कहा कि भारत के गौरवशाली लोकतंत्र और गणतंत्र का जश्न भारतीय भाषाओं और परंपरा का अनुकरणीय संवाहक है।

लोकतंत्र और संविधान को मजबूती से लागू कराना हमारा लक्ष्यः मनोज

चंदौली। कड़ाके की इस ठंड में समाजवादी पार्टी बुधवार को पिछड़ा, दलित व अल्पसंख्यकों के न्याय के लिए सक्रिय नजर आयी। जिलाध्यक्ष सत्यनरायन राजभर व सैयदराजा के पूर्व विधायक मनोज सिंह डब्लू ने राष्ट्रीय नेतृत्व के निर्देश पर जनपद में आयोजित होने पीडीए पखवारा को लेकर कमालपुर के बभनियांव पोखरे पर सैयदराजा विधानसभा के सेक्टर प्रभारियों संग बैठक की।

जिलाध्यक्ष सत्यनरायन राजभर ने सेक्टर प्रभारियों व अन्य पदाधिकारियों को पीडीए जन पंचायत को लेकर समाजवादी पार्टी की नीति-निर्देशों से अवगत कराया। साथ ही विधानसभा क्षेत्र में पीडीए पखवारा आयोजित करने की तिथियों पर मंत्रणा करते हुए पदाधिकारियों को उसे सफल बनाने का दायित्व सौंपा। इसके साथ ही सपाइयों ने पिछड़ों, दलितों व शोषितों के हक के लिए लड़ाई लड़ने वाले कर्पूरी ठाकुर को याद कर उन्हें श्रद्धांजलि दी।

इस दौरान सैयदराजा के पूर्व विधायक मनोज सिंह डब्लू ने कहा कि समाजवादी पार्टी 26 जनवरी से जनपद के सभी विधानसभा क्षेत्रों में पीडीए पखवारा आयोजित करने की दिशा में काम कर रही है। कहा कि वर्तमान भाजपा सरकार द्वारा दलित, पिछड़े, अल्पसंख्यकों एवं महिलाओं के ऊपर किए जा रहे पक्षपात, शोषण, उत्पीड़न तथा सामाजिक अन्याय के विरूद्ध पीडीए जन पंचायत के माध्यम से लोकतंत्र और संविधान को मजबूती से लागू कराना समाजवादी पार्टी का लक्ष्य है। इसके मद्देनजर गणतंत्र दिवस पर संविधान निर्माता बाबा साहब डा. भीमराव अम्बेडकर द्वारा निर्मित भारतीय संविधान में उल्लेखित सामाजिक न्याय की अवधारणा को सशक्त करने के लिए पीडीए जन पंचायतें कराई जाएगी।

बताया कि सैयदराजा विधानसभा क्षेत्र में 27 जनवरी को सीता पोखरी, 28 को सोनहुली, 29 को पिपरी, 30 जनौली, 31 को अवही, एक फरवरी शहीदगांव, दो फरवरी तुलसीआश्रम, तीन फरवरी को ककरैत, चार फरवरी को नेवादा, पांच फरवरी को अमड़ा, छह फरवरी धीना में पीडीए जन पंचायत का आयोजन होगा, जिसे सम्पन्न कराने हेतु जोन प्रभारी, सेक्टर प्रभारी, ब्लाक प्रभारी, नगर अध्यक्ष, विधान सभा अध्यक्ष आदि को साथ लेकर लोकसभा चुनाव का बिगुल फूंका जाएगा। इस अवसर पर विधानसभा प्रभारी मुन्नीलाल मौर्य, संतोष उपायाय, दयाराम यादव, नन्दकुमार राय, बृजेश गोंड, मैनेजर गोंड, राजनाथ बिंद आदि उपस्थित रहे।

टी 20 कप के नौवे दिन रांची रेलवे व धनबाद रेलवे रहा विजेता

संवाददाता। सोनभद्र

स्थानीय अम्बेडकर स्टेडियम में राज्यस्तरीय लेदर बाल क्रिकेट प्रतियोगिता के नौवे दिन का पहला मुकाबला लाल बादशाह रांची बनाम मास्टर क्लास नोएडा के बीच खेला गया, प्रतियोगिता के नौवे दिन के मुख्य अतिथि युवा समाजसेवी भाजपा नेता विपिन पासवान रहे, जिन्होंने खिलाड़ियों से परिचय प्राप्त किया, और खेल प्रारम्भ किया, राँची रेलवे ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करने का निर्णय लिया, नोएडा को पहले गेंदबाजी करने के लिए आमंत्रण किया, रांची ने निर्धारित 15 वे ओवर के मुकाबले में सारे विकट खोकर 129 रनों का लक्ष्य रखा।

रांची रेलवे के सबसे सफल बल्लेबाज कुमार शांतनु रहे, जिन्होंने 26 गेंद में 33 रन बनाए जवाब मे उतरी नोएडा की टीम 12.3 ओवर में 65 रनों पर ढेर हो गयी। मैच कें मैन ऑफ मैच रांची रेलवे के राजा रहें दूसरा मुकाबला धनबाद रेलवे बनाम मुगलसराय रेलवे के बीच खेला गया, मुगलसराय ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करने का निर्णय लिया, पहले बल्लेबाजी करते हुए निर्धारित 16 ओवर के मैच में मुगलसराय ने 7 विकेट गवा कर 96 रनों के लक्ष्य रखा, मुगलसराय के सबसे सफल बल्लेबाज दिलीप यादव रहे जिन्होंने 15 गेंद पर 28 रनों की आतिशी पारी खेली, जवाब में उतरी धनबाद रेलवे की टीम 10 ओवर में आसानी से मात्र 1 विकेट गवा कर लक्ष्य का पीछा कर लिया। मैच कें मैन आफ द मैच धनबाद रेलवे के आशुतोष मिश्रा रहे।

निर्णायक रोशन सिंह व प्रदीप शर्मा रहे, स्कोरर की भूमिका में अक्षय बंगाली रहे। उद्घोषक के रूप में आयोजन संचालक संकट मोचन झा रहे। आयोजन में मुख्य रूप से आयोजन अध्यक्ष रमेश कुमार सिंह धुरन्धर शर्मा बृजेश पांडेय नीरज भाटिया पवन यादव सुशील सिंह प्रदीप शर्मा धर्मेंद्र सिंह नन्हें आलोक कुमार सिंह पुनीत पांडेय अदित्यप्रताप सिंह राम निवास तोमर दसरथ शुक्ला पंकज गौतम राजकुमार संघर्षी बृजेश शर्मा राजकिशोर सुशील कुशवाहा अमित अग्रवाल राजू यादव कलीम खान अरविंद यादव सोनू राय बृजेश शर्मा सूरज मिश्रा अक्षय पटेल सुनील मिश्रा रीतू राय सूर्यप्रकाश चौरसिया सहित सैकड़ों खेल प्रेमी उपस्थित रहे।

क्रिकेट प्रतियोगिता में युवा क्रिकेट क्लब का रहा दबदबा

बीजपुर, सोनभद्र। ग्राम पंचायत पिंडारी के खेल मैदान में चल रही क्रिकेट प्रतियोगिता में मंगलवार की शाम 15 ओवर के फाइनल मैच में क्रिकेट क्लब सेवकामोड़ व युवा क्रिकेट क्लब बूड़ा के बीच रोमांचक मुकाबले में युवा क्रिकेट क्लब बूड़ा के खिलाड़ियों ने मारी बाजी। फाइनल मैच में सेवकामोड़ की टीम ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी की। जिसमें युवा खिलाड़ी मुकेश के 29 रन व लॉर्ड्स विश्वकर्मा व आकाश के 25-25 रन के योगदान से 7 विकेट गवां कर टीम ने 149 रनों का लक्ष्य बूड़ा की टीम के सामने खड़ा कर दिया। जबाब में युवा क्रिकेट क्लब बूड़ा के कप्तान रमेश ने 49 रन व उप कप्तान शुभम ने 42 की आतिशी पारी खेल 11 ओवर में ही 5 विकेट से मैच अपनी टीम के नाम कर दिया। प्लेयर आफद मैच शुभम व प्लेयर आफद टूर्नामेंट लॉर्ड्स विश्वकर्मा के नाम रहा। विजेता व उपविजेता टीम को नकद पुरस्कार के साथ साथ ट्राफी भी दी गयी। मैच के दौरान उदघोषक की भूमिका धनंजय शर्मा ने संभाली। पुरस्कार वितरण के दौरान पिंडारी ग्राम प्रधान रामसंजीवन भारती आयोजक श्याम सुंदर जायसवाल अध्यक्ष प्रदीप जायसवाल उपाध्यक्ष परवीन जायसवाल सहित काफी संख्या में दर्शकगण उपस्थित थे।

स्पर्श कुष्ठ रोग अभियान महात्मा गांधी की पुण्यतिथि से होगा प्रारंभ

मीरज़ापुर। जनपद में महात्मा गांधी के पुण्यतिथि पर कुष्ठ रोग पखवाड़ा शुरू किया जायेगा। 13 फरवरी तक चलने वाले इस अभियान के दौरान कुष्ठ रोग विभाग की टीम कुष्ठ रोगियों की पहचान करेगी। साथ ही लोगों को इस बीमारी के प्रति जागरूक करेगी। इस आशय की जानकारी बुधवार को मुख्य चिकित्साधिकारी कार्यालय स्थिति विवेकानन्द सभागार आयोजित बैठक में मुख्य चिकित्साधिकारी डॉक्टर छोटे लाल वर्मा ने दी। जिला कुष्ठ रोग अधिकारी डॉक्टर राजकिशोर ने बताया कि जिले में कुष्ठ रोगियों को खोजने का अभियान 30 जनवरी से लेकर 13 फरवरी तक किया जायेगा।

कुष्ठ रोगियों का ईलाज मंडलीय चिकित्सालय के अलावा जनपद के सभी 19 सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र 55 प्राथमिक स्वास्थ्य के अलावा 326 हेल्थ सबसेंटरों पर ईलाज व दवाइयों की भी नि:शुल्क व्यवस्था है। अभियान के दौरान घरण्घर आशा व एएनएम रोगियों को चिन्हित करने का कार्य करेगी। इसके अलावा विभाग वर्ष 2023 में 76 मरीजों को चिन्हित करने का कार्य किया गया। उसमें से 76 मरीजों का इलाज सफलता पूर्वक किया गया। दिव्यांग होने की स्थिति 21 लोगो को अब विकलांग प्रमाण पत्र 292 लोगो को देने का कार्य किया जा चुका है। 61 मरीजों को सेल्फकेयर किट भी दिया गया है साथ ही साथ यह अभियान महात्मा गांधी के पुण्यतिथि से चलाया जायेगा। इसलिए अभियान प्रारम्भ होने के दिन जिले के तमाम स्कूलों में कार्यक्रमों व रैली को आयोजित करने का कार्य किया जायेगा।

जिसमें उपस्थित लोगो को उनके द्वारा उपयोग की जाने वाली वस्तुओं जैसे खादी की धोती, गोल फ्रेम का चश्मा को पहनकर महात्मा गांधी द्वारा कुष्ठ रोग में दिए गए योगदान को विस्तारपूर्वक बताने का भी कार्य किया जायेगा। इस अवसर पर जिला कुष्ठ अधिकारी ने बताया कि कुष्ठ रोग में शरीर की चमड़ी पर हलके पीले अथवा ताम्बे के रंग का सुन्नए दाग या चकत्ता होता है।

बालिकाओं के अधिकारों और कल्याण को बढ़ावा देना प्राथमिक उद्देश्य

प्रयागराज। देश में हर साल 24 जनवरी को राष्ट्रीय बालिका दिवस मनाया जाता है। जिसका उद्देश्य बालिकाओं के अधिकारों व कल्याण को बढ़ावा देना है। यह खास दिन देश में लड़कियों के सामने आने वाली सामाजिक आर्थिक और सांस्कृतिक चुनौतियों की प्रतिक्रिया के रूप में उभरा। यह दिन लैंगिक भेदभाव कन्या भ्रूण हत्या और लड़कियों के लिए अपर्याप्त शिक्षा और स्वास्थ्य जैसे मुद्दों को उजागर करने के उद्देश्य से मनाया जाता है। इस बारे में बात करते हुए प्यार का पहला नाम राधा मोहन से निहारिका रॉय उर्फ राधा भाग्य लक्ष्मी से ऐश्वर्या खरे उर्फ लक्ष्मी कुंडली भाग्य से सना सैय्यद उर्फ पल्की और कुमकुम भाग्य से राची शर्मा उर्फ पूर्वी जैसे जी टीवी के कलाकारों ने बताया कि कैसे इस बारे में सार्वजनिक जागरूकता लाकर इस तरह के भेदभाव प्रभावी रूप से खत्म किए जाने चाहिए।

शीत लहर

अनेक समस्यायें

उत्तर भारत में लंबे समय से जारी शीत लहर अनेक समस्याओं का कारण बन रही है जिनमें स्वास्थ्य मुद्दे तथा ट्रैफिक समस्यायें शामिल हैं। उत्तर भारत पहले से ही विस्तारित शीत लहर का सामना कर रहा है। ऐसे में भारतीय मौसम विभाग-आईएमडी ने 'यलो एलर्ट' जारी कर पंजाब, हरियाणा, चंडीगढ़, उत्तर प्रदेश, राजस्थान और मध्य प्रदेश में अगले पांच दिनों तक घने से बहुत घने कुहरे का पूर्वानुमान लगाया है। वर्तमान समय में मौसम की पहचान कम तापमान तथा कम दृश्यता से परिभाषित होती है। इससे पहले से ही खराब स्वास्थ्य का सामना कर रहे लोगों के प्रति चिन्ता बढ़ गई है। आईएमडी के अनुसार, शीत लहर की स्थितियां हिमाचल प्रदेश, राजस्थान, हिमालयी पश्चिमी बंगाल, सिक्किम, पंजाब और हरियाणा में बनी हुई हैं। दिल्ली के सफदरगंज हवाईअड्डा क्षेत्र में सवेरे 5.30 बजे दृश्यता केवल 500 मीटर थी, जबकि इंदिरा गांधी इंटरनेशनल एयरपोर्ट पर 6.30 बजे सवेरे दृश्यता 1,000 मीटर थी। ये स्थितियां यात्रियों तथा दैनिक गतिविधियों के लिए भारी चुनौती पेश करती हैं। हाल के दिनों में दिल्ली में छाए घने कुहरे ने न केवल पूरे शहर में पर्यावरण को खराब किया है, बल्कि इससे परिवहन गतिविधियां भी प्रभावित हुई हैं। घने कुहरे से पैदा कम दृश्यता के कारण इंदिरा गांधी इंटरनेशनल एयरपोर्ट पर अनेक उड़ानों में विलंब हुआ जिसका प्रभाव अनेक लोगों की घरेलू व अंतरराष्ट्रीय यात्रा पर पड़ा है। हवाईअड्डा अधिकारियों को सावधानी के उपाय करने पर मजबूर होना पड़ा है जिनमें यात्रियों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए विमानों के उड़ने व उतरने में विलंब शामिल है। इसी प्रकार ट्रेनों का आवागमन भी बुरी तरह प्रभावित हुआ है। घने कुहरे के कारण रेल पटरियों पर दृश्यता कम होने से अनेक ट्रेन सेवाओं में विलंब हुआ है।

लगातार जारी शीत लहर ने खासकर कार्डियोवैस्कुलर बीमारियों से ग्रस्त लोगों के लिए चिन्ता पैदा कर दी है। तापमान घटने से रक्तवाहिकायें सिकुड़ जाती हैं जिससे रक्तचाप तथा दिल धड़कने की दर बढ़ जाती है। ऐसे रोगियों के लिए जाड़े के मौसम में दिल का दौरा पड़ने का खतरा भी बढ़ जाता है। घने कुहरे और कम दृश्यता के कारण आपातकालीन सहायता व्यवस्थायें भी बाधित हो सकती हैं, ऐसे में रोगियों को समय पर चिकित्सा सहायता देना भी चुनौती बन जाती है। कुहरे की स्थितियों में एबुलेंस सेवाओं में खासकर कठिनाई आ सकती है जिससे गंभीर रोगियों की सहायता करने में विलंब हो सकता है। राजधानी में नमी का स्तर 55-95 प्रतिशत के बीच है। इसके साथ ही वायु गुणवत्ता सूचकांक-एक्यूआई 333 पर है जो 'बहुत खराब' श्रेणी में आता है जिससे स्वास्थ्य चिन्तायें और गहरी हो गई हैं। हवा की खराब गुणवत्ता से श्वसन समस्यायें और गंभीर हो सकती हैं। इसका प्रभाव न केवल हृदय रोगियों, बल्कि पहले से श्वसन तंत्र में समस्याओं का सामना कर रहे लोगों पर पड़ता है। इन चुनौतीपूर्ण स्थितियों को देखते हुए रोगियों को अतिरिक्त सावधानियां बरतने की सलाह दी जाती है। उनको खासकर जल्दी सवेरे या देर शाम को आउटडोर गतिविधियों से बचना चाहिए जब तापमान कम होता है, गरमी बनाए रखने के लिए कई पर्तों में कपड़े पहनने चाहिए तथा टोपी व दस्तानों का प्रयोग करना चाहिए। आम जनता तथा स्वास्थ्यरक्षा प्रदाताओं को सतर्क रहने, निरोधक उपाय करने तथा समय पर लोगों की चिकित्सा सहायता करने की आवश्यकता है। इस प्रकार सतर्कता से ही चुनौतीपूर्ण मौसम स्थितियों का सामना किया जा सकता है।

कांग्रेस में आंतरिक उथलपुथल

2024 में चुनाव जीतने के लिए राहुल गांधी को अपनी रणनीति की समीक्षा कर सही लोगों को काम पर लगाना होगा तथा हर राज्य में मजबूत नेताओं को तैयार करना होगा।

कल्याणी शंकर
(लेखिका, वरिष्ठ पत्रकार हैं)

कांग्रेस में नीतियों व रणनीतियों के बारे में आंतरिक असहमति है। इसके कारण पार्टी में आंतरिक मतभेद व उथलपुथल की स्थिति है। ऐसी स्थिति में 2024 में चुनाव जीतने के लिए राहुल गांधी को अपनी रणनीति की समीक्षा कर सही लोगों को काम पर लगाना होगा तथा हर राज्य में मजबूत नेताओं को तैयार करना होगा। ऐसे में यह सवाल भी है कि क्या कांग्रेस नेता राहुल गांधी के फैसलों की समीक्षा हो रही है? कांग्रेस में आंतरिक अशांति को देखते हुए अनेक राजनीतिक विश्लेषकों तथा आलोचकों को लगता है कि कहीं कुछ नेताओं ने आखिरकार राहुल गांधी तथा कांग्रेस को धोखा तो नहीं दे दिया है। हाल ही में पूर्व मंत्री मिलिंद देवड़ा के इस्तीफे से राहुल गांधी के अत्यन्त निकट रहने वाले नेताओं की संख्या और घटी है। अब केवल कुछ ही चुने हुए सहायक ऐसे बचे हैं जिनको राहुल गांधी का निकटस्थ और उनका स्वामिभक्त कहा जा सकता है। यह तथ्य भी उल्लेखनीय है कि भाजपा ने राहुल गांधी के ऐसे अनेक निकटस्थ सहायकों का अपनी पार्टी में स्वागत किया है।

राहुल गांधी के इन पूर्व सहायकों और निकटस्थ लोगों ने कुछ और नेताओं को पार्टी छोड़ने के लिए प्रेरित किया है। अनेक राजनीतिक विश्लेषक सवाल उठा रहे हैं कि आखिरकार राहुल गांधी के मित्र दूसरी राजनीतिक पार्टियों में हाल में क्यों शामिल हुए हैं? इसका सीधा जवाब है कि एक समय राहुल गांधी के बहुत नजदीकी रहे अनेक प्रभावशाली नेता कांग्रेस पार्टी तथा उसके नेताओं की कार्यशैली से निराश हो गए थे। उनको कांग्रेस में अपना भविष्य नहीं नजर आ रहा था और इसी कारण उन्होंने पार्टी छोड़ दी।

यह याद रखना जरूरी है कि किसी नेता की सफलता के लिए बुद्धिमान सलाहकार बहुत महत्वपूर्ण होते हैं। पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी तथा उनके पुत्र राहुल गांधी को लगभग एक जैसे राजनीतिक और व्यक्तिगत अनुभव हुए। दोनों नेताओं ने बड़े जोरशोर से राजनीति में कदम रखे थे। लेकिन राजीव गांधी की राजनीतिक शिक्षा काम करते हुए अनुभव प्राप्त करने की थी। राजनीति में प्रवेश करने के चार साल बाद राजीव गांधी कुछ असाधारण परिस्थितियों के कारण देश के प्रधानमंत्री बने। तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी की निर्मम हत्या के बाद उनको कांग्रेस ने प्रधानमंत्री बनाया था। लेकिन सत्ता में आने के पहले ही राजीव गांधी ने अपने राजनीतिक सबक मेहनत से सीखे थे। विडंबना है कि राहुल गांधी अभी राजनीतिक सबक सीख रहे हैं। 1989 में राजनीतिक विरोधियों ने नकारात्मक अभियान के माध्यम से राजीव गांधी पर निशाना लगाया जिसके परिणामस्वरूप उनका राजनीतिक पतन हुआ। उस समय राजीव टीम के अनेक उल्लेखनीय लोगों ने उनका साथ छोड़ा था जिनमें अरुण नेहरू, अरुण सिंह, वीपी सिंह और अमिताभ बच्चन शामिल हैं। राजीव गांधी के विश्वसनीय मित्र दून स्कूल से थे जिनको सामूहिक रूप से 'डोस्को टीम' कहा जाता था। राहुल गांधी की टीम में कई 'छवि निर्माण' करने वाले लोग शामिल हैं जो बहुत परिश्रम कर एक सक्षम नेता के रूप में उनकी छवि बनाने का प्रयास कर रहे हैं।

राहुल गांधी को इस बात का श्रेय दिया जा रहा है कि उनके पास धर्म, जाति और अर्थव्यवस्था संबंधी मुद्दों के रचनात्मक समाधान मौजूद हैं और ये सारे समाधान मिल कर भारत को प्रगति की ओर ले जा सकते हैं। लेकिन भाजपा राहुल गांधी को ऐसे नेता के रूप में पेश करने का प्रयास कर रही है जो अक्षम हैं, वंश-परिवार के आधार पर नेता बने हैं, उचित दृष्टिकोण से वंचित हैं और देश को समृद्धि की ओर नहीं ले जा सकते हैं। भाजपा के नेता अक्सर राहुल गांधी का मजाक उड़ाते हुए उनको 'पप्पू' कहते हैं, जिससे उनके प्रति नकारात्मक सोच और मजबूत होती है। लगातार चुनावी पराजयों से निराश राहुल के अधिकांश निकटस्थ मित्र बेहतर संभावनाओं की तलाश में उनको छोड़ कर चले गए हैं।

राहुल गांधी के निकटस्थ युवा नेता पार्टी में वरिष्ठ नेताओं का स्थान लेने की जल्दबाजी में थे। विडंबना है कि राहुल द्वारा चुनी युवा नेताओं की टीम के अनेक लोग सत्ता का लाभ उठाने के बाद उनको छोड़ कर चले गए। इसका उदाहरण ज्योतिरादित्य सिंधिया हैं जो राहुल गांधी के नजदीकी दोस्त भी थे। 2018 के विधानसभा चुनाव के बाद जब कांग्रेस नेतृत्व ने उनको मध्य प्रदेश का मुख्यमंत्री नहीं बनाया तो वे निराश हो गए। इस कारण उन्होंने मध्य प्रदेश सरकार उलटने में प्रमुख भूमिका निभाई और आखिरकार वे दो साल बाद मध्य प्रदेश में भाजपा सरकार बनाने में सफल हुए। ज्योतिरादित्य सिंधिया को इस समर्थन के बदले केन्द्र में मंत्री बनाया गया। कुछ समय पहले जितिन प्रसाद उत्तर प्रदेश में योगी आदित्यनाथ की सरकार में शामिल हो गए। इसी के साथ ही कपिल सिब्बल, अल्पेश ठाकुर और आरपीएन सिंह भी दूसरी पार्टियों में चले गए। इससे भी अधिक महत्वपूर्ण है कि राहुल गांधी के नेतृत्व से असंतुष्ट हो कर गुलाम नबी आजाद ने भी कांग्रेस से अपने रिश्ते तोड़ लिए। पंजाब मे कैप्टेन अमरिंदर सिंह ने कांग्रेस छोड़ कर नई पार्टी बना ली। एक और प्रमुख नेता सुनील जाखड़ ने भी कांग्रेस छोड़ दी।

2019 के आम चुनाव में पार्टी की पराजय के बाद 23 नेताओं ने कांग्रेस पार्टी नेतृत्व को चुनौती दी थी। राहुल गांधी के निकटस्थ कुछ लोगों की विदाई से पार्टी में असंतोष बढ़ रहा है। राहुल गांधी ने पहले इन लोगों को मनमोहन सिंह सरकार में मंत्रियों के रूप में प्रोत्साहित किया था। बाद में उनको पार्टी में उच्च पद दिए गए। इनमें से कुछ को कांग्रेस कार्यसमिति में भी स्थान मिला, जबकि आमतौर से इसमें वरिष्ठ नेताओं को ही शामिल किया जाता है। कांग्रेस को 2014 और 2019 के आम चुनावों में हार का सामना करना पड़ा और 2024 के आम चुनाव में उसे ज्यादा से ज्यादा 100 सीटें मिल सकती हैं। अपने भविष्य की चिन्ता के कारण वे अब सत्ता से बाहर और पांच साल रहने को तैयार नहीं हैं। ऐसे में राहुल गांधी के निकटस्थ नेताओं ने दूसरे विकल्प तलाशने शुरू कर दिए हैं।

भाजपा द्वारा आकर्षक प्रस्ताव मिलने के कारण ऐसे नेता निराश नहीं हैं। हालांकि, राजीव गांधी और राहुल गांधी ने समान राजनीतिक और व्यक्तिगत अनुभवों का साझा कर राजनीति में अच्छी शुरुआत की थी, पर राजीव गांधी ने काम के दौरान सीखा था। त्रासद परिस्थितियों में राजनीति में आने के चार साल बाद राजीव गांधी प्रधानमंत्री बने। राजीव गांधी ने सत्ता से बाहर रहते हुए राजनीतिक सबक मेहनत से सीखे। हालांकि, अपने भ्रमित सलाहकारों तथा राजनीतिक अनुभवहीनता के कारण राजीव गांधी के अच्छे इरादे ध्वस्त हो गए। श्रीलंका शांति समझौते की विफलता तथा आईपीकेएफ भेजने का फैसला विनाशकारी था। इसके परिणामस्वरूप तमिलनाडु में उनकी हत्या कर दी गई। पिछले 20 वर्षों में राहुल गांधी की और अच्छी प्रगति हो सकती थी। उनको महत्वपूर्ण पदों का प्रस्ताव दिया गया, लेकिन उन्होंने इनको स्वीकार नहीं किया। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिार्जुन खड़गे के केवल प्रतीक होने तथा माता सोनिया गांधी के ज्यादा सक्रिय न होने के कारण राहुल गांधी का कांग्रेस के महत्वपूर्ण पदों पर नियुक्ति के मामले में पूर्ण नियंत्रण है।

ऐसे में 2024 का आम चुनाव जीतने के लिए राहुल गांधी को अपनी रणनीति की समीक्षा करनी चाहिए तथा सही लोगों को सही स्थानों पर रख कर हर राज्य में मजबूत नेता तैयार करने चाहिए। उनकी वर्तमान 'भारत जोड़ो न्याय यात्रा' पहले की गई 'भारत जोड़ो यात्रा' की तरह मतदाताओं से जुड़ने का महत्वपूर्ण माध्यम बन गई है। ऐसे में राहुल गांधी और कांग्रेस के लिए सर्वाधिक महत्वपूर्ण काम चुनाव बूथों पर अपने मतदाताओं को लाना होगा।

राहुल गांधी को अपने अतीत के अनुभवों से सीखते हुए फौरन आवश्यक कदम उठाने चाहिए। उनको कांग्रेस कार्यकर्ताओं तथा गठबंधन सहयोगियों का विश्वास प्राप्त करने का प्रयास करना चाहिए। सर्वाधिक महत्वपूर्ण रूप से उनको एक प्रभावी और नया राजनीतिक विमर्श तैयार करना चाहिए।

मनुष्यों की सीमायें

> मनुष्य चाहे जितना स्मार्ट बन जाएं, वे ईश्वर नहीं बन सकते हैं।

ब्रह्मकुमार निकुंज
(लेखक, आध्यात्मिक शिक्षक हैं)

कुछ साल पहले एक फिल्म आई थी जिसमें मुख्य चरित्र अक्सर ईश्वर को अपनी पीड़ा के लिए ईश्वर को दोष देता रहता था। एक दिन भगवान उसके सामने आए और 24 घंटे के लिए उसे अपने पद पर बैठा कर अपनी सभी सर्वोच्च शक्तियां उसे देने का प्रस्ताव किया। ईश्वर बनने का अवसर प्राप्त करने वाला मनुष्य इससे बहुत प्रसन्न हुआ और उसने फौरन यह प्रस्ताव स्वीकार कर लिया।

लेकिन उसे यह अनुभव कर बहुत आश्चर्य हुआ कि वह सर्व-शक्तिमान की जैसी कल्पना करता था या उनके बारे में जैसा सोचता था, वैसा वास्तव में नहीं था। वास्तव में 24 घंटे के लिए 'ईश्वर' बनने पर उसे बहुत बड़ी संख्या में संदेश व ईमेल मिले जो शिकायतों, घृणा और नकारात्मक चीजों से भरे थे। आखिरकार उसे समझ में आ गया कि सर्व-शक्तिमान के लिए मनुष्यों को सहन करना कितना कठिन होता है और अंततः उसने ईश्वर की इच्छा के समक्ष आत्मसमर्पण कर दिया।

इस कहानी से सबक मिलता है कि 'मनुष्य कभी ईश्वर नहीं बन सकता है', भले ही वह चाहे जितना स्मार्ट क्यों न हो। इसका अर्थ है कि मनुष्यों की अपनी सीमायें होती हैं और वे उनका उल्लंघन नहीं कर सकते हैं। यदि हम अपने भीतर तथा अपने चारों ओर बहुत गहराई से देखें तो हमें वास्तविकता का आभास हो जाएगा। लगभग हम सभी लोग लगातार ईश्वर से शिकायतें कर या उससे लेनदेन की भावना से व्यवहार कर ईश्वर को परेशान करते रहते हैं। उदाहरण के लिए, हम पूरे समय लगातार अपनी स्थितियों के बारे में शिकायतें करते रहते हैं या दुःखी होते रहते हैं। हमारी शिकायतें अपने अस्तित्व, अपने परिवार,

अपने कार्यालय, अपने काम, आदि के बारे में होती हैं और यह सूची लगातार बढ़ती जाती है। हम हमेशा ईश्वर से लेनदेन जैसा व्यवहार करते हैं। हम सोचते रहते हैं कि यदि ईश्वर हमारी इच्छा पूरी कर दे तो हम यह करेंगे और यदि वह इच्छा पूरी न करे तो फिर वह करेंगे। ईश्वर के प्रति व्यवहार में हमारी बेशर्मी भी सामने आती है। कुछ लोग अपना वादा पूरा न करने को बहुत हल्के में लेते हुए कहेंगे 'ऐसा नहीं किया तो क्या हुआ? आखिर मनुष्य अपने किए वादे भूल सकता है।' बहुत से लोग तो भूलने के लिए ही वादे करते हैं। लेकिन यदि कोई व्यक्ति हमें धोखा दे और हमें मंझधार में छोड़ दे तो कैसा लगेगा? क्या हम ऐसी स्थिति में भी अपने साथ धोखा करने वाले को माफ कर देंगे? यदि ईश्वर मनुष्यों द्वारा किए वादे तोड़ने का हिसाब लगाने लगे तो क्या होगा। यह सूची कभी समाप्त नहीं होगी क्योंकि हम सभी ईश्वर से किए वादे तोड़ने में विशेषज्ञ हैं और उनकी जरा भी चिन्ता नहीं करते हैं। निश्चित रूप से हम में से अधिकांश लोग ईश्वर से किए वादे कभी पूरे नहीं करते हैं। लेकिन क्या इससे हम और ज्यादा स्वार्थी नहीं होते जाते हैं?

इसके साथ ही यह महत्वपूर्ण सवाल उठता है कि ऐसी चीजों के बारे में क्या कहा जा सकता है जो ईश्वर को इतना निस्वार्थी और दयालु बनाती हैं? इसका जवाब असीमित रूप से 'हां' है। हम मनुष्य अपने विचारों और कार्यों में बहुत सीमित होते हैं, पर सर्वशक्तिमान ईश्वर जो 'प्रेम का समुद्र' तथा 'असीमित संसाधनों' वाला है, हमारी कमियों के बावजूद हम पर अपने बच्चों की तरह प्रेम, सद्भावना और आर्शीवाद बरसाता रहता है। हालांकि, ईश्वर अच्छी तरह समझता है कि हम मनुष्य उससे धोखाधड़ी के सारे प्रयास करते हैं, लेकिन अपनी तमाम घोखाधड़ी और विश्वासघात के बावजूद वह 'अनजान' बना रहता है और हमें अपना अस्तित्व तथा आत्मविश्वास बनाए रखने के लगातार नए अवसर देता रहता है।

ऐसा ईश्वर हमें कहां मिल सकता है? अपने चारों ओर देख कर तय करें कि क्या कोई ईश्वर जैसा है? हमें कोई व्यक्ति इतना उदार नहीं मिलेगा। मनुष्यों में ईश्वर तलाश करना बहुत असंभव है क्योंकि मनुष्य हमेशा अपने निजी हितों से बंधे रहते हैं, जबकि सर्वशक्तिमान ईश्वर हमेशा अपने प्यारे बच्चों के हितों की चिन्ता करता है। हम अपने ऊपर दूसरों की धोखाधड़ी, चालबाजी और लालच का भारी बोझ लादे रहते हैं, जबकि ईश्वर हमेशा प्रत्येक पापी को देख कर उसे सुधारने तथा उसका आत्मविश्वास बहाल करने का प्रयास करता रहता है। ईश्वर के बारे में बहुत सी अच्छी चीजें पढ़ने और जानने के बाद क्या यह इच्छा नहीं होती है कि ईश्वर बनना कितना आनन्ददायक होगा? हमें ऐसा करने का प्रयास करना चाहिए, यदि यह एक दिन के लिए संभव न हो तो एक घंटे या कुछ मिनटों के लिए ही सही। हमें ऐसा करने का प्रयास जरूर करना चाहिए।

आप की बात

राम की महिमा

भले ही विपक्ष राजनीतिक बहाने बनाकर राम मंदिर में प्राण प्रतिष्ठा समारोह से दूर रहा किन्तु वो जहाँ भी रहा किसी न किसी मंदिर के द्वार पहुंचा, फिर चाहे वह देवी दर्शन या आरती में शामिल हुआ अथवा रामायण का पाठ किया। कुछ ऐसे भी विपक्षी रहे जो राम की मूरत को अपने मन में जरूर समेटे रहे किन्तु मुख से कुछ बोल न पाए। ऐसे भी नेता रहे जो जहाँ थे वे वहीं मंदिर में दर्शन करने जाना चाहते थे किन्तु जा नहीं पाए, धरना देकर बाहर बैठ गए और साथ ही वहां की सरकार पर आरोप लगते हुए प्रदर्शन समाप्त कर आगे बढ़ गए। विपक्षी नेताओं के इन करतबों और कारनामों से राम की महिमा प्रकट हुई। राम मंदिर में बालस्वरूप राम की लीला पूरे देश में ही नहीं बल्कि सारे संसार में अपरम्पार रही। इसने अमिट स्वर्ण इतिहास तो रचा ही, अनंतकाल तक अमर रहने का भविष्य भी रच डाला। इस प्रकार विपक्ष ने अयोध्या में राम मंदिर की प्राण प्रतिष्ठा का विरोध करते हुए भी स्वयं को हिंदू व रामभक्त सिद्ध करने का प्रयास किया। लेकिन कड़ाके की ठंड में अयोध्या में एकत्र भक्तों का समूह लगभग पूर्ण बहुमत से मंदिर बनाने का श्रेय प्रधानमंत्री मोदी को दे रहा है। इनमें से अधिकांश स्वाभाविक रूप से भाजपा को ही वोट देंगे। इस प्रकार विपक्ष ने अपने ही पैरों पर कुल्हाड़ी मार ली है।

– **शकुंतला महेश नेनावा,** इंदौर

सीमा पर बाड़बंदी

भारत-म्यांमार सीमा पर बाड़बंदी करने का सरकार का विचार म्यांमार में चल रहे गृहयुद्ध के कारण वहां से आ रहे शरणार्थियों को रोकने के लिए अत्यावश्यक है। इसे शीघ्रता से लागू किया जाना चाहिए। म्यांमार से मिजोरम और आसपास के प्रदेशों में 30,000 से अधिक शरणार्थी आ चुके हैं और उनका निर्बाध रूप से आना जारी हैं। अब तक भारत म्यांमार के बीच आम जनता के लिए आवागमन पर प्रतिबंध नहीं था और वे 16 किलोमीटर के क्षेत्र में कामकाज के लिए आ सकते थे। लेकिन म्यांमार में जारी अशांति तथा गृहयुद्ध के कारण बड़ी संख्या में शरणार्थियों के साथ भगोड़े सैनिक या हथियारबंद विद्रोही भी भारत आ जाते हैं। इसके अलावा भारत-म्यांमार सीमा स्मगलरों, वन्यजीव तस्करों, हथियार तस्करों, आतंकवादियों व उग्रवादियों के आवागमन का माध्यम बन गई है। इनसे भारत की सुरक्षा को खतरा है। अनेक शरणार्थी भार में आकर फर्जी आधार कार्ड व अन्य दस्तावेज बनवा कर खुद को भारत का नागरिक सिद्ध करने का प्रयास करते हैं। भारत में अनेक भ्रष्टाचारी और निहित स्वार्थी तत्व उनकी सहायता करते हैं। ऐसे में सीमा पर बाड़बंदी जरूरी हो गई है, लेकिन विडंबना है कि एक राज्य के मुख्यमंत्री इसका विरोध कर रहे हैं।

– **सुभाष बुड़ावन वाला,** रतलाम

विपक्षी गठबंधन

सपा ने लोकसभा की 80 सीटों में से 7 सीटों पर राष्ट्रीय लोकदल के साथ समझौता कर विपक्षी गठबंन- इंडिया की एक तरह से नीव दिला दी है। उसने यह दिखाने का प्रयास किया है कि उत्तर प्रदेश में इंडिया गठबंधन में सपा के वर्चस्व को चुनौती नहीं दी जा सकती है। लगता है कि अखिलेश यादव जल्दबाजी में पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी के रास्ते पर चल रहे हैं। इसे कांग्रेस पर दबाव बनाने की चाल भी कहा जा सकता है। कांग्रेस भले ही उत्तर प्रदेश में कमजोर हो, लेकिन उसका राष्ट्रव्यापी स्वरूप और कई राज्यों में सरकार है। बसपा सुप्रीमो मायावती ने स्पष्ट कर दिया है कि उनकी पार्टी अकेले चुनाव लड़ेगी। 2019 में बसपा को करीब 20 प्रतिशत वोट मिला था और उसके 10 उम्मीदवार चुनाव जीते थे। पश्चिमी उत्तर प्रदेश में बसपा का मजबूत जनाधार है और यहां उसका दलित-मुस्लिम समीकरण प्रभावी हो सकता है। इस प्रकार उत्तर प्रदेश में कम से कम त्रिकोणीय व कई सीटों पर बहुकोणीय संघर्ष निश्चित है। ऐसे में यदि भाजपा 73 सीट पाने का प्रदर्शन न दुहरा सके तो भी उसकी संख्या 62 से होगी, वैसे उसने अपने सामने 80 सीटों का लक्ष्य रखा है। यह विपक्ष को तगड़ा धक्का होगा।

– **वीरेंद्र कुमार जाटव,** दिल्ली

भलाई करने वाले

पिछले दिनों यूनिवर्सिटी ऑफनार्थ कैरोलिना में हुए एक अध्ययन में पता चला है कि भलाई करने वाले लोग ज्यादा खुश रहते हैं। इस अध्ययन में वैज्ञानिकों ने सकारात्मक मनोवैज्ञानिक प्रभावों और इसके मानव जींस पर होने वाले परिणामों का अध्ययन किया। इस शोध में यह बात सामने आई कि लोगों की भलाई करने से शरीर की प्रतिरक्षा प्रणाली सुधरती है और रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है। इससे मनुष्य स्वस्थ रहता है। लोगों की भलाई करने से मनुष्य के जींस तक पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। शोधकर्ताओं ने इस अध्ययन की पुष्टि के लिए डर, घबराहट, नकारात्मक मानसिक अवस्था, आदि का मानव शरीर व जींस पर भी अध्ययन किया। पहले भी कई शोधों से यह प्रमाणित हो चुका है कि डर, घबराहट, आदि से जींस पर खराब असर पड़ता है। प्रोफेसर स्टीवन कोल के अनुसार भलाई करने वाले लोगों की रोग प्रतिरोधक क्षमता अच्छी होने के कारण उनका शरीर मौसमी तथा अन्य प्रकार की बीमारियों से अच्छी तरह निपट लेता है। इसका अर्थ है कि अपने और अपने बच्चों के स्वास्थ्य के लिए लोगों की भलाई करनी चाहिए।

– **विभूति बुपक्या,** खाचरोद

पाठक अपनी प्रतिक्रिया ई-मेल से responsemail.hindipioneer@gmail.com पर भी भेज सकते हैं।

जिलाधिकारी और अध्यक्ष ने यूपी दिवस का किया शुभारंभ

● जन कल्याणकारी योजनाओं से संबंधित स्टालों का किया अवलोकन

संवाददाता। अमेठी

आज जिला पंचायत रिसोर्स सेंटर गौरीगंज के प्रांगण में उत्तर प्रदेश दिवस-2024 का भव्य आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ जिला पंचायत अध्यक्ष राजेश अग्रहरि व जिलाधिकारी राकेश कुमार मिश्र ने फीता काटकर व दीप प्रज्वलित कर किया। इसके उपरांत जिला पंचायत अध्यक्ष, जिलाधिकारी, मुख्य विकास अधिकारी सूरज पटेल सहित अन्य अधिकारियों के साथ विभिन्न विभागों द्वारा लगाए गए स्टालों/प्रदर्शनी का अवलोकन किया।

कार्यक्रम में कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय की बालिकाओं द्वारा स्वागत गीत, सरस्वती वंदना व सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए। उत्तर प्रदेश दिवस के अवसर पर विभिन्न जन कल्याणकारी योजनाओं के लाभार्थियों को स्वीकृति/प्रमाण पत्र वितरित किए गए। इस अवसर पर विभिन्न विभागों यथा- सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग की अभिलेख प्रदर्शनी, बेसिक शिक्षा विभाग, जिला उद्यान विभाग, कृषि विभाग, पुलिस विभाग, बाल विकास एवं पुष्टाहार विभाग, जिला उद्यम एवं प्रोत्साहन विभाग द्वारा (एक जनपद एक उत्पाद) मूंज क्राफ्ट, स्वयं सहायता समूह, पंचायती राज, खादी ग्रामोद्योग, मत्स्य, पशुपालन, दुग्ध सहित अन्य कई विभागों द्वारा परिसर में प्रदर्शनी लगायी गयी।

जिला विकास अधिकारी तेजभान सिंह ने उत्तर प्रदेश राज्य बनने की विकास यात्रा पर प्रकाश डाला। जिलाधिकारी द्वारा प्रांगण में उपस्थित छात्र/छात्राओं एवं समस्त अधिकारियों को धन्यवाद ज्ञापित करते हुए उत्तर प्रदेश दिवस की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं दी गयीं। उन्होंने इस अवसर पर कहा कि भारत में 'विविधता में एकता' की संस्कृति को उत्तर प्रदेश अपने में समाहित किये हुए है। उन्होंने कहा कि उत्तर प्रदेश की सांस्कृतिक विविधता में इतनी गहराई है कि कोई भी बाहर से आकर उत्तर प्रदेश का हो जाता है। उन्होंने उत्तर प्रदेश दिवस मनाये जाने के महत्व को बताते हुए कहा कि आज की युवा पीढ़ी उस महान गौरवशाली समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को याद कर सके, इसलिये उत्तर प्रदेश दिवस का आयोजन प्रत्येक वर्ष किया जाता है।

उन्होंने विभिन्न विद्यालयों की छात्राओं द्वारा प्रस्तुत किये गये सांस्कृतिक कार्यक्रम की सराहना की। कार्यक्रम का संचालन डॉ रमेश सिंह ने किया।

राष्ट्रीय मतदाता दिवस के अवसर पर जिलाधिकारी ने दिलाई शपथ

अमेठी। आज कलेक्ट्रेट सभागार में जिला निर्वाचन अधिकारी/जिलाधिकारी राकेश कुमार मिश्र ने राष्ट्रीय मतदाता दिवस के अवसर पर शपथ दिलाई एवं मौजूद लोगों से आगामी सभी निर्वाचनों में बिना किसी लालच में आए, निर्भीक होकर अपने मताधिकार का प्रयोग करने की अपील किया। शपथ दिलाते हुए जिलाधिकारी ने कहा कि हम भारत के नागरिक लोकतंत्र में अपनी पूर्ण आस्था रखते हुए यह शपथ लेते हैं कि हम अपने देश की लोकतांत्रिक परंपराओं की मर्यादा को बनाए रखेंगे तथा स्वतंत्र, निष्पक्ष एवं शांतिपूर्ण निर्वाचन की गरिमा को अक्षुण्ण रखते हुए निर्भीक होकर धर्म, वर्ग, जाति, समुदाय, भाषा अथवा अन्य किसी भी प्रलोभन में प्रभावित हुए बिना सभी निर्वाचनों में अपने मताधिकार का प्रयोग करेंगे। इस अवसर पर उप जिला निर्वाचन अधिकारी अर्पित गुप्ता, उपजिलाधिकारी गौरीगंज अभिनव कनौजिया, अतिरिक्त मजिस्ट्रेट प्रतीक्षा पांडे, रामकेवल त्रिपाठी सहित अन्य अधिकारी, कर्मचारी व जन सामान्य मौजूद रहे।

गणतंत्र दिवस की तैयारी हुई पूरी, पुलिस के जवानों ने किया फुल ड्रेस रिहर्सल

● सराहनीय कार्य करने वाले 110 पुलिस अधिकारी व कर्मचारी होंगे सम्मानित

संवाददाता। श्रावस्ती

बुधवार को पुलिस लाइन परेड ग्राउंड में 26 जनवरी की तैयारी को लेकर जवानों द्वारा फुल ड्रेस रिहर्सल किया गया। यह रिहर्सल पुलिस अधीक्षक घनश्याम चौरसिया व अपर पुलिस अधीक्षक प्रवीण कुमार यादव की मौजूदगी में संपन्न हुआ। पुलिस अधीक्षक द्वारा परेड में सम्मिलित सभी अधिकारी, कर्मचारियों की कार्यवाही को बारीकी से निरीक्षण किया गया तथा सभी से फुल जोश के साथ परेड करने के लिए उत्साहित किया गया।

26 जनवरी को होने वाली परेड के प्रथम कमांडर क्षेत्राधिकारी नगर/लाइन्स अतुल कुमार चौबे द्वितीय कमांडर पुलिस उपाधीक्षक जमुनहा सतीश कुमार तृतीय कमांडर निरीक्षक अश्वनी कुमार दुबे बनाए गए हैं। साथ ही साथ परेड के लिए 8 टोलियां बनाई गई है। टोली नंबर 1 के कमांडर उ0नि0 पंकज कुमार टोली नंबर 2 के कमांडर उपनिरीक्षक शिवकुमार टोली नंबर 3 के कमांडर उपनिरीक्षक मनोज कुमार टोली नंबर 4 के कमांडर उपनिरीक्षक प्रशांत बाजपेई टोली नंबर 5 के कमांडर उप निरीक्षक दीपक गिरि टोली नंबर 6 के कमांडर उपनिरीक्षक अंबेडकर टोली नंबर 7 (महिला टोली) के कमांडर उपनिरीक्षक अर्चना सिंह टोली नंबर 8 (स्स्क्र) के कमांडर उप निरीक्षक विकास सिंह तथा वाहन दस्ता जिसके कमांडर उपनिरीक्षक रियाज अंसारी बनाए गए हैं। वर्ष 2023 में सराहनीय कार्य करने वाले 110 पुलिस अधिकारी व कर्मचारीगणो को गणतंत्र दिवस के अवसर पर पुलिस अधीक्षक श्रावस्ती द्वारा सम्मानित किया जाएगा।

गौरीगंज में कांग्रेस का जनपद स्तरीय संवाद कार्यक्रम आयोजित

अमेठी। केंद्रीय जनसंपर्क कांग्रेस कार्यालय गौरीगंज में कांग्रेस कार्यकर्ताओं का संवाद कार्यक्रम कांग्रेस जिला अध्यक्ष प्रदीप सिंघल अगुवाई मे आयोजित किया गया। संवाद का शुभारम्भ मुख्य अतिथि कांग्रेस के राष्ट्रीय सचिव राजेश तिवारी व अमेठी लोकसभा समन्वयक मनीष मिश्र के पहुंचने पर जिलाअध्यक्ष के स्वागत के बाद सभी 17ब्लॉक अध्यक्ष और 6न्याय पंचायत अध्यक्ष ने संवाद मे संगठन को मजबूत करने पर अपने अपने सुझाव रखे । सम्बोधन मे राजेश तिवारी ने बताया कि राहुल गांधी एकलौते नेता हैं जो देश के लोगों के लिए लड़ रहे हैं। अमेठी वह धरती है जहां की मिट्टी को माथे पर लगा कर बड़े पदों पर पहुंच जाते थे। राष्ट्रीय सचिव व सह प्रभारी तिवारी ने कांग्रेस पार्टी फंड के लिए नेताओं को निर्देश दिए । जिला अध्यक्ष श्री सिंघल ने कहा कि लगातार 10वर्षों में झूठी बयान बाजी कर राहुल गांधी जी के प्रयास से मंजूर व प्रस्तावित कार्यों को खुद श्रेय लेने व 3 मंत्रालयों की मंत्री ने कागजों पर हजारों करोड़ परन्तु धरातल पर शून्य एक भी ईंट नहीं रखी गयी। यही नहीं स्मृति ईरानी देश की सबसे असफल केंद्रीय मंत्री हैं ।

जनप्रतिनिधियों की मौजूदगी में मनाया गया उत्तर प्रदेश दिवस

विकास भवन में विभिन्न कार्यक्रमों का हुआ आयोजन

संवाददाता। संतकबीरनगर

उत्तर प्रदेश स्थापना दिवस के अवसर पर विधायक सदर अंकुर राज तिवारी, विधायक मेंहदावल अनिल कुमार त्रिपाठी, विधायक धनघटा गणेश चौहान व मुख्य विकास अधिकारी संत कुमार की उपस्थिति में विकास भवन परिसर के डी0पी0आर0सी0 हॉल में ''उत्तर प्रदेश दिवस'' कार्यक्रम आयोजित किया गया।

विधायक सदर अंकुर राज तिवारी, विधायक मेंहदावल अनिल कुमार त्रिपाठी, विधायक धनघटा गणेश चौहान व मुख्य विकास अधिकारी संत कुमार द्वारा फीता काट कर एवं दीप प्रज्जवलित एवं माँ सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण कर कार्यक्रम का शुभारम्भ किया गया।

विधायक सदर अंकुर राज तिवारी, विधायक मेंहदावल अनिल कुमार त्रिपाठी, विधायक धनघटा गणेश चौहान व मुख्य विकास अधिकारी संत कुमार ने विभिन्न विभागों व स्वंय सहायता समूह द्वारा उनके उत्पादों/योजनाओं से सम्बंधित लगाये गये प्रदर्शनी/स्टॉल का अवलोकन करते हुए आवश्यक मार्ग दर्शन दिया। विधायक सदर अंकुर राज तिवारी ने सभी को धन्यवाद देते हुए कहा कि उत्तर प्रदेश आज सभी संसाधनों से परिपूर्ण है और निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर है, उत्तर प्रदेश अपने आप में बृहद सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक धरोहरों को समेटे हुए है। विधायक मेंहदावल अनिल कुमार त्रिपाठी ने उत्तर प्रदेश दिवस के अवसर पर उपस्थित जनप्रतिनिधिगणों सहित सभी जनमानस को शुभकामना देते हुए हृदय से स्वागत किया।

उन्होंने कहा कि आज गौरव का विषय है उत्तर प्रदेश स्थापना दिवस के अवसर पर मुझे यह कहने पर हर्ष हो रहा है कि हमारा प्रदेश भगवान राम, कृष्ण, ऋषिमुनि का प्रदेश है। विधायक धनघटा गणेश चौहान उत्तर प्रदेश स्थापना दिवस पर सभी को धन्यवाद ज्ञापित करते हुए कहा कि संत कबीर दास जी धरती को नमन करते हुए कहा कि उत्तर प्रदेश स्थापना दिवस इस लिए मनाया जा रहा है कि देश में उत्तर प्रदेश सबसे बड़ा आबादी वाला प्रदेश होने के साथ-साथ यहां पर व्यापारी एवं किसान भाई लाभान्वित हो रहें। मुख्य विकास अधिकारी संत कुमार ने इस अवसर पर उपस्थित सभी दर्शकों, छात्र/छात्राओं, स्वयं सहायता समूह की महिलाओं को धन्यवाद देते हुए कहा कि सरकार की मंशा है कि उद्योग एवं उद्यमियों को आवश्यक संसाधन उपलब्ध कराया जाए जिससे उद्यमिता को बढ़ावा मिले और आधिक से अधिक रोजगार का सृजन हो सकें। कार्यक्रम का संचालन प्रदीप त्रिपाठी द्वारा किया गया। इस अवसर पर विभिन्न विभागों के अधिकारी उपस्थित रहे।

क्विक न्यूज

पोखरे में मिली किशोर की लाश, हत्या की आशंका

संतकबीरनगर। खलीलाबाद कोतवाली क्षेत्र के शहरी क्षेत्र के समय माता मंदिर स्थित पोखरे में बुधवार की सुबह में एक किशोर की लाश बरामद हुई। जिसकी शिनाख्त खलीलाबाद कोतवाली क्षेत्र के बरई टोला निवासी लगभग 15 वर्षीय पंकज चौरसिया के रूप में की गई। पुलिस ने विधिक कार्यवाही करते हुए शव को मर्चरी हाउस भेजा। परिजनों ने हत्या की आशंका जताई है। बच्चे को मारने पीटने का भी एक वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हुआ है और मृतक किशोर दो दिन पूर्व लापता भी था। पुलिस मामले की जॉच पड़ताल कर रही है।

एसपी ने मतदाता दिवस पर पुलिस कर्मियों को दिलाई शपथ

संतकबीरनगर। पुलिस अधीक्षक सत्यजीत गुप्ता के निर्देशन में राष्ट्रीय मतदाता दिवस के अवसर पर जनपद के समस्त कार्यालयों / थानों पर पुलिसकर्मियों को दिलाई गयी शपथ। पुलिस अधीक्षक ने पुलिस अधीक्षक कार्यालय पर राष्ट्रीय मतदाता दिवस पर पुलिस कर्मियों को शपथ दिलाई गई। कार्यालय के समस्त पदाधिकारी/ कर्मचारियों को निर्भीक होकर धर्म, वर्ग, जाति, समुदाय, भाषा व अन्य किसी प्रलोभन से प्रभावित हुए बिना सभी निर्वाचनों में अपना मताधिकार का प्रयोग करने की शपथ दिलायी। अपर पुलिस अधीक्षक शशि शेखर सिंह, क्षेत्राधिकारी खलीलाबाद ब्रजेश सिंह, क्षेत्राधिकारी यातायात श्रीमती दीपांशी राठौर सहित अन्य पुलिस अधिकारी व कर्मचारी उपस्थित रहे।

सपा कार्यालय पर कर्पूरी ठाकुर का मनाया शताब्दी वर्ष

अमेठी। जिला मुख्यालय समाजवादी पार्टी कार्यालय पर जननायक कर्पूरी ठाकुर की शताब्दी वर्ष मनाया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता जिलाध्यक्ष राम उदित यादव ने किया। कर्पूरी ठाकुर के चित्र पर श्रद्धासुमन के साथ पुष्प अर्पित करते हुए उनके दिखाए हुए रास्ते पर चलने का संकल्प लिया गया। जिलाध्यक्ष ने अपने संबोधन में कहा कि जननायक कर्पूरी ठाकुर समाजवादी विचारधारा के प्रबल समर्थक थे। वह बिहार के मुख्यमंत्री सत्तासीन होते हुए दलित और पिछड़ों के लिए बहुत ही कार्य किए। और आजीवन उनके हक की लड़ाई लड़ते रहे। और समाज में सामाजिक समानता के पक्षधर थे। हम सबको उनकी विचारधारा से प्रेरणा लेते हुए उस पर चलना होगा। जिससे समाजवादी पार्टी की बनेगी। कार्यक्रम में जिला उपाध्यक्ष तुफैल खान, आर के यादव, सी पी यादव, डॉ रुदल यादव, महेंद्र यादव, दीपू तिवारी, मुकेश विश्वकर्मा, राज मोहन यादव, मौजूद रहे।

डीएम ने यूपी दिवस पर खेल प्रतियोगिताओं का किया शुभारंभ

रायबरेली। जिलाधिकारी हर्षिता माथुर ने मोतीलाल नेहरू स्टेडियम में उत्तर प्रदेश दिवस के शुभ अवसर पर खेल प्रतियोगिता का शुभारंभ किया। उन्होंने उपस्थित खिलाड़ियों को संबोधित करते हुए कहा कि खिलाड़ी युवा वर्ग का प्रतिनिधित्व करते हैं। इन खिलाड़ियों के योगदान से भारत का नाम विश्व पटल पर प्रदर्शित होता है। उन्होंने कहा कि हाल ही के दिनों में होने वाले एशियाई और विश्व खेलों में भारतीय खिलाड़ियों ने देश का नाम रोशन किया। उन्होंने खिलाड़ियों को संबोधित करते हुए कहा कि खिलाड़ियों को नशे जैसी बुरी चीजों से दूर रहना चाहिए क्योंकि यह युवाओं के लिए आइकन का काम करते हैं। युवा उनसे बहुत प्रेरित होते हैं। खिलाड़ी,अन्य युवाओं के लिए प्रेरणा स्रोत होते हैं अतः खिलाड़ियों को नशीले पदार्थों से दूर रहना चाहिए।इस प्रतियोगिता का शुभारंभ यूपी दिवस 24 जनवरी से हो रहा है।

राष्ट्रीय मतदाता दिवस पर मण्डलायुक्त व डीएम ने दिलाई शपथ

गोंडा। चौदहवें राष्ट्रीय मतदाता दिवस के अवसर पर आयुक्त सभागार में आयोजित कार्यक्रम में मण्डलायुक्त योगेश्वर राम मिश्र ने कमिश्नरेट के अधिकारियों, कर्मचारियों को मतदान की शपथ दिलाई। शपथ दिलाते हुये उन्होंने कहा कि हम भारत के नागरिक, लोकतंत्र में अपनी पूर्ण आस्था रखते हुए यह शपथ लेते हैं कि हम अपने देश की लोकतांत्रिक परम्पराओं की मर्यादा को बनाए रखेंगे। स्वतंत्र, निष्पक्ष एवं शांतिपूर्ण निर्वाचन की गरिमा को अक्षुण्ण रखते हुए, निर्भीक होकर, धर्म, मूलवंश, जाति, समुदाय, भाषा अथवा अन्य किसी भी प्रलोभन से प्रभावित हुए बिना सभी निर्वाचनों में अपने मताधिकार का प्रयोग करेंगे। इसी प्रकार जिला निर्वाचन अधिकारी/जिलाधिकारी नेहा शर्मा ने कलेक्ट्रेट सभागार में सभी कलेक्टरेट कर्मियो को मतदाता शपथ दिलाई। उन्होंने सभी कर्मियों से कहा कि सभी लोग शपथ का पालन करें और अन्य लोगों को भी वोट देने के लिए प्रेरित करें।

हरे पेड़ काटने पर पुलिस ने एक को पकड़ा

बछरावां, रायबरेली। क्षेत्र के लालखेड़ा मजरे विनायकपुर में पुलिस ने हरे पेड़ के 5 पुट्ट के तीन बोटा बरामद किया है। इस मामले में अंकित कुमार 22 वर्ष पुत्र निरंजन निवासी नया खेड़ा मजरे अघईया थाना निगोहां को मौके से उस वक्त पकड़ा गया जब वह उक्त लकड़ी को कहीं पर ले जाने की फिराक में था। पकड़े गए आरोपी ने पुलिस को बताया कि वह पेड़ों को काटकर अपना जीवन चला रहा है।

शोभा यात्रा में व्यवधान तथा ग्रामीणों से मारपीट के आरोप में तीन लोग गिरफ्तार

संवाददाता। रायबरेली

रायबरेली के भदोखर थाना क्षेत्र के बेलाखारा गांव के ग्रामीणो की भारी भीड को देखते ही पुलिस के हाथ पांव फूल गए। एक विशेष वर्ग के विरुद्ध मुकदमा दर्ज न होने से नाराज ग्रामीण थाने के बाहर इकट्ठे हो गए। इसी बीच 2014 में भाजपा से लोकसभा चुनाव लड़े वरिष्ठ भाजपा नेता व सुप्रीम कोर्ट अधिवक्ता अजय अग्रवाल व क्षेत्रीय मंत्री श्री दिलीप यादव भदोखर थाने पर पहुंच गए।

ग्रामीणों ने भाजपा नेता अजय अग्रवाल को बताया कि सोमवार 22 जनवरी को अयोध्या मे भगवान रामलला के प्राण प्रतिष्ठा के मौके पर पूरे उत्साह के साथ गांव के सभी लोगों ने भगवान श्रीरामलला की भव्य शोभा यात्रा निकाली। शोभा यात्रा गांव के प्रमुख मंदिर व सभी गलियो से होकर गुजर रही थी। तभी दूसरे समुदाय के लोगो द्वारा शोभा यात्रा का विरोध किया। जिसमे दूसरे समुदाय की महिलाओ ने रास्ते मे बैठ कर शोभा यात्रा को रोकते हुए विरोध जताया, जिसके चलते दोनो पक्षो मे कहा सुनी होने लगी, जिसकी सूचना मिलने पर थाना प्रभारी, भदोखर पुलिस बल के साथ मौके पर पहुंच गए थे तथा दोनों पक्षों को समझा बुझा कर मामले को शांत करते हुए शांति पूर्वक ढंग से शोभा यात्रा समाप्त हो गई थी।

मामला शांत होने के बाद सब कुछ ठीक ठाक चल रहा था। ग्रामीणों ने बताया कि 22 जनवरी के बाद दुसरे समुदाय के लोगो द्वारा ग्रामीणों को धमकाया जा रहा है तथा उन्हें भद्दी-भद्दी गलियां दी जा रही है तथा भगवान राम के लिए भी अपशब्द कहे जा रहे थे। साथ ही साथ गाँव की अनाथ लड़की के साथ कुछ अन्य के साथ मार पीट की गयी , तथा उनके कपडे फाड़ दिए गए, जिस के चलते सभी ग्रामीण डरे सहमे हुए हैं। ग्रामीणों ने आगे भाजपा नेता को बताया कि किसी प्रकार की कार्यवाही न होने से दूसरे समुदाय के लोगों के हौसले बुलंद हैं।

आरेडिका में 68वां रेल सेवा पुरस्कार का वितरण समारोह

लालगंज, रायबरेली। आधुनिक रेल डिब्बा कारखाना में 68वें रेल सेवा पुरस्कार का वितरण समारोह का आयोजन सरस्वती प्रेक्षागृह में किया गया। समारोह में 12 रेल सेवा पुरस्कार एवं 38 विशिष्ट सेवा पुरस्कार सहित कुल 50 कर्मचारियों व अधिकारियों को मुख्य अतिथि महाप्रबंधक प्रशान्त कुमार मिश्र ने पुरस्कार एवं प्रशस्ति पत्र प्रदान किये गए। महाप्रबंधक श्री मिश्र ने सभी पुरस्कार विजेताओं को बधाई दी और अपने सम्बोधन में कहा कि रेलवे बोर्ड के नए दिशा-निर्देशों के अनुसार रेल सेवा पुरस्कार वितरित किये गये। उन्होने कहा कि पुरस्कृत लोगों के अतिरिक्त अन्य कर्मचारियों एवं अधिकारियों के योगदान को कम करके नही आंका जा सकता है तथा उनको भी आरेडिका के विकास पथ पर निरन्तर गतिशील बनाए रखने हेतु प्रोत्साहित किया जाता रहेगा। आज आरेडिका केवल भारतीय रेल के लिए ही कोच नहीं बना रही है बल्कि दूसरे देशों को निर्यात भी कर रही है।

उन्नाव-लालगंज एनएच को मिलाने वाले मार्ग हैं बदहाल

लालगंज, रायबरेली। सार्वजनिक निर्माण विभाग के अभियंताओं की अनदेखी का खामियाजा नागरिको को भुगतना पड़ रहा है। लालगंज से कानपुर मेंन रोड़ मदुरी-मुबारकपुर गांव तक गड्ढा एवं धूल से न केवल यातायात प्रभावित है बल्कि धूल के गुबार से सड़क के दोनो ओर जीवन यापन कर रहे परिवारो के लिये सांस लेना मुश्किल हो रहा है।

लालगंज नगर के हनुमान मंदिर चौराहा से मदुरी-मुबारकपुर गांव तक तीन किमी मार्ग पूरी तरह से क्षतिग्रस्त एवं गड्ढायुक्त है। लालगंज-उन्नाव नेशनल हाईवे को मिलाने वाला यह मार्ग जर्जर होने के बावजूद पीडब्लूडी के अभियंता पूरी तरह से उदासीन देखे जा रहे है। मार्गवर्ती तकरीबन डेढ़ दर्जन गांव के ग्रामीण बताते है कि इस मार्ग से उडने वाली धूल से वायु प्रदूषण इस कदर बढ़ गया है जिससे बच्चों और बूढ़ों को सांस लेना मुश्किल हो रहा है। मार्गवर्ती निवास कर रहे अवनीश श्रीवास्तव, भोला सिंह, विशाल वर्मा, राजेंद्र सिंह, डा.सुरेश कुमार निगम सहित दर्जनो लोगो ने बताया कि पीडब्लूडी ने इस मार्ग को पूरी तरह से उपेक्षित कर दिया है।

ग्रामीणों ने कहा कि मुख्यमंत्री की सड़को को गढ्डामुक्त करने मंशा पर पीडब्लूडी के अभियंताओं ने पानी फेर दिया है। इस मार्ग के मरम्मत का कार्य पिछले 5 वर्षो से नही कराया गया है। उन्नाव-लालगंज नेशनल हाईवे के निर्माण की स्वीकृति आने के बाद से पीडब्लूडी ने इस मार्ग की मरम्मत के कार्य को ठंडे बस्ते में डाल दिया है। ग्रामीणों ने कहा कि जब-जब लोक निर्माण खण्ड 2 के अधिशाषी अभियंता से मरम्मत की मांग की गई तब-तब उन्होंने धन का दुखडा रोकर अपना पल्लू झाड़ लिया। यही हाल लालगंज के गांधी चौराहा से लेकर सेमरपहा गांव तक देखने को मिलता है।

सूर्या सीनियर सेकेंड्री स्कूल खलीलाबाद में स्कूल खुलने पर कार्यक्रम का आयोजन

संवाददाता। संतकबीरनगर

कड़ाके की ठंड के चलते हुई लंबी छुट्टी के बाद सोमवार से सूर्या सीनियर सेकेंड्री स्कूल खलीलाबाद में शैक्षणिक गतिविधियों का संचालन शुरू हुआ। नए वर्ष में प्रथम दिन स्कूल पहुंचे सूर्या के नौनिहालों ने विद्यालय परिवार के साथ उत्साह और उमंग के साथ नए वर्ष का जश्न मनाया। प्रबन्धक डॉ0 उदय प्रताप चतुर्वेदी एवं प्रबन्ध निदेशिका श्रीमती सविता चतुर्वेदी, प्रधानाचार्य रविनेश श्रीवास्तव के साथ नौनिहालों ने केक काटकर खुशियां मनाई। नववर्ष के जश्न के मौके पर छात्र-छात्राओं ने जमकर के केक खाए।

सूर्या सीनियर सेकेंड्री स्कूल खलीलाबाद में शीतकालीन अवकाश के बाद सोमवार से छात्र-छात्राएं विद्यालय में पहुंचे तो पूरा विद्यालय छात्र-छात्राओं की चहचहाहट से गुलजार हो उठा। विद्यालय बंद होने के कारण छात्र-छात्राएं विद्यालय पर नववर्ष का कार्यक्रम नही कर पाये थे। बच्चों की मंशा को महसूस करते हुए विद्यालय परिवार ने संस्थान के बच्चों के साथ नव वर्ष की खुशियां साझा किया। विद्यालय के डॉ0 उदय प्रताप चतुर्वेदी एवं श्रीमती सविता चतुर्वेदी के साथ छात्र छात्राओं को केक खिलाकर नववर्ष की बधाई दी। नववर्ष बधाई कार्यक्रम के दौरान छात्र-छात्राओं के चेहरे खुशी से खिल उठे। उन्होंने अपने सभी टीचर्स को भी नववर्ष की बधाई दी। डॉ0 चतुर्वेदी ने बच्चों को संबोधित करते हुए कहा कि इस नए वर्ष में अपनी सफलता का लक्ष्य तय कर लें। जिससे आने वाला दिन आप के लिए स्वर्णिम साबित हो सके। इस अवसर पर नितेश द्विवेदी, आरती चौधरी, बबिता त्रिपाठी, आशुतोष पांडेय सहित शिक्षक-शिक्षिकायें उपस्थित रहीं।

समाज के वंचित वर्ग की प्रखर आवाज थे कर्पूरी ठाकुरः वीरेन्द्र

कर्पूरी ठाकुर के जन्मदिवस पर सपा कार्यालय में हुआ गोष्ठी का आयोजन

रायबरेली। महान समाजवादी नेता, बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री जननायक कर्पूरी ठाकुर के जन्मदिवस शताब्दी वर्ष समाजवादी पार्टी कार्यालय सुपर मार्केट में गोष्ठी आयोजित कर राजनीति एवं देश निर्माण में उनके योगदान पर चर्चा की गयी। समाजवादियों ने उनके चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित कर उन्हें याद किया। विचार गोष्ठी को सम्बोधित करते हुए जिलाध्यक्ष इं0 वीरेन्द्र यादव ने कहा कि जननायक कर्पूरी ठाकुर स्वतंत्रता सेनानी, शिक्षक एवं गरीबों के हितैषी थे।

उन्होंने बिहार प्रदेश में मुख्यमंत्री रहते हुए कृषि का उचित लाभ किसानों तक पहुँचाने, हिन्दी का प्रचार प्रसार, पिछड़े वर्ग को आरक्षण की व्यवस्था कर सरकारी नौकरियों में हिस्सेदारी दिलवाने के अभूतपूर्व कार्य करवाये। कर्पूरी ठाकुर बेहद ईमानदार जननेता एवं राजनीतिक जीवन में वंचित एवं उपेक्षित वर्गों की प्रखर आवाज थे।कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए समाजवादी अल्पसंख्यक वर्ग के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष आफ्ताब अहमद (रज्जू खांन) ने कहा कि कर्पूरी ठाकुर का जीवन दर्शन सामाजिक बदलाव गरीबों शोषितों को न्याय दिलाने की प्रेरणा देता है।

जननायक कर्पूरी ठाकुर के व्यक्तित्व पर अपने विचार करते हुए पूर्व डी0जी0सी0 ओ0पी0 यादव ने कहा कि उनका सम्पूर्ण जीवन किसानों, मजदूरों, छात्रों, बेरोजगारों को उचित अवसर दिलाने में व्यतीत हुआ। उनका अनुसरण कर बिहार के कई राजनेताओं, मुख्यमंत्रियों ने सामाजिक बदलाव पर निर्णायक कार्य किये। कार्यक्रम का संचालन महासचिव मोहम्मद अरशद खांन ने किया।

शासन की मंशानुसार आम जनता को मुहैया हों स्वास्थ्य सेवाएंः जिलाधिकारी

डीएम की अध्यक्षता में जिला स्वास्थ्य समिति की बैठक

संवाददाता। गोंडा

बुधवार को कलेक्ट्रेट सभागार में जिलाधिकारी नेहा शर्मा की अध्यक्षता में जिला स्वास्थ्य समिति की बैठक संपन्न हुई। बैठक में जिला स्वास्थ्य समिति द्वारा राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन के अंतर्गत चलाए जा रहे कार्यक्रमों की समीक्षा की गयी। बैठक में प्रस्तावित एजेंडा के आधार पर यूपीएचएमआईएस हेल्थ डैशबोर्ड, मातृ स्वास्थ्य, बाल स्वास्थ्य, परिवार कल्याण, कम्युनिटी प्रोसेस, राष्ट्रीय कार्यक्रम नान कम्युनिकेबल डिजीज, एनसीडी, एनबीसीपी, आरएनटीसीपी पीएमएमवीवाई, नियमित टीकाकरण, वैक्सीनेशन, जननी सुरक्षा व मातृ वंदना योजना के तहत भुगतान की स्थिति, आशा इन्सेन्टिव, हाई रिस्क प्रेग्नेंसी, ओपीडी व आईपीडी की स्थिति, प्राथामिक स्वास्थ्य केन्द्रों तथा सीएचसी पर बेडों की ऑक्यूपेंसी की स्थिति सहित अन्य योजनाओं की जिलाधिकारी द्वारा गहन समीक्षा की गई। वहीं जिला स्वास्थ समिति की समीक्षा के दौरान स्वास्थ्य विभाग द्वारा संचालित सभी योजनाओं की समीक्षा की गई।

बैठक में राष्ट्रीय बाल स्वास्थ्य कार्यक्रम के अंतर्गत दिसम्बर, 2023 का भ्रमण की समीक्षा की गई। एनआरसी में भर्ती बच्चों, आरसीएच पोर्टल फीडिंग के स्टेटस, एनपीसीडीसीएस, राष्ट्रीय कुष्ठ नियंत्रण कार्यक्रम, राष्ट्रीय अंधता एवं दृष्टिक्षीणता नियंत्रण कार्यक्रम आदि सभी की समीक्षा कर संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिए हैं कि समय से कार्य कराना सुनिश्चित करें।

डीएम द्वारा सभी सीएचसी अधीक्षकों को कड़े निर्देश दिये गये कि अपने अपने सीएचसी पर साफ-सफाई पर विशेष ध्यान दें। जिलाधिकारी ने सभी सीएससी अधीक्षकों से स्वास्थ्य विभाग द्वारा चलाई जा रही सभी योजनाओं की योजनावार समीक्षा की। बैठक में जिलाधिकारी ने कहा कि शासन की मंशानुसार जनसामान्य को बेहतर स्वास्थ्य सेवाएं मुहैया कराने के लिए सभी सीएचसी अधीक्षक सीएचसी पर ही निवास करें। तथा संस्थागत

खीरी में हुआ यूपी दिवस का भव्य आगाज केंद्रीय गृह राज्यमंत्री ने किया शुभारंभ

● देश की प्रगति में यूपी का अहम योगदानए प्रदेश ने लिखी प्रगति की एक नई गाथाः टेनी ●डबल इंजन सरकार के नेतृत्व में निरंतर समृद्धि की ओर बढ़ रहा यूपीः केंद्रीय गृह राज्यमंत्री

लखीमपुर खीरी। शहर के जीआईसी ग्राउंड में जिला प्रशासन के तत्वावधान में बुधवार को यूपी दिवस का भव्य आगाज हुआए जहां एक और सांस्कृतिक कार्यक्रमों ने सभी का मनमोहा, वही सरकारी योजनाओं के संगम ने लाभार्थियों को कई सौगातें दी। कार्यक्रम का सफल संयोजन डीएम महेंद्र बहादुर सिंह की नेतृत्व में सीडीओ अनिल कुमार सिंह ने किया। मंगलवार को करीब 11ण्30 बजे केंद्रीय गृह राज्यमंत्री अजय मिश्र टेनी ने विधायक योगेश वर्मा, विनोद शंकर अवस्थी, भाजपा जिला अध्यक्ष सुनील सिंह, डीएम महेंद्र बहादुर सिंह, एसपी गणेश प्रसाद साहा, सीडीओ अनिल कुमार सिंह के साथ फीता काटकर, मां सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण, दीप जलाकर यूपी दिवस का विधिवत शुभारंभ किया। परिषदीय विद्यालय की बालिका ने मां सरस्वती वंदना प्रस्तुत की। छात्राओं ने स्वागत गीत प्रस्तुत किया। इसके बाद सांस्कृतिक कार्यक्रमों की एक लंबी श्रंखला हुई।

केंद्रीय गृह राज्य मंत्री अजय मिश्र टेनी ने कहा कि यूपी देश की प्रगति में अहम योगदान देने के साथ निरंतर समृद्धि की ओर बढ़ रहा। उन्होंने सभी जनपदवासियों को राज्य स्थापना दिवस की बधाई दी। उप्र आज भारत की आध्यात्मिक और सांस्कृतिक विरासत का केंद्र बिंदु बन रहा है। प्रदेश दुनिया में विशेष स्थान बना रहा है। यूपी के गौरवशाली इतिहास, समृद्ध आध्यात्मिक विरासत और स्थापत्य चमत्कारों ने राज्य को भारत के जीवंत मानचित्र पर गौरव का एक अनूठा स्थान दिया है। उन्होंने कहा कि डबल इंजन की सरकार ने न केवल सभी की जरूरतें पूरी की बल्कि जीवन जीने की सभी सुविधाएं उपलब्ध कराई। सड़कए आवासए बिजलीएपानीए गैस का उचित प्रबंधन किया। आज समृद्धता के क्षेत्र में यूपी का अलग स्थान है। बीते वर्षों में प्रदेश ने प्रगति की एक नई गाथा लिखी हैए जिसमें राज्य सरकार के साथ जनता.जनार्दन ने भी बढ़.चढ़कर भागीदारी की है। वह विश्वास के साथ यह कह सकते हैं कि यूपी ने प्रत्येक क्षेत्र में प्रगति की है। यहां के लोगों के जीवन में सकारात्मक बदलाव आया है। यूपी दिवस की थीम पूंजीए निवेश और रोजगार है। आज यूपी में लोग पूंजी निवेश के लिए बड़े पैमाने पर आ रहे हैं। कानून व्यवस्था पूरी तरह से नियंत्रण में है। आज यहां बहुत से स्टाल लगाए गएए जो जिले की प्रगति को दर्शाते है। डीएम के कुशल नेतृत्व में अफसरो ने अच्छा आयोजन किया है। जो लोग आएंगे वह निश्चित रूप से अच्छी प्रेरणा लेकर यूपी के विकास में योगदान करेंगे।

डीएम महेंद्र बहादुर सिंह ने मौजूद लोगों को यूपी दिवस की शुभकामनाएं दी। उन्होंने आवाहन किया कि यूपी दिवस पर आयोजित कार्यक्रमों का आनंद लें, सरकारी योजनाओं से जुड़ी हर छोटी.बड़ी जानकारी प्राप्त करेंए जो नागरिकों के लिए वरदान साबित होगी।कार्यक्रम के अंत में सीडीओ अनिल कुमार सिंह ने अतिथियों के प्रति आभार ज्ञापित करते हुए मौजूद लोगों को यूपी दिवस की शुभकामनाएं दी। कार्यक्रम में मुख्य रूप से सांसद प्रतिनिधि अरविंद सिंह संजयए अंबरीश सिंह सहित सभी जिला स्तरीय अधिकारी मौजूद रहे।

केंद्रीय गृहराज्यमंत्री ने विधायकगण, जिलाध्यक्ष, डीएमए एसपीए सीडीओए एडीएम के साथ यूपी दिवस पर लगी प्रदर्शनी एवं स्टालों का अवलोकन किया। स्टालों पर मौजूद अफसरों, कर्मचारियों से योजना से जुड़ी जरूरी जानकारी ली। यूपी दिवस के पर ओडीओपी प्रदर्शनी, महिला एवं बाल कल्याण विभाग की मिशन शक्ति पर आधारित प्रदर्शनी, चिकित्सा एवं परिवार कल्याण, आयुर्वेदिक, होम्योपैथिक, दिव्यांगजन, अल्पसंख्यक, कृषि, गन्ना, कृषि रक्षा, उद्यान, माध्यमिक शिक्षा, बेसिक शिक्षा, पर्यटन, खाद एवं रसद, श्रम, पंचायती राज, ग्राम्य विकास, सहकारिता, ग्राम उद्योग, उद्योग, स्वयं सहायता समूह, मनरेगा सहित करीब 25 स्टाल लगाए गए।

यूपी दिवस एवं राष्ट्रीय बालिका दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में केंद्र सरकार की महत्वाकांक्षी बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ योजना के तहत केंद्रीय गृह राज्यमंत्री अजय मिश्र टेनी ने विधायक योगेश वर्मा, विनोद शंकर अवस्थी और जिलाध्यक्ष सुनील सिंह संग जिले की हाईस्कूल परीक्षा में जिले की टॉप टेन बालिकाएं अपूर्वा शर्मा, आस्था भारद्वाज, रौनक, प्रगति वर्मा, अनुष्का वर्मा, माही गुप्ता, शिवानी मिश्रा, श्रेया द्विवेदी, जागृति गुप्ता, प्रेरणा और इंटरमीडिएट परीक्षा में टॉप 10 छात्राओं शाम्भवी वर्मा, आस्था पटेल, दीपशिखा, काम्या बाथम, कनिका देवीए आकांक्षा भारती, रीतिका विश्वासए अनुष्का वर्मा, सुनैना गुप्ता, अंशिका चौधरी को 05.05 हज़ार की धनी राशि का चेक बालिकाओ को चेक प्रदान कर सम्मानित किया।

केंद्रीय मंत्री ने पीएम आवास योजना (शहरीध्ग्रामीण), सीएम आवास (ग्रा) के पांच.पांच लाभार्थियों को चाबी, कन्या विवाह योजना के तीन श्रमिक लाभार्थियों को 55.55 हजार, मातृत्व शिशु बालिका योजना के तीन श्रमिक लाभार्थियों को 25.25 हजार की धनराशि के चेक प्रदान किए। सीएम युवा स्वरोजगार योजना लाभार्थी पीयूषदीप को 10 लाख, ओडीओपी योजना की लाभार्थी निधि सिंह चौहान को 20 लाख, पीएम रोजगार सृजन कार्यक्रम के लाभार्थी सतीश चंद्र को 20 लाख को लोन स्वीकृत पत्र, विश्वकर्मा श्रम सम्मान के लाभार्थी अलका, काजल, मैना देवी ओडीओपी प्रशिक्षण, टूलकिट योजना लाभार्थी प्रवीण कुमार गौड़ को टूल किट प्रदान की गई। कृषक सर्वेश वर्मा, यशपाल, सुनील को कस्टम हायर सेंटर यंत्र, किसान ब्रह्मदीन एवं हरिवंश किशोर को दो हॉर्स पावर सोलर पंपए किसान साहब सिंह को एग्री ग्रेटर प्रदान किया। बाबा साहब अंबेडकर रोजगार प्रोत्साहन योजना लाभार्थी मुनेश कुमार, विभा देवी को 1.5-1.5 लाख, राजकुमार को 1.30 लाख लोन की डेमो चेक प्रदान की। आयुष्मान भारत के लाभार्थी बलराम, गीता, नितिन, रफीक, सफीकुनिशा को गोल्डन कार्ड की सौगात मिली। केंद्रीय गृह राज्य मंत्री अजय मिश्र टेनी ने विधायक योगेश वर्मा, विनोद अवस्थी जिला अध्यक्ष सुनील सिंह के बाल विकास पुष्टाहार महकमे में उत्कृष्ट कार्य करने वाली 05 आंगनबाड़ी कार्यकत्रियों (सुनीता, सबीना परवीन, मधु देवी, सरोजिनी, नीलम देवी) को 05.05 हजार, 05 आंगनबाड़ी सहायिका, लज्जावती, नीरज देवी, सुधरा देवी, पप्पी देवी, पुष्पा देवी को 2500.2500 का चेक प्रदान किया। राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन के तहत उत्कृष्ट काम करने वाली बैंक सखी संगीता मौर्य (इंडियन बैंक ढकेरवा), श्रीमती शशि (पीएनबी बैंक लंदनपुर ग्रट) को प्रतिशत पत्र देकर सम्मानित किया।

कानूनगो व उसके साथी को एंटी कर्पसन टीम ने रिश्वत लेते किया गिरफ्तार

फर्रुखाबाद। मेडबंदी के लिए रिश्वत लेते कानून-गो व उसके साथी को एंटी करप्शन टीम नें रंगे हाथों पकड़ लिया । जिससे हड़कंप मच गया। पुलिस उसे लेकर थानें आ गयी । जहाँ दोनों से पूंछतांछ चल रही है। थाना जहानगंज के ग्राम मुरहास-जैतपुर निवासी किसान अमर सिंह कुशवाहा पुत्र मेघनाथ के खेत में मेडबंदी होनी थी। जिसके लिए सदर तहसील के कानून-गो विवेक तिवारी नें उससे रुपयों की मांग की थी। किसान अमर सिंह नें मामले में एंटी करप्शन थाना कानपुर में शिकायत की। जिसके बाद एंटी करप्शन नें अपना जाल बिछाया। बुधवार को तहसील सदर में किसान अमर सिंह 10 हजार रूपये लेकर पंहुचा। जैसे ही रुपयों का पैकेट कानून-गो व उसके साथी उमाशंकर कछियाना जहानगंज को एंटी करप्शन टीम नें दबोच लिया। एंटी करप्शन उन्हें लेकर थाना मऊदरवाजा पंहुची। थानें में बंद कमरें में उनसे पूंछतांछ की।

डीएम ने की गौशालाओं की समीक्षा, निराश्रित गौवंशों को गौशालाओं में संरक्षित करने के दिए निर्देश

● गोवंशों के संरक्षण में किसी प्रकार की लापरवाही पाए जाने पर होगी कार्यवाहीः जिलाधिकारी

कानपुर देहात। डीएम आलोक सिंह के अध्यक्षता में गौशाला विस्तारीकरण, गौवंशों को ठंड से बचाव एवं निराश्रित गौवंश संरक्षण अभियान के संबंध में समीक्षा बैठक विकास भवन सभागार में की गई। डीएम द्वारा गौशाला विस्तारीकरण के प्रगति की रिपोर्ट प्रत्येक खंड विकास अधिकारी से लेकर आवश्यक दिशा निर्देश दिए गए। उन्होंने विस्तारीकरण के संबंध में कहा किए विस्तारीकरण का कार्य जिस भी गौशाला में चल रहा है शीघ्र पूर्ण कर लिया जाए। डीएम ने कहा कि शासन द्वारा प्राप्त दिशा निर्देशों के अनुरूप में सभी निराश्रित गौवंश को सघन अभियान चलाकर गौशाला में संरक्षित कराया जाएए हाईवे पर एक भी निराश्रित गोवंश ना पाया जाए। मुख्य पशु चिकित्सा अधिकारी को निर्देश दिए की सभी गौशालयों में ठंड से बचाव हेतु गौशाला में तिरपाल, काऊ कोट आदि का प्रबंध सुनिश्चित कराया जाए।

डीएम द्वारा प्रत्येक गौशाला में भूसा, हरा चारा, चूनी, चोकर आदि की पर्याप्त उपलब्धता सुनिश्चित कराए जाने के निर्देश दिए गए। सभी नोडल अधिकारी गौशाला केयरटेकर को स्पष्ट निर्देश दें कि वह प्रत्येक दिन गौवंशों को ताजा पानी ही पिलाए। सभी नोडल अधिकारियों को प्रत्येक सप्ताह गौशाला निरीक्षण कर वहां की व्यवस्थाओं को दुरुस्त करने के भी निर्देश दिए। सभी नगर निकायों के अधिकारियों को कान्हा गौशाला के विस्तारीकरण व नई कान्हा गौशाला के निर्माण हेतु प्रस्ताव बनाकर उपलब्ध कराने के निर्देश दिए हैं। सीडीओ लक्ष्मी एन., जिला परियोजना अधिकारी वीरेंद्र सिंह, डीसी मनरेगा, जिला पंचायत राज अधिकारी समस्त खंड विकास अधिकारी, सभी पशु चिकित्सा अधिकारी, सचिव, सभी नोडल अधिकारी आदि उपस्थित रहे।

पांच साल से लटका मनरेगा का आडिट करेगी सहकारी व पंचायती लेखा विभाग, शासन ने दी क्लीन चिट

हमीरपुर। लेखा परीक्षा विभाग में कार्यों की समीक्षा करने आये चित्रकूटधाम मंडल के सहकारी समितियां एवं पंचायती विभाग के लेखा परीक्षा के उपनिदेशक ने बुधवार को बताया कि पंचायती विभाग में मंडल में मनरेगा आडिट करने को लेकर पांच साल से मामला लटका हुआ था अब शासन ने इसी विभाग को आडिट करने की क्लीन चिट दे दी है। सहकारी समितियां व पंचायती बिभाग का आटिड शत प्रतिशत आन लाइन किया जा रहा है। उपनिदेशक अरविंद पांडेय ने बुधवार को स्थानीय लेखा परीक्षा में जाकर सभी कार्यों की समीक्षा की और आवश्यक दिशा निर्देश दिये है। उपनिदेशक ने बताया कि पंचायती विभाग का समस्त वित्तीय आडिट आन लाइन किया जा रहा है। अभिलेखों का आनलाइन करने में काफी दिक्कते आती थी मगर इसके बाद सब कुछ ठीक ठाक चल रहा है। मनरेगा आडिट करीब पांच साल से नही हो रहा है। विवाद की स्थिति बनी हुई थी शासन द्वारा यह स्पष्ट नही हो पा रहा था कि इसका आडिट स्थानीय निधि लेखा परीक्षा करेगी या सहकारी एवं पंचायती लेखा परीक्षा करेगा। सहकारी समितिया व पंचायती लेखा परीक्षा को आडिट करने के लिये क्लीन चिट दे दी है। डीपीआरओ को कड़ा पत्र लिखकर आडिट शुरु कर दिया जायेगा। ग्राम सभाओं को केंद्रीय वित्त आयोग का बजट जब भी मिलता है जब आडिट रिपोर्ट उनके पक्ष में होती है। मंडल में कई गांवों का पैसा भी रुक गया था। सहकारी समितियों व पंचायतों का आडिट करने के बाद सीधे रिपोर्ट वह शासन को भेज देते है शासन स्तर पर जिले के बिभाग को पत्र लिखकर कार्यवाही करने को कहा जाता है। विस समिति में पांच साल पहले तक की आडिट रिपोर्ट भेज दी गयी है। धीरे धीरे वर्षवार रिपोर्ट भेजी जा रही है इसके बाद समिति के सदस्य उसका आकलन करते है। डीडी ने बताया कि कुछ पंचायतों में गड़बडिया पायी जाती है तो उनको सुधार करने को कहा जाता है जब सुधार नही होता तो विभागीय उच्चाधिकारियों को पत्र लिखा जाता है।

क्विक न्यूज

अंतिम प्रकाशित नामावली को मतदान केंद्रों पर एक सप्ताह की अवधि के लिए जन सामान्य के निरीक्षण हेतु रखा जाएगा

कानपुर देहात। विधानसभा निर्वाचन नामावलियों के संक्षिप्त पुनरीक्षण 1.01.2024 के आधार पर 23.01.2024 को अंतिम प्रकाशन हेतु मतदाता सूची प्रकाशित की गई। इसके संबंध में अपर जिला अधिकारी प्रशासनध् उप जिला निर्वाचन अधिकारी जेपी गुप्ता द्वारा सभी मान्यता प्राप्त राजनीतिक दलों के साथ बैठक की गई तथा अंतिम प्रकाशित मतदाता सूची उपलब्ध कराई गई। उपस्थित सभी राजनीतिक दलों के प्रतिनिधियों को अवगत कराया गया की अंतिम प्रकाशित नामावली को सभी मतदान मतदान केंद्रों पर एक सप्ताह की अवधि के लिए जन सामान्य के निरीक्षण हेतु रखा जाएगा। उक्त बैठक में श्यामू शुक्ला भारतीय जनता पार्टीए नरेंद्र सिंह समाजवादी पार्टीए युवराज सिंह बहुजन समाज पार्टी के प्रतिनिधि उपस्थित रहे।

डीएम ने ईवीएम वेयरहाउस का किया निरीक्षण, दिए निर्देश

कानपुर देहात। जिलाधिकारी आलोक सिंह द्वारा आगामी लोकसभा सामान्य निर्वाचन 2024 के दृष्टिगत ईवीएम वेयर हाउस का मासिक निरीक्षण किया गयाए निरीक्षण के दौरान जिलाधिकारी ने वीवीपैट रखरखाव का अवलोकन किया गया तथा वीवीपैट आदि की सुरक्षा हेतु आवश्यक दिशा निर्देश संबंधित अधिकारियों को दिए। उन्होंने कहा कि ईवीएम वीवीपैट की सुरक्षा व्यवस्था 24 घंटे रहे तथा किसी प्रकार की लापरवाही ना होने पाए एवं सीसीटीवी कैमरे संचालित रहे तथा साफसफाई की व्यवस्था दुरस्त रखने के निर्देश दिए। इस मौके पर अपर जिलाधिकारी प्रशासन जेपी गुप्ता, नोडल अधिकारी ईवीएम/पीडी वीवीपैट वीरेंद्र सिंह तथा जनप्रतिनिधिगणों भारतीय जनता पार्टी से श्यामू शुक्ला, सपा से शेखू खान सहित निर्वाचन कार्यालय के स्टाफ आदि उपस्थित रहे।

गोवंश से संबंधित समस्या के लिए टोल फ्री नंबर पर करें संपर्क

कानपुर देहात। मुख्य विकास अधिकारी लक्ष्मी एन0 के निर्देशन में मुख्य पशु चिकित्सा अधिकारी ने अवगत कराया की जनपद में संचालित गौशालाओं व निराश्रित गोवंशो के संरक्षण के लिए जनपद स्तर पर कंट्रोल रूम बनाया गया है जिस पर आमजन अपनी शिकायतें एवं सुझाव दर्ज कर सकते हैंए प्राप्त शिकतों का संज्ञान लेकर त्वरित कार्यवाही की जाएगी। जनपद में एक भी निराश्रित गोवंश सड़कों पर ना घूमें तथा निराश्रित गोवंश से किसी भी किसान आदि को समस्या ना उत्पन्न हो कंट्रोल रूम का टोल फ्री नंबर इस प्रकार है. 18002701988, 7068185751।

नशे में धुत युवक की पानी में गिरने से मृत्यु

कुरारा (हमीरपुर)। थाना क्षेत्र के डामर गांव में बुधवार को शराब के नशे में पुलिया के नीचे पानी में गिर जाने से युवक की दर्दनाक मौत हो गई। इस घटना से परिजनों में कोहराम मच गया। पुलिस के अनुसार क्षेत्र के डामर गांव निवासी सुनील कोरी (35) दोपहर में सड़क किनारे बनी पुलिया में नशे की हालत में बैठा था। अचानक उसका संतुलन बिगड़ जाने से वह पानी में गिर गया। तथा काफी देर तक पानी में पड़ा रहा जब तक जानकारी हुई तो परिजन उसे लेकर सी एस सी में आए । जहां चिकित्सक ने उसे मृत घोषित कर दिया। मृतक भट्ठे पर मजदूरी कर अपने परिवार का भरण पोषण करता था। उसकी पत्नी सीमा व अर्श 6 व ऋचा 3वर्ष मायके में है। घटना की जानकारी उसे दी गई है।इस घटना से परिजनों में शोक का माहौल व्याप्त है।

खेलते समय चाय से मासूम जली

मौदहा, हमीरपुर। कस्बे के तजर्रुत खान की ढाई साल की बच्ची नवाजिश खेलते समय चाय गिर जाने के कारण गंभीर रूप से हाथ और पैरों में जल गई जिसे परिजनों द्वारा इलाज के लिए कस्बे के सरकारी अस्पताल लाया गया जहां पर बच्ची का इलाज किया जा रहा है।

ठंड से वृद्ध की मृत्यु

कुरारा। क्षेत्र के डामर गांव निवासी वृद्ध की बीती शाम सर्दी के चपेट में आने से दर्दनाक मौत हो गई। क्षेत्र के डामर गांव निवासी सुख्खा अनुरागी सुबह शौच क्रिया करने बाहर खेती की तरफगया था। सर्दी लगने से वह बीमार हो गया। परिजन उसे दोपहर में अस्पताल ले गए जहां चिकित्सक ने उसे मृत घोषित किया। आज शोक के माहौल में अंतिम संस्कार किया गया।

सपाइयों ने मनाई कर्पूरी ठाकुर की जयंती

फर्रुखाबाद। आज आवास विकास स्थित सपा कार्यालय पर बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री एवं भारत रत्न से मरणोपरांत सम्मानित स्वर्गीय कर्पूरी ठाकुर जी का 100वां जन्मदिन शताब्दी वर्ष के रूप में मनाया गया। सपा के जिला अध्यक्ष चंद्रपाल सिंह यादव ने अध्यक्षता करते हुए कहा की कर्पूरी ठाकुर जी पिछड़े समाज से निकले हुए नेता थे।

अधिवक्ता ने मुख्यमंत्री से की पेशकार की शिकायत

संडीला (हरदोई)। तहसील के वरिष्ठ अधिवक्ता ने एसडीएम के पेशकार पर आरोप लगाते हुए जिलाधिकारी से शिकायत की है। जिलाधिकारी को जन सुनवाई के माध्यम से की गयी शिकायत में वरिष्ठ अधिवक्ता उदय प्रताप चौरसिया ने आरोप लगाते हुए कहा कि एसडीएम के पेशकार ने उनके धारा 116 यूपी आरसी 2006 उमा शंकर मिश्रा बनाम सुषमा आदि निवासी ग्राम हकीमपुर संडीला का वाद एसडीएम न्यायिक के कोर्ट में स्थानांत्रित किया गया। इसमें 15 जनवरी को जीडी के माध्यम से 19 जनवरी की तिथि सुनवाई हेतु लगाई गई थी। चौरसिया का आरोप है कि उन्होंनें विपक्षी सुषमा की ओर से आपत्ति लगाई है। उनका आरोप है कि पेशकार द्वारा इसमे संदेहास्पद कार्रवाई की जा रही है। यही नहीं वाद की पत्रावली जो कि तहसील के अभिलेखागार में होनी चाहिए वह पेशकार अपने पास में रखे हुए हैं। डीएम से मांग की है कि इस मामले की जांच कराकर उचित कानूनी कार्रवाई की जाए।

लोग सफाई के लिए सदैव रहें जागरूकः चेयरमैन

प्रतिभागी को पुरस्कृत करते चेयरमैन

संडीला (हरदोई)। नगर में स्वच्छता संगम कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमें चेयरमैन और अधिशासी अधिकारी ने भाग लिया। एचसीएल फाउंडेशन, सीडीसी ट्रस्ट तथा नगर पालिका के द्वारा आयोजित स्वच्छता संगम कार्यक्रम में नगर के आधा दर्जन वॉर्डों में कूड़ा निस्तारण का कार्य शुरू किया गया। सांस्कृतिक कार्यक्रमों यथा गीत, नृत्य, भाषण और नाटक के माध्यम से लोगों को स्वच्छता के प्रति जागरूक किया गया। कार्यक्रम मे चेयरमैन मो. रईस अंसारी, अधिशासी अधिकारी विजेता गुप्ता के अलावा सेनेट्री इंस्पेक्टर राजमंगल सिंह, अवर अभियंता सुनील यादव के अलावा सीडीसी के तौफीक अहमद, विवेक तिवारी, अभिषेक कुमार गुप्ता के अलावा सभासद मो. कलाम, रामसिंह, मो. नसीम तथा सभासद प्रतिनिधि पंकज कुमार आदि मौजूद रहे।

उत्तर प्रदेश स्थापना दिवस जनपद में हर्षोउल्लास के साथ मनाया गया

● सरकार की नीतियों ने समाज के हर तबके को पहुंचाया लाभः डीएम

कानपुर देहात। उत्तर प्रदेश न केवल एक भौगोलिक इकाई है, बल्कि अपनी सामासिक संस्कृति के कारण सम्पूर्ण भारत में एक विशिष्ट स्थान रखता हैए 24 जनवरी 1950 संयुक्त प्रान्त से उत्तर प्रदेश बनने तक एक लम्बी यात्रा इस प्रदेश ने तय की है, यहां की राजनैतिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्र में विशिष्ट उपलब्धियां तो रहीं हैए साथ ही साथ इस प्रदेश ने सम्पूर्ण भारत के समक्ष अपने गंगा.जमुनी तहजीब के कारण एक नई मिशाल भी पैदा की है। रामए कृष्ण का जन्म इसी पावन भूमि पर हुआए बुद्ध ने इसी भूमि को अपनी कर्म स्थलीय बनायाए कबीरए सूरए तुलसीए जैसी कवियों के सन्तवाणियां से यह भूमि ओत.प्रोत रहीं है। आज उत्तर प्रदेश के स्थापना दिवस के अवसर पर सम्पूर्ण प्रदेश में भव्य कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

इसीक्रम में जनपद कानपुर देहात में भी उत्तर प्रदेश स्थापना दिवस को हर्षोउल्लास के साथ मनाया गया। मुख्य कार्यक्रम विकास भवन में आयोजित किया गयाए जिसका जिलाधिकारी आलोक सिंह ने फीता काटकर शुभारंभ कर विभिन्न विभागों द्वारा लगाये गये स्टालों का अवलोकन किया। विभिन्न विभागों ने अपने अपने स्टाल लगायेए जहां पर सरकार द्वारा संचालित विभिन्न योजनाओं के संचालन और उनके क्रियान्वयन को प्रर्दशित किया गया। कृषि विभागए खादी एवं ग्रामोद्योग विभाग, सूचना विभागए उद्यान विभाग, उद्योग विभागए जिला प्रोबेशन, समाज कल्याण इत्यादि की प्रर्दशनियां उल्लेखनीय रहीं। इस अवसर पर पुलिस विभाग द्वारा साइबर सुरक्षा को लेकर प्रर्दशनी का आयोजन किया गयाए जिसमें सामान्य जनता को साइबर क्राइम के बढ़ते हुए घटनाओं से सचेत किया गया और जानकारी दी गयी कि किस तरह साइबर क्राइम से बचा जा सकता है।

एक भारत श्रेष्ठ भारत यात्रा धूमधाम से निकली गई

फर्रुखाबाद। संस्कार भारती द्वारा गणतंत्र दिवस के उपलक्ष्य में एक भारत श्रेष्ठ भारत यात्रा धूमधाम से निकाली गई। यात्रा में सम्पूर्ण भारत की संस्कृति और राष्ट्रीयता की झलक देखने को मिली। बुधबार को नगर के प्राचीन कालीन शिव मंदिर पांडेश्वर नाथ से यात्रा का प्रारंभ हुई। यात्रा में विभिन्न प्रांतों की भेषभूषा में कला साधक व छात्र - छात्राएं कदम ताल करते नजर आए।एक भारत श्रेष्ठ भारत यात्रा में भारत माता जय श्री राम के उद्घोष से पूरा बाजार गूंज उठा। यात्रा का विभिन्न सामाजिक संस्थाओं व्यापारियों ने जगह -जगह पुष्प वर्षा कर स्वागत किया। यात्रा में सबसे आगे साहस इंडिया ग्रुप डी.जे. साउंड पर देश भक्ति गीतों पर संयोजक अमन अवस्थी राष्ट्रीय ध्वज के प्रस्तुति देते नजर आए। इसके ब्रह्मकुमारी बी. के. शोभा बहन के नेतत्व में शिव परिवार के साथ मौजूद रहीं।

जिला गंगा समिति नमामि गंगे की जिला परियोजना अधिकारी निहारिका ने छात्र - छात्राओं के गंगा मेरी शान का संदेश दिया । एशियन कम्प्यूटर सेंटर की प्रशिक्षक आकांक्षा सक्सेना द्वारा मिजोरम, पश्चिम बंगाल, केरल, उड़ीसा प्रांत की वेशभूषा में छात्र- छात्राएं रहीं। सीपी इंटर नेशनल विद्यालय की गुजरात, सरस्वती विद्या मंदिर पंजाब, डी.एस.बी.डी गोवा, स्वामी रामानंद बालिका राजस्थान, सरस्वती शिशु मन्दिर हरियाणा,शिवा नन्द एजुकेशन महाराष्ट्र,कनौडिया उत्तर प्रदेश एस. एल.मेमोरियल भगवा टोली, मार्डन पब्लिक स्कूल जम्मू कश्मीर,सरस्वती विद्या मन्दिर मधु प्रदेश, प्रीतू वर्मा मणिपुर, रोहित शर्मा तमिल नाडु, भारत की विनिन्न नदियों का प्रतीकात्मक स्वरूप महीयशी महादेवी विद्यालय की छात्राएं, स्वामी विवेक नन्द कालेज ऑफ नर्सिंग की छात्र-छात्राएं नर्सिंग ड्रेस में मौजूद रहीं। यात्रा में संघ का घोष , ढोल नगाड़ा, महारानी लक्ष्मीबाई स्नेहा, वीर शिवा जी समर्पित शुक्ला, अयोध्या श्री राम मन्दिर झांकी, भारत माता के स्वरूप में गुंजन मिश्रा स्वरूप रहें। श्री राम मन्दिर अयोध्या झांकी पर पूरा जन समूह गीतों की धुनों पर झूमता नजर आया। रस्तोगी इंटर कालेज, भारतीय इण्टर कालेज स्काउट ड्रेस में रहे। यात्रा में बुंदेलखंड का दिवारी लोक नृत्य,सपेरा -बीन करतब करते हुए आकर्षण का केन्द्र रहे।

अलग-अलग संगठनों ने धूमधाम से मनाई जननायक कर्पूरी ठाकुर की जयंती

● फिर उठा तांबेश्वर चौराहे में मूर्ति स्थापना का मुद्दा

●अधिकारों पर चर्चा कर समाज को शिक्षा की मुख्य धारा से जोड़ने का आहवान

फतेहपुर। स्वतंत्रता संग्राम सेनानी एवं बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री जननायक कर्पूरी ठाकुर की जयंती अलग-अलग संगठनों ने अपने-अपने अंदाज में मनाई। अति पिछड़ा शोषित वंचित कल्याण संगठन के कार्यक्रम में जहां अधिकारों व विचारों पर चर्चा की गई वहीं तांबेश्वर चौराहे में नगर पालिका परिषद की ओर से स्थापित की जा रही कर्पूरी ठाकुर की प्रतिमा का मुद्दा फिर से उठाया गया। उधर अन्य संगठनों के पदाधिकारियों ने भी कर्पूरी ठाकुर को याद कर समाज के लोगों को सम्मानित किया। शहर के पटेल नगर चौराहा स्थित सविता भवन में अति पिछड़ा समाज व सविता महासभा जनपद फतेहपुर के संयुक्त तत्वावधान में महान स्वतंत्रता संग्राम सेनानी, सर्व समाज के गरीबो के मसीहा, सामाजिक न्याय के पुरोधा, गरीब की लाठी के नाम से प्रख्यात, शोषित वंचित समाज व महीलाओं को कर्पूरी फार्मूला के माध्यम से प्रतिनिधित्व दिलाने वाले बिहार राज्य के पूर्व मुख्यमंत्री जन-नायक कर्पूरी ठाकुर का जन्मशती समारोह सविता महासभा के जिला अध्यक्ष राम शंकर सविता की अध्यक्षता में हर्षोल्लास के साथ मनाया गया।

कार्यक्रम का संचालन अति पिछड़ा समाज के जिला अध्यक्ष व सवितामहा सभा के प्रदेश उपाध्यक्ष बुद्धराज धाकड़ी द्वारा किया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ मु0 अतिथि सांसद केन्द्रीय राज्य मंत्री भारत सरकार, विशिष्ट अतिथि राजेन्द्र सिंह पटेल विधायक जहानाबाद, जय कुमार जैकी विधायक बिन्दकी व विकास कुमार गुप्त शाह अयाह तथा

जननायक कर्पूरी ठाकुर की जयंती पर अलग-अलग कार्यक्रमों का दृश्य।

प्रो0 मिथलेश सिंह सविता प्रदेश अध्यक्ष सविता महासभा/अति पिछड़ा शोषित वंचित कल्याण संगठन द्वारा दीप प्रज्जवलन, भारत माता, सुभाष चन्द्र बोस व जन-नायक कर्पूरी ठाकुर की प्रतिमा पर माल्यार्पण/पुष्पार्चन के साथ किया गया। अति पिछड़ा समाज के जिला संरक्षक सतीश शिवहरे व आचार्य राजाराम प्रजापति द्वारा गायत्री मंत्र के साथ सविता वंदना व स्वस्तिवाचन प्रस्तुत किया गया। मुख्य अतिथि/विशिष्ट अतिथियों का माल्यार्पण व तिलक कर अंग वस्त्र प्रदान करते हुए जिला प्रभारी संतराम फौजी, अति पिछड़ा समाज के महा मंत्री सूरजदीन विश्वकर्मा व सविता महा सभा के महामंत्री बृजेश सेन उर्फ गुड्डू, जिला संगठन मंत्री विमल कुमार सविता व युवा प्रदेश उपाध्यक्ष चौधरी सुरेन्द्र कुमार, जिला उपाध्यक्ष मनोज प्रधान व आचार्य कमलेश योगी द्वारा कर्पूरी जी की प्रतिमा युक्त प्रतीक चिन्ह भेट किये गए। कार्यक्रम का संचालन करते हुए बुद्धराज धाकडी द्वारा किया गया।

विधायक जय कुमार जैकी ने कहा कि कर्पूरी जी भारत की आजादी की लड़ाई में सक्रिय भूमिका का निर्वहन करते हुए कई वर्षो तक जेल में रहे तथा आजाद भारत में किसानों, मजदूरों, उपेक्षित शोषित वंचित समाज, मातृ शक्ति, मातृ भाषा व राष्ट्र भाषा को संवैधानिक अधिकार दिलाने हेतु मुख्यमंत्री, उप मुख्यमंत्री, राज्यसभा के सदस्य जैसे संवैधानिक पदो पर रहते हुए 1952 से लेकर 17 फरवरी 1988 तक मृत्युपर्यन्त संघर्षशील रहे। आज उनके योगदान को याद करते हुए देश ने सर्वोत्तम उपाधि भारत रत्न से विभूषित करने का निर्णय लिया है। विशिष्ट अतिथि मिथलेश सिंह सविता ने कहा कि सामाजिक न्याय विरोधी व राष्ट्र विरोधी आसुरी शक्तियों के प्रभाव में आकर संवैधानिक रूप से स्थापित जन-नायक कर्पूरी ठाकुर की प्रतिमा को जिला प्रशासन द्वारा मध्य रात्रि को गायब करा दिया गया था। जिला व प्रदेश संगठन शांति पूर्ण ढंग से प्रतिमा को पुनः स्थापित कराने की कानूनी लड़ाई लड़ रहा है। उच्च न्यायालय इलाहाबाद द्वारा समुचित कार्यवाही किये जाने के सम्बन्ध में आदेश निर्गत किये जा चुके है।

सुप्रीम कोर्ट ने कहा, शिक्षा सांस्कृतिक शक्ति का महत्वपूर्ण स्रोत

एएमयू अल्पसंख्यक दर्जा मामला

भाषा। नई दिल्ली

उच्चतम न्यायालय ने बुधवार को कहा कि शिक्षा, सांस्कृतिक शक्ति का एक बहुत महत्वपूर्ण स्रोत है और यह नहीं कहा जा सकता है कि संविधान लागू होने से पहले की संस्था संविधान के अनुच्छेद 30 के तहत अधिकार का दावा करने की हकदार नहीं है। अनुच्छेद 30 धार्मिक और भाषाई अल्पसंख्यकों के शैक्षणिक संस्थानों की स्थापना और प्रशासन के अधिकार से संबंधित है। प्रधान न्यायाधीश डी. वाई. चंद्रचूड़ की अध्यक्षता वाली सात-सदस्ईय संविधान पीठ अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय (एएमयू) के अल्पसंख्यक दर्जे के जटिल प्रश्न पर दलीलें सुन रही है। पीठ ने कहा कि अनुच्छेद 30 की आवश्यकताओं को पूरा करने वाला कोई भी संस्थान संबंधित अधिकार का दावा करने का हकदार है, भले ही इसकी स्थापना संविधान को अपनाने से पहले की गई हो या उसके बाद। प्रधान न्यायाधीश ने केंद्र सरकार की ओर से पेश हो रहे सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता से कहा, हम यह नहीं कह सकते कि संविधान लागू होने से पहले की कोई संस्था संविधान के अनुच्छेद 30 के तहत अधिकार का दावा करने की हकदार नहीं है। जाहिर है, ऐसे संस्थान तब तक हकदार हैं, जब तक वे दो मानदंडों पर खरा उतरते हों, - पहला, अल्पसंख्यक द्वारा स्थापित और दूसरा, अल्पसंख्यक द्वारा प्रशासित। मेहता ने संविधान पीठ से अनुरोध किया था कि एएमयू अधिनियम, 1920 को संविधान के अनुच्छेद 30 के संदर्भ में न पढ़ा जाए। मेहता ने इस मामले में पांचवें दिन की सुनवाई के दौरान कहा, कृपया 1920 के अधिनियम को अनुच्छेद 30 के संदर्भ में न पढ़ें। यह इतिहास के उस समय की बात है, जब अनुच्छेद 30 नहीं था। भारतीय संविधान वहां नहीं था। अल्पसंख्यक की कोई अवधारणा नहीं थी, मौलिक अधिकारों की कोई अवधारणा नहीं थी। न्यायमूर्ति चंद्रचूड़ ने कहा, वास्तव में, आपका तर्क इस बात पर आधारित है कि जब विश्वविद्यालय की स्थापना 1920 में हुई थी तब यह संप्रदाय पर आधारित संस्थान नहीं था। इसलिए, बाद के घटनाक्रम अर्थात 26 जनवरी, 1950 को संविधान को अपनाना इस कारण से एक सांप्रदायिक संस्थान नहीं बना सकता है क्योंकि आपने उस सांप्रदायिक दर्जे को त्याग दिया था। यह आपकी दलील है। संविधान पीठ में न्यायमूर्ति संजीव खन्ना, न्यायमूर्ति सूर्यकांत, न्यायपूर्ति जे. बी. पारदीवाला, न्यायमूर्ति दीपांकर दत्ता, न्यायमूर्ति मनोज मिश्रा और न्यायमूर्ति सतीश चंद्र शर्मा भी शामिल थे। पीठ ने कहा कि एक व्यक्ति को यह भी समझना होगा कि यह (1920) वह अवधि थी, जब पूर्ण नियंत्रण ब्रिटेन की शाही शक्ति में निहित था। न्यायमूर्ति द्रचूड़ ने कहा कि ब्रिटिश सरकार नहीं चाहती थी कि भारत में कोई भी संस्था इतनी शक्तिशाली हो जाए कि शाही प्रभुत्व की शक्ति पर असर पड़े। न्यायमूर्ति चंद्रचूड़ ने कहा, शिक्षा, सांस्कृतिक शक्ति का एक बहुत महत्वपूर्ण स्रोत है और हमने इसे आजादी से पहले तथा आजादी के बाद भी महसूस किया है। उन्होंने कहा कि कानून ऐसा नहीं है कि कोई संस्थान अनुच्छेद 30 के तहत अधिकार का दावा तभी कर सकता है जब वह 1950 के बाद स्थापित किया गया हो। सुनवाई के दौरान पीठ ने यह भी पूछा कि क्या 1920 से गैर-मुसलमानों को एएमयू का कुलपति या प्रति-कुलपति नियुक्त किया गया है। मेहता ने कहा कि उन्हें बताया गया है कि चार गैर-मुसलमानों को नियुक्त किया गया है। पीठ ने कहा, ऐसा क्यों है कि संविधान के लागू होने से पहले और उसके बाद, लगातार सरकारों द्वारा कुलपतियों के तौर पर प्रमुख पसंद मुस्लिम रहे हैं। यह निश्चित रूप से एक कारक है, जिसे ध्यान में रखना होगा। मेहता ने कहा, क्या सरकार द्वारा किसी विशेष समुदाय को नियुक्त करने से (भले ही ऐसा जरूरी न हो) उस विश्वविद्यालय का चरित्र बदल सकता है? बुधवार को जैसे ही सुनवाई शुरू हुई सॉलिसिटर जनरल ने कहा कि रिकॉर्ड से यह पता चलता है कि एएमयू और बीएचयू (बनारस हिंदू विश्वविद्यालय) दोनों को उस समय तत्कालीन ब्रिटिश सरकार से प्रति वर्ष एक लाख रुपए मिलते थे। उन्होंने कहा, आज की तारीख में, एएमयू को प्रति वर्ष 1,500 करोड़ रुपए मिलते हैं।

उच्च न्यायालय ने चंडीगढ़ प्रशासन का आदेश रद किया, 30 जनवरी को होगा महापौर चुनाव

चंडीगढ़। पंजाब और हरियाणा उच्च न्यायालय ने महापौर चुनाव टालने के चंडीगढ़ प्रशासन के आदेश को बुधवार को रद्द करते हुए कहा कि चुनाव 30 जनवरी को कराए जाएं।चंडीगढ़ के उपायुक्त ने महापौर चुनाव की तारीख 18 जनवरी से स्थगित कर छह फरवरी करने का आदेश दिया था, जिसे चुनौती देने वाली याचिका पर उच्च न्यायालय ने यह फैसला दिया। उपायुक्त महापौर चुनाव कराने के लिए जिम्मेदार प्राधिकारी हैं। याचिकाकर्ता के वकील गुरमिंदर सिंह ने कहा कि जब मामला सुनवाई के लिए आया तो न्यायमूर्ति सुधीर सिंह और न्यायमूर्ति हर्ष बंगर ने प्रशासन के आदेश को रद्द कर दिया। चंडीगढ़ के महापौर, वरिष्ठ उपमहापौर और उप महापौर का चुनाव अब 30 जनवरी को सुबह 10 बजे होगा। पंजाब के महाधिवक्ता सिंह ने कहा, "अदालत ने हमारी याचिका स्वीकार कर ली है"। उन्होंने कहा कि महापौर चुनाव के लिए पीठासीन प्राधिकारी की नियुक्ति उसी दिन की जाएगी। एक सवाल के जवाब में, सिंह ने कहा कि उस दिन चंडीगढ़ नगर निगम कार्यालय में केवल पार्षदों को ही जाने की अनुमति दी जाएगी।

कोर्ट ने हिंदू जोड़ों के बीच सपिंड विवाह पर रोक वाले कानून की संवैधानिक वैधता का बरकरार रखा

नई दिल्ली। दिल्ली उच्च न्यायालय ने हिंदू विवाह अधिनियम के उस प्रावधान की संवैधानिक वैधता को बरकरार रखा है, जो अपने माता-पिता के पूर्वजों के माध्यम से एक-दूसरे से संबद्ध लोगों के बीच विवाह पर रोक लगाता है, जब तक कि उनका रिवाज उन्हें ऐसा करने की अनुमति नहीं देता हो। एक व्यक्ति को सपिंड कहा जा सकता है यदि उसके पास परिवार के मातृ पक्ष में तीन पीढ़ियों के भीतर या पैतृक पक्ष में पांच पीढ़ियों के भीतर अन्य व्यक्ति के साथ एक सामान्य पूर्वज रिश्तेदार है। हिंदू विवाह कानून के तहत सपिंड विवाह निषिद्ध है।

कार्यवाहक मुख्य न्यायाधीश मनमोहन और न्यायमूर्ति मनमीत पी.एस. अरोड़ा की पीठ ने कहा, यदि विवाह में साथी की पसंद को अनियमित छोड़ दिया जाए तो अनियमित और अनाचारपूर्ण संबंध को वैधता मिल सकती है। उच्च न्यायालय ने कहा कि हिंदू विवाह अधिनियम (एचएमए) की धारा-5(वी) (हिंदू विवाह की शर्तें) की संवैधानिक वैधता को चुनौती देने वाली याचिका में कोई दम नहीं है। संबंधित याचिका एक महिला ने दायर की थी। एचएमए की धारा 5(वी) में कहा गया है कि किन्हीं दो हिंदु व्यक्तियों के बीच विवाह संपन्न किया जा सकता है, यदि वे एक-दूसरे के सपिंड नहीं हैं। महिला एक परिवार अदालत के उस फैसले से व्यथित थी, जिसमें कहा गया था कि उसके और उसके दूर के चचेरे भाई के बीच हुई शादी एचएमए के प्रावधान का उल्लंघन करके की गई थी और परिवार अदालत ने उसे अमान्य घोषित कर दिया था।महिला ने निचली अदालत के फैसले को उच्च न्यायालय में चुनौती दी थी, लेकिन उसकी अपील खारिज कर दी गई थी। इसके बाद उन्होंने सपिंड विवाह पर प्रतिबंध लगाने वाले प्रावधान की संवैधानिक वैधता को चुनौती देते हुए उच्च न्यायालय में एक याचिका दायर की। याचिकाकर्ता ने कहा कि सक्षम अदालतों ने इस तथ्य का निष्कर्ष निकाला है कि महिला और पुरुष दोनों एचएमए की धारा 5(वी) के तहत मान्यता प्राप्त सपिंड की निषिद्ध श्रेणी में आते हैं और इसलिए उनकी शादी अमान्य थी। अदालतों ने यह भी माना कि याचिकाकर्ता अपने समुदाय में सपिंड रिश्तों के भीतर विवाह की प्रथा या उपयोग के अस्तित्व को साबित करने में असमर्थ थी। पीठ ने कहा कि प्रावधान को चुनौती देने के लिए कानून की दृष्टि से कोई ठोस आधार अदालत के समक्ष नहीं रखा गया। अदालत ने यह भी कहा कि महिला याचिकाकर्ता एक प्रावधान के तहत लगाए गए वैवाहिक प्रतिबंध को चुनौती देने के लिए भी कोई कानूनी आधार पेश करने में विफल रही है।

अदालत ने कहा कि वह याचिकाकर्ता की इस दलील को स्वीकार करने में असमर्थ है कि यह प्रावधान संविधान के अनुच्छेद 14 के अंतर्गत समानता के अधिकार का उल्लंघन है।

भारत, फ्रांस और यूएई ने अरब सागर के ऊपर किया विशाल हवाई युद्धाभ्यास

नई दिल्ली। भारत, फ्रांस और संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) ने अरब सागर के ऊपर एक विशाल हवाई युद्धाभ्यास किया। यह युद्धाभ्यास क्षेत्र से गुजरते रणनीतिक जलमार्गों पर कई वाणिज्यिक जहाजों को हुती आतंकवादियों द्वारा निशाना बनाए जाने को लेकर बढ़ रही वैश्विक चिंताओं की पृष्ठभूमि में हुआ है। अधिकारियों ने बताया कि मंगलवार को आयोजित युद्धाभ्यास डेजर्ट नाइट में तीन देशों की वायु सेनाओं की कई अग्रिम पंक्ति के विमान और लड़ाकू विमान शामिल हुए।उन्होंने बताया कि युद्धाभ्यास में भारतीय वायु सेना के सुखोई-30 एमकेआई, मिग-29 और जगुआर लड़ाकू विमान के अलावा एडब्ल्यूएसीएस (हवाई प्रारंभिक चेतावनी और नियंत्रण विमान), सी-130-जे परिवहन विमान और हवा में ही विमानों में ईंधन भरने वाले विमान शामिल हुए। भारतीय वायुसेना ने बताया, डेजर्ट नाइट नाम से आयोजित युद्धाभ्यास के दौरान मुख्य रूप से तीनों वायु सेनाओं के बीच तालमेल और पारस्परिकता को मजबूत करने पर जोर था। यह युद्धाभ्यास भारतीय एफआईआर (उड़ान सूचना क्षेत्र) में हुआ और भारतीय वायुसेना के विमानों ने देश के कई ठिकानों से उड़ान भरी। दुनिया भर में सभी हवाई क्षेत्र को एफआईआर में विभाजित किया गया है और उनमें से प्रत्एक को एक नियंत्रक प्राधिकरण द्वारा प्रबंधित किया जाता है जो यह सुनिश्चित करने के लिए जिम्मेदार है कि इसके भीतर उड़ान भरने वाले विमानों को हवाई यातायात सेवाएं प्रदान की जाएं। यह युद्धाभ्यास लाल सागर में वाणिज्यिक जहाजों पर हुती आतंकवादियों के बढ़ते हमलों के बीच हुआ।

बलात्कार पीड़िता की पहचान का मामला

राहुल के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज करने संबंधी याचिका का निपटारा

नई दिल्ली। दिल्ली उच्च न्यायालय ने बुधवार को उस याचिका का निपटारा कर दिया, जिसमें एक कथित बलात्कार पीड़िता की पहचान उजागर करने के लिए कांग्रेस नेता राहुल गांधी के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज करने की मांग की गई थी। अदालत ने राहुल गांधी, पुलिस और सोशल मीडिया मंच एक्स की दलीलों पर गौर करने के बाद इस याचिका का निपटारा कर दिया। किसी बलात्कार पीड़िता की पहचान उजागर करना भारतीय दंड संहिता की धारा 228ए के तहत अपराध है और इस अपराध के लिए दो साल तक की कैद और जुर्माना हो सकता है। दिल्ली पुलिस ने उच्च न्यायालय में कहा कि 2021 में कथित बलात्कार पीड़िता की पहचान उजागर करने वाले ट्वीट को लेकर राहुल गांधी के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज की गई थी और इस संबंध में जांच अभी जारी है। राहुल गांधी के वकील ने कार्यवाहक मुख्य न्यायाधीश मनमोहन और न्यायमूर्ति मनमीत पीएस अरोड़ा की पीठ को बताया कि उन्होंने उस ट्वीट को हटा लिया है, जिसमें उस नाबालिग दलित लड़की की पहचान का खुलासा होता था, जिसकी कथित तौर पर बलात्कार के बाद हत्या कर दी गई थी। सोशल मीडिया मंच एक्स (पहले ट्विटर) के वकील ने अदालत के समक्ष पुष्टि की कि राहुल गांधी ने ट्वीट खुद ही हटा लिया था। अदालत सामाजिक कार्यकर्ता मकरंद सुरेश म्हाडलेकर की 2021 की याचिका पर सुनवाई कर रही थी। याचिकाकर्ता की मांग थी कि एक्स पर लड़की की उसके माता-पिता के साथ तस्वीर पोस्ट कर उसकी पहचान उजागर करने के लिए राहुल गांधी के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज की जाए। विभिन्न पक्षों की दलीलों पर गौर करने के बाद उच्च न्यायालय ने कहा कि याचिका में किए गए अनुरोध से वह संतुष्ट है

ज्ञानवापी मस्जिद परिसर की सर्वे रिपोर्ट सभी पक्षकारों को सौंपने का आदेश

वाराणसी (भाषा)। वाराणसी की जिला अदालत ने ज्ञानवापी मस्जिद परिसर की सर्वे रिपोर्ट सभी पक्षकारों को सौंपे जाने का आदेश दिया। हिन्दू पक्ष के अधिवक्ता मदन मोहन यादव ने पीटीआई-भाषा को बताया कि जिला जज ए के विश्वेश ने अपने आदेश में कहा है कि ज्ञानवापी परिसर की सर्वे रिपोर्ट सभी पक्षकारों को सौंपी जाए। मुस्लिम पक्ष ने इस दौरान जिला जज के समक्ष मांग रखी कि सर्वे की रिपोर्ट पक्षकारों तक ही रहे, उसे सार्वजनिक न किया जाए। इस पर जिला जज ने कहा कि सभी पक्षकार रिपोर्ट को अपने तक रखने और सार्वजनिक न करने का बंध पत्र अदालत में जमा करा कर सर्वे रिपोर्ट प्राप्त करें। यादव ने बताया कि भारतीय पुरातात्विक सर्वेक्षण (एएसआई) ने सिविल जज सीनियर डिवीजन (फास्ट ट्रैक कोर्ट) प्रशांत सिंह की अदालत में आज ज्ञानवापी परिसर की सर्वे रिपोर्ट दाखिल कर दी।

वधावन बंधुओं को दी गई जमानत रद की

कर्ज घोटाला मामला

भाषा। नई दिल्ली

उच्चतम न्यायालय ने करोड़ों रुपए के बैंक कर्ज घोटाला मामले में दीवान हाउसिंग फाइनेंस कॉरपोरेशन लिमिटेड (डीएचएफएल) के पूर्व प्रवर्तकों कपिल वधावन और उनके भाई धीरज वधावन को मिली जमानत बुधवार को रद्द कर दी।

न्यायमूर्ति बेला एम त्रिवेदी और न्यायमूर्ति एस सी शर्मा की पीठ ने कहा कि उच्च न्यायालय और निचली अदालत ने उन्हें जमानत देते हुए त्रुटि की। पीठ ने कहा, हमें यह कहने में कोई हिचक नहीं है कि प्रतिवादी आरोपियों के खिलाफ निर्धारित समयसीमा में आरोपपत्र दाखिल किए जाने और उनके द्वारा किए कथित अपराधों पर विशेष अदालत द्वारा उचित समय पर संज्ञान लिए जाने के बाद, प्रतिवादी इस आधार पर दंड प्रक्रिया संहिता की धारा 167 (2) के तहत जमानत के वैधानिक अधिकार का दावा नहीं कर सकते कि अन्य आरोपियों के खिलाफ जांच अभी चल रही है। उसने वधावन बंधुओं को तुरंत हिरासत में लिए जाने का निर्देश दिया। इससे पहले केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो (सीबीआई) ने कपिल वधावन और उसके भाई धीरज को निचली अदालतों द्वारा वैधानिक जमानत दिए जाने का उच्चतम न्यायालय में विरोध किया था। सीबीआई की ओर से पेश हुए अतिरिक्त सॉलिसिटर जनरल (एएसजी) एस वी राजू ने कहा था कि मामले में आरोपपत्र 90 दिन की वैधानिक अवधि के भीतर दाखिल किया गया लेकिन फिर भी आरोपियों को वैधानिक जमानत दी गई। दंड प्रक्रिया संहिता (सीआरपीसी) के तहत अगर जांच एजेंसी 60 या 90 दिनों की अवधि के भीतर किसी आपराधिक मामले में जांच के निष्कर्ष पर आरोप पत्र दाखिल करने में विफल रहती है तो आरोपी वैधानिक जमानत पाने का हकदार हो जाता है। इस मामले में केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो (सीबीआई) ने प्राथमिकी दर्ज करने के 88वें दिन आरोप पत्र दाखिल किया जिसके बाद निचली अदालत ने आरोपी को जमानत दे दी और दिल्ली उच्च न्यायालय ने आदेश को बरकरार रखा। एएसजी ने कहा था कि अन्य पहलुओं पर और कुछ अन्य आरोपियों के खिलाफ सीबीआई की जांच जारी है और निचली अदालतों ने कहा कि आरोपपत्र अंतिम नहीं है और उन्होंने आरोपियों को जमानत दे दी। उन्होंने कहा कि जांच एजेंसी की याचिका के समर्थन में कई फैसले हैं। इससे पहले 30 मई को दिल्ली उच्च न्यायालय ने करोड़ों रुपए के बैंक ऋण घोटाला मामले में डीएचएफएल प्रवर्तकों को दी गई वैधानिक जमानत को बरकरार रखा था। उच्च न्यायालय ने पिछले साल तीन दिसंबर के निचली अदालत के आदेश को चुनौती देने वाली सीबीआई की याचिका खारिज कर दी थी और कहा था कि उन्हें जमानत देने का निर्णय बेहतर तर्कों और कारणों पर आधारित था। वधावन बंधुओं को पिछले साल 19 जुलाई को इस मामले में गिरफ्तार किया गया था। मामले में 15 अक्टूबर 2022 को आरोप पत्र दाखिल किया गया और इस पर संज्ञान लिया गया। मामले में प्राथमिकी यूनियन बैंक ऑफ इंडिया द्वारा की गई एक शिकायत पर आधारित थी। आरोप है कि डीएचएफएल, उसके तत्कालीन सीएमडी कपिल वधावन, तत्कालीन निदेशक धीरज वधावन और अन्य आरोपी व्यक्तियों ने यूनियन बैंक ऑफ इंडिया के नेतृत्व वाले 17 बैंकों के संघ को धोखा देने के लिए एक आपराधिक साजिश रची और आरोपियों एवं अन्य लोगों ने आपराधिक साजिश के तहत बैंकों के संघ को कुल 42,871.42 करोड़ रुपए के भारी ऋण स्वीकृत करने के लिए प्रेरित किया। शिकायतकर्ता ने आरोप लगाया कि इस घोटाले से बैंकों के संघ को 34,615 करोड़ रुपए का नुकसान हुआ।

तमिलों की एकता को नष्ट करने के लिए जातिगत और धार्मिक मतभेद पैदा किए गए: स्टालिन

मदुरै (तमिलनाडु)। तमिलनाडु के मुख्यमंत्री एम के स्टालिन ने बुधवार को कहा कि तमिलों की एकता को नष्ट करने के लिए जाति और धार्मिक मतभेद पैदा किए गए। मुख्यमंत्री ने लोगों से सांडों को काबू में करने के पारंपरिक खेल जल्लीकट्टू तथा अन्य सांस्कृतिक पर्व तमिलों के तौर पर एकजुट होकर मनाने का आग्रह किया। स्टालिन ने अपने पिता और द्रविड़ मुनेत्र कषगम (द्रमुक) प्रमुख दिवंगत एम करुणानिधि के नाम पर बनाई गई विशाल मल्लभूमि का उद्घाटन करने के बाद अपने संबोधन में यह भी आरोप लगाया कि केन्द्र में सत्तारूढ़ भारतीय जनता पार्टी राज्य में जल्लीकट्टू के आयोजन की अनुमति देने को लेकर नाटक कर रही थी। बाद में उच्चतम न्यायालय ने इस मामले में आयोजन के पक्ष में फैसला दिया। उन्होंने याद किया कि द्रमुक के संस्थापक दिवंगत सीएन अन्नादुराई ने राज्य को तमिलनाडु नाम दिया था (इसे पहले मद्रास प्रेसीडेंसी के नाम से जाना जाता था) वहीं करुणानिधि ने यह सुनिश्चित किया कि तमिल को शास्त्रीय भाषा का दर्जा मिले। मुख्यमंत्री ने कहा कि उनकी सरकार के द्रविड़ मॉडल ने तमिलों की संस्कृति के प्रतीक एस्ताजवहुथल को रेखांकित करने के लिए इस जिले में भव्य मल्लभूमि का निर्माण किया है। जल्लीकट्टू को एस्ताजवहुथल भी कहा जाता है, जिसका अर्थ है सांडों को गले लगाना। स्टालिन ने कहा कि 2014 में ऐसे हालात थे कि राज्य में जल्लीकट्टू आयोजित नहीं किया जा सकता था, तीन वर्ष बाद खेल आयोजित करने की मांग को लेकर चेन्नई के मरीन इलाके में बड़ा विरोध प्रदर्शन किया गया। उन्होंने तत्कालीन अन्नाद्रमुक सरकार पर शांतिपूर्ण प्रदर्शन कर रहे लोगों पर हिंसा का आरोप लगाया। मुख्यमंत्री ने कहा, कोई स्थाई समाधान नहीं निकला। प्रत्एक वर्ष भाजपा नीत केन्द्र सरकार जल्लीकट्टू को मंजूरी देने के नाम पर कोई न कोई नाटक करती थी।

पेज 1 का शेष

भ्रमित सुर...

कहा है कि पंजाब देश में हीरो बनेगा और 2024 के लोकसभा चुनाव में आप 13-0 से जीत हासिल करेगी। बनर्जी का बयान कांग्रेस नेता राहुल गांधी के नेतृत्व में भारत जोड़ो न्याय यात्रा के पश्चिम बंगाल में प्रवेश करने से एक दिन पहले आए हैं। ममता बनर्जी ने हावड़ा जिले में दुमुरजला हैलीपैड पर संवाददाताओं से बातचीत में कहा, मैंने उन्हें (कांग्रेस को) सीटों के बंटवारे पर एक प्रस्ताव दिया था, लेकिन उन्होंने शुरू में ही इसे नकार दिया। हमारी पार्टी ने अब बंगाल में अकेले चुनाव लड़ने का फैसला किया है। नाराज ममता बनर्जी ने कांग्रेस नेता राहुल गांधी की दोस्ती की पेशकश को भी स्पष्ट रूप से यह कहते हुए ठुकरा दिया कि उनकी सबसे पुरानी पार्टी से किसी ने उनसे संपर्क नहीं किया है। राहुल गांधी ने मंगलवार को कहा था कि उनका और उनके परिवार का ममता बनर्जी के साथ अच्छा तालमेल है और उनके साथ बातचीत चल रही है और चीजें जल्द ही ठीक हो जाएंगी। बनर्जी ने यह भी कहा कि पार्टी का राज्य में कांग्रेस से कोई रिश्ता नहीं होगा। बनर्जी ने कहा, मेरी कांग्रेस पार्टी या किसी और के साथ कोई चर्चा नहीं हुई। हमने एक प्रस्ताव दिया था जिसे उन्होंने शुरू से ही अस्वीकार कर दिया। तब से, हमारी पार्टी ने फैसला किया है कि हम पश्चिम बंगाल में अकेले लड़ेंगे यह पार्टी के सदस्यों का निर्णय है और मुझे इसे लेना है। मुख्यमंत्री ने सीटों के बंटवारे पर चर्चा को लेकर मीडिया में आ रही खबरों का भी खंडन किया और कहा कि उन्होंने इस मुद्दे पर कांग्रेस में किसी से भी बात नहीं की है। आगामी लोकसभा चुनाव में भाजपा से टकराने के लिए कुल 28 विपक्षी दलों ने इंडिया गठबंधन का गठन किया था। सूत्रों के अनुसार, ममता की पार्टी की ओर से 2019 के लोकसभा चुनाव में कांग्रेस के प्रदर्शन को देखते हुए उसे केवल दो सीट देने की पेशकश की गई है जिसे लेकर दोनों दलों के बीच खींचतान बढ़ गई है। पश्चिम बंगाल में लोकसभा की 42 सीट हैं। पश्चिम बंगाल में सीट बंटवारे के मुद्दे पर तृणमूल कांग्रेस के साथ गतिरोध के बीच कांग्रेस ने कहा, पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री और तृणमूल कांग्रेस प्रमुख ममता बनर्जी के बिना विपक्षी गठबंधन इंडिया की कल्पना नहीं की जा सकती। पार्टी की भारत जोड़ो न्याय यात्रा के दौरान असम के उत्तरी सलमारा में कांग्रेस महासचिव जयराम रमेश ने संवाददाताओं से बातचीत में यह उम्मीद भी जताई कि पश्चिम बंगाल में विपक्षी गठबंधन इंडिया एकसाथ चुनाव लड़ेगा। रमेश ने कहा, आपने ममता जी का पूरा बयान नहीं पढ़ा है। पूरा बयान है कि हम भाजपा को हराना चाहते हैं और भाजपा को हराने के लिए कोई कदम पीछे नहीं लेंगे। उसी भावना के साथ हम (भारत जोड़ो न्याय यात्रा) पश्चिम बंगाल में प्रवेश कर रहे हैं। भाजपा ने इस मुद्दे पर अपनी प्रतिक्रिया में दावा किया कि बनर्जी का फैसला उनकी हताशा को दर्शाता है और यह इंडिया गठबंधन के लिए मौत की घंटी के समान होगा। ममता बनर्जी ने कहा, राष्ट्रीय स्तर पर हम इंडिया गठबंधन का हिस्सा होने के नाते चुनाव के बाद अपनी रणनीति तय करेंगे। भाजपा को हराने के लिए जो करना होगा, हम करेंगे। राहुल गांधी की अगुवाई वाली भारत जोड़ो न्याय यात्रा के बारे में उन्होंने दावा किया कि कांग्रेस ने उन्हें राज्य में यात्रा के कार्यक्रम के बारे में सूचित नहीं किया है। यह यात्रा बृहस्पतिवार को पश्चिम बंगाल में प्रवेश करेगी। उन्होंने कहा, शिष्टाचार के नाते, क्या उन्होंने (कांग्रेस) मुझे बताया कि वे यात्रा के लिए बंगाल आ रहे हैं, मुझे इसकी जानकारी नहीं है। कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष और टीएमसी के मुखर आलोचक माने जाने वाले अधीर रंजन चौधरी ने कहा कि उनकी पार्टी पश्चिम बंगाल की सत्तारूढ़ पार्टी से सीटों के लिए भीख नहीं मांगेगी। वर्ष 2019 के लोकसभा चुनाव में पश्चिम बंगाल में तृणमूल कांग्रेस ने 22 जबकि कांग्रेस ने दो सीटे जीती थी जबकि भाजपा को 18 सीट मिली थी। पश्चिम बंगाल के लिए भाजपा के सह-प्रभारी और पार्टी के आईटी विभाग के प्रमुख अमित मालवीय ने सोशल मीडिया मंच एक्स पर एक पोस्ट में कहा, पश्चिम बंगाल में अकेले चुनाव लड़ने का ममता बनर्जी का फैसला हताशा का संकेत है। अपनी राजनीतिक जमीन बचाने में असमर्थ होने के कारण वह सभी सीट पर चुनाव लड़ना चाहती है ताकि चुनाव के बाद भी उनकी प्रासंगिकता बनी रहे। राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (राकांपा) के शरद पवार नीत खेमे ने कहा कि बनर्जी की घोषणा किसी रणनीति का हिस्सा हो सकती है और इंडिया गठबंधन भाजपा के खिलाफ एकजुट होकर खड़ा है। वहीं, शिवसेना (यूबीटी) के नेता आदित्य ठाकरे ने कहा कि ममता बनर्जी शेरनी की तरह लड़ रही हैं और उनके राज्य के लिए उनकी लड़ाई महत्वपूर्ण है।

यूपी को...

जिससे लाखों युवा जुड़ रहे हैं। योगी ने कहा कि 2017 के पहले उत्तर प्रदेश की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं थीए वेतन देने के लाले थे। पूरे प्रदेश में अव्यवस्था का तांडव था। प्रदेश के सामने पहचान का संकट था। यहां का युवा अपनी पहचान छुपाने के लिए मजबूर होता था। उन्होंने कहा कि 2017 के बाद जब डबल इंजन की सरकार ने काम करना प्रारंभ किया तो प्रदेश में सुरक्षा का एक बेहतर वातावरण बना। आज परिणाम हमारे सामने है। आज उत्तर प्रदेश के नौजवानों, उद्यमियों और व्यापारियों को देश के अंदर अपनी पहचान छुपाने की आवश्यकता नहीं पड़ती है बल्कि गर्व से खुद को उत्तर प्रदेश का बताते हैं। उन्होंने कहा कि पिछले सात वर्षों में उत्तर प्रदेश ने अपनी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ किया है। इंफ्रास्ट्रक्चर और कनेक्टिविटी के मामले में भी प्रदेश की स्थिति बेहतर हुई है। इस दौरान उन्होंने विभिन्न उत्पादों की प्रदर्शनी लगाए उद्यमियों से बातचीत की और उनका हाल जाना। साथ ही उन्होंने राज्य सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम पुरस्कार, विशिष्ट हस्तशिल्प प्रादेशिक पुरस्कार, संत कबीर राज्य हथकरघा पुरस्कार, उत्तर प्रदेश संस्कृति उत्सव के विजेता और पर्यटन पुरस्कार के तहत कई लोगों को पुरस्कृत किया। इसके अलावा सीएम योगी ने विश्वकर्मा श्रम सम्मान के अंतर्गत टूलकिट और ओडीओपी टूलकिट का भी वितरण किया। कार्यक्रम में सीएम योगी ने लखनऊ की रहने वाली वैज्ञानिक डॉ. ऋतु कारीधाल श्रीवास्तव और कानुपर के नवीन तिवारी को उत्तर प्रदेश गौरव सम्मान सम्मानित किया। डॉ. ऋतु ने भारत के मार्स से ऑर्बिटर मिशन और चंद्रायन के विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। वहीं नवीन तिवारी ने दुनिया में सबसे बड़ा स्वतंत्र मोबाइल एडटेक प्लेटफॉर्म स्थापित किया है, जो उत्तर प्रदेश और भारत के स्थानीय व्यवसायों को राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय दर्शकों से जोड़ता है। उनका लॉक स्क्रीन सॉफ्टवेयर वैश्विक स्तर पर 40 करोड़ से अधिक स्मार्टफोन पर मौजूद है। उद्यमी नवीन ने भारत को विश्व मंच पर स्थापित करने के साथ ही 26 देशों में उपस्थिति दर्ज की है। साथ 3000 लोगों को प्रत्यक्ष रूप से रोजगार दिया जबकि हजारों लोगों को अप्रत्यक्ष रूप से रोजगार दिया है।

केंद्र सरकार ने...

समिति से मंजूरी मांगने के लिए राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों से बड़ी संख्या में प्रस्ताव आने के बाद दिशानिर्देश जारी किए गए। अभयारण्य, बाघ अभयारण्य और बाघ गलियारे में प्रत्येक मोबाइल टावर के निर्माण के लिए 0.02 हेक्टेयर भूमि की आवश्यकता होने का अनुमान है, जो 200 वर्ग मीटर के बराबर है। संभावित चिंताओं को दूर करने के लिए, मंत्रालय ने दिशा निर्देश जारी कर उच्च विकिरण क्षेत्रों को ओवरलैप करने से बचने पर भी जोर दिया है। नए टावरों को मौजूदा टावरों के एक किलोमीटर के दायरे में स्थापित करने के प्रति आगाह किया जाता है। दिशानिर्देश के अनुसार, यदि नए टावर आवश्यक समझे जाते हैं, तो उन्हें पक्षियों के उड़ान पथ में बाधा उत्पन्न होने से बचाने और क्षेत्र के सभी टावरों से संयुक्त विकिरण में वृद्धि को रोकने के लिए सावधानीपूर्वक देखभाल और सावधानियों के साथ खड़ा किया जाना चाहिए। साथ ही, यह सुनिश्चित किया जाएगा कि संरक्षित क्षेत्रों में मोबाइल टावर कनेक्टिविटी का अवैध शिकार जैसे वन और वन्यजीव कानूनों का उल्लंन करने वाले व्यक्तियों द्वारा दुरुपयोग नहीं किया जा रहा हो। इस संबंध में जारी दिशानिर्देशों में संबंधित अधिकारियों के साथ संदिग्ध व्यक्तियों के सभी कॉल डेटा रिकॉर्ड को साझा करना होगा।

लक्षद्वीप...

द्वीपों के प्रशासक प्रफुल्ल पटेल, जिन्हें 2022 में कार्यभार संभालने पर लोगों के एक समूह के गुस्से का सामना करना पड़ा था, लेकिन उनके प्रयासों से लोग राहत महसूस करने लगे हैं। उन्होंने जो कुछ भी लॉन्च किया उसे संदेह के घेरे में आ गया था। यहां तक कि निवासियों को ताजा और गुणवत्तापूर्ण डेयरी उत्पाद उपलब्ध कराने के उनके प्रयासों पर भी आरोप लगे कि वह द्वीपों का भगवाकरण करने की कोशिश कर रहे थे। अगाती, अरेबियनेसिस, कोयास, सुल्सीपाल्मा और पुरूषोत्तमनी झींगा की ऐसी किस्में हैं जिनका आविष्कार डॉ. अजित और उनके शोधकर्ताओं की टीम ने किया है।

कर्पूरी ठाकुर के विचारों को जीवन का हिस्सा बनाएं युवा: प्रधानमंत्री

भाषा। नई दिल्ली

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने बुधवार को कहा कि गणतंत्र दिवस परेड इस बार और विशेष होगी क्योंकि यह देश की महिला शक्ति को समर्पित है और साथ ही यह हमारा 75वां गणतंत्र दिवस भी होगा। उन्होंने यहां एक कार्यक्रम में एनसीसी कैडेट और राष्ट्रीय सेवा योजना (एनएसएस) के स्वयंसेवकों के एक समूह से बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री कर्पूरी ठाकुर के बारे में जानने और उनके आदर्शों को अपने जीवन का हिस्सा बनाने का भी आह्वान किया। इससे उनका व्यक्तित्व नई ऊंचाई पर पहुंचेगा।

प्रधानमंत्री ने युवाओं से यह भी कहा कि वे राष्ट्र प्रथम के मंत्र को अपना मार्गदर्शक सिद्धांत बनाएं। उन्होंने कहा कि उन्हें जेन जेड (जेड पीढ़ी) कहा जा सकता है लेकिन वह उन्हें (युवाओं को) अमृत पीढ़ी कहना पसंद करेंगे। पिछड़े समुदाय से ताल्लुक रखने वाले ठाकुर की सराहना करते हुए मोदी ने कहा कि उन्हें भारत रत्न दिए जाने से युवा पीढ़ी उनके बारे में जानेगी और उनके जीवन से सीख लेगी जो कि आवश्यक है। ठाकुर अत्यधिक गरीबी और सामाजिक असमानता के बीच पैदा हुए, लेकिन वह दो बार बिहार के मुख्यमंत्री बने। समाजवादी नेता हमेशा विनम्र रहे और समाज के हर वर्ग का ध्यान रखा।

मोदी ने कहा कि उनका जीवन सामाजिक न्याय और वंचित वर्गों के उत्थान के लिए समर्पित था। उन्होंने कहा कि उनकी ईमानदारी को एक उदाहरण के रूप में उद्धृत किया जाता है। प्रधानमंत्री ने कहा कि ठाकुर गरीबों के कल्याण और समाज के पिछड़े वर्गों के उत्थान के लिए अपने कार्यों में उनकी सरकार के लिए एक प्रेरणा रहे हैं। मोदी ने कहा कि उनकी सरकार भारत को 2047 तक विकसित राष्ट्र बनाने के लिए काम कर रही है और युवाओं की ऊर्जा से देश की गति तेज होगी। उन्होंने कहा, हमारा संकल्प उनके सभी सपनों को पूरा करना और उनके जीवन को अवसरों से भरा बनाना है। मोदी ने भारत के चंद्र मिशन का उदाहरण देते हुए कहा कि लोगों को विफलताओं से परेशान नहीं होना चाहिए।

मोदी ने कहा, आपकी क्षमता और दृष्टि भारत को नई ऊंचाइयों पर ले जाएगी। मोदी ने छात्रों से अपने स्वास्थ्य, अनुशासन का ध्यान रखने, बुरी आदतों को छोड़ने और अपनी विरासत और संस्कृति पर गर्व करने के लिए कहा। उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय बालिका दिवस भी बुधवार को है और यह भारत की बेटियों के साहस, दृढ़ निश्चय और उपलब्धियों का उत्सव है। उन्होंने कहा कि सरकार ने उन छात्राओं के लिए नए अवसर पैदा किए हैं जो सेना में शामिल होना चाहती हैं। उन्होंने कहा, अब, छात्राओं को भी विभिन्न सैनिक स्कूलों में प्रवेश मिल सकता है।

राष्ट्रपति ने कौशल विकास मंत्रालय की नई इमारत कौशल भवन का उद्घाटन किया

नई दिल्ली। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने बुधवार को यहां कौशल विकास और उद्यमिता मंत्रालय के नए इमारत कौशल भवन का उद्घाटन किया। इस अवसर पर, राष्ट्रपति ने सरकार की विभिन्न पहल.. जैसे पीएम विश्वकर्मा, पीएम जनमन, आजीविका संवर्धन के लिए कौशल अधिग्रहण और ज्ञान जागरूकता, प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना (पीएमकेवीवाई) के लाभार्थियों द्वारा स्थापित प्रदर्शनी स्टाल का दौरा किया और उनके साथ बातचीत की। कौशल भवन की आधारशिला मार्च, 2019 में रखी गई थी। यह मंत्रालय के साथ-साथ इसके सहयोगी संगठनों - प्रशिक्षण महानिदेशालय, राष्ट्रीय व्यावसायिक शिक्षा और प्रशिक्षण परिषद और राष्ट्रीय कौशल विकास निगम के लिए कार्यालय स्थान प्रदान करेगा।

लोकतंत्र के तीनों अंगों के बीच मुद्दों को व्यवस्थित तरीके से सुलझाना होगा: धनखड़

नई दिल्ली। उप राष्ट्रपति जगदीप धनखड़ ने बुधवार को कहा कि लोकतंत्र के तीन प्रमुख अंगों कार्यपालिका, न्यायपालिका और विधायिका के बीच मुद्दे होंगे लेकिन उन्हें व्यवस्थित तरीके से सुलझाना होगा। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि विधायिका के साथ कुछ होमवर्क करने की आवश्यकता है क्योंकि चर्चा और संवाद को व्यवधानों की जगह लेनी चाहिए। आपातकाल लगाए जाने का जिक्र करते हुए उन्होंने इसे भारत के संवैधानिक इतिहास का सबसे काला एवं शर्मनाक काल बताया। उन्होंने कहा, हमारी शासन व्यवस्था में कभी भी ऐसे लोग नहीं थे जो इस स्तर तक गए हों कि लाखों लोगों को उनके मौलिक अधिकारों से वंचित किया जाए और उन्हें जेल में डाला जाए।

धनखड़ ने कहा कि यही वह समय था जब हमें उम्मीद थी कि राज्य का एक अन्य अंग न्यायपालिका ऐसे अवसर पर आगे आएगी। उन्होंने कहा, लेकिन

दुर्भाग्य से न्यायपालिका के लिए भी यह सबसे काला समय था। इस देश के नौ उच्च न्यायालयों ने एक स्वर में एक रुख अपनाया - आपातकाल हो या न हो, लोगों के मौलिक अधिकारों को रोका नहीं जा सकता, वे हमेशा जीवित हैं।

उप राष्ट्रपति के मुताबिक, लोग चाहते थे कि काश, एडीएम, जबलपुर मामले (जो 1975 में भारत में लगाए गए आपातकाल से उत्पन्न हुआ) में उच्चतम न्यायालय ने नौ उच्च न्यायालयों के आदेश को पलटा नहीं होता। उन्होंने कहा कि उस फैसले का हिस्सा रहे दो न्यायाधीशों ने बाद में सार्वजनिक रूप से खेद व्यक्त किया था। धनखड़ ने कहा, लेकिन जब संवैधानिक पदों पर बैठे लोग असफल हो जाते हैं तो कोई अफसोस नहीं किया जा सकता। जब हम संवैधानिक प्राधिकारी की स्थिति में होते हैं, तो हमारे पास कोई बहाना नहीं होता है, हमारे पास भागने का कोई रास्ता नहीं होता है। हमें संविधान द्वारा हम पर किए गए विश्वास पर खरा उतरना होगा। उपराष्ट्रपति कानून मंत्रालय के हमारा संविधान हमारा सम्मान अभियान की शुरुआत के लिए आयोजित एक कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा, संविधान ने हमें सब कुछ दिया है। यदि तीनों संस्थाएं - कार्यपालिका, न्यायपालिका और विधायिका - अपनी निर्धारित सीमा में रहें और उसके अनुसार कार्य करें, तो भारत के प्रतिभाशाली लोग चमत्कार कर सकते हैं। धनखड़ ने कहा कि हर कोई कानून की पहुंच में है, लेकिन कुछ लोग भ्रम की स्थिति में हैं।

रक्षा मंत्रालय ने 14 तेज गश्ती जहाजों के लिए एमडीएल के साथ समझौता किया

नई दिल्ली। रक्षा मंत्रालय ने भारतीय तटरक्षक के लिए 14 तेज गश्ती जहाज (एफपीवी) के अधिग्रहण के उद्देश्य से मुंबई के मझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड (एमडीएल) के साथ अनुबंध पर हस्ताक्षर किए हैं। इन बहुउद्देशीय तेज गश्ती जहाजों को एमडीएल द्वारा स्वदेशी रूप से तैयार, विकसित एवं निर्मित किया जाएगा और इन्हें 63 महीनों में सौंप दिया जाएगा। मंत्रालय ने कहा, रक्षा मंत्रालय ने तटरक्षक के लिए 14 तेज गश्ती जहाजों के अधिग्रहण के उद्देश्य से 24 जनवरी को एमडीएल के साथ अनुबंध पर हस्ताक्षर किए हैं। इसके लिए 1070.47 करोड़ रुपए मूल्य का अनुबंध किया गया है। मंत्रालय ने कहा कि उच्च तकनीकी उन्नत सुविधाओं एवं उपकरणों के साथ ही ए बहुउद्देशीय द्रुतगामी गश्ती जहाज कई भूमिकाओं में सक्षम ड्रोन, वायरलेस से नियंत्रित रिमोट वॉटर रेस्क्यू क्राफ्ट लाइफबॉय और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस क्षमता से लैस होंगे।

कर्पूरी ठाकुर को भारत रत्न देने पर नीतीश ने मोदी सरकार को दिया धन्यवाद

पटना। बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने बुधवार को अपने गुरू कर्पूरी ठाकुर को भारत रत्न से सम्मानित करने के लिए नरेन्द्र मोदी सरकार को धन्यवाद दिया। साथ ही उन्होंने इस बात के लिए केंद्र सरकार पर तंज भी कसा कि उसने यह नहीं माना कि उनकी अथक मांगों के बाद यह कदम उठाया गया। दिवंगत कर्पूरी ठाकुर की 100 वीं जयंती पर यहां जनता दल यूनाइटेड (जदयू) द्वारा आयोजित एक रैली में नीतीश कुमार ने स्पष्ट किया कि सर्वोच्च नागरिक सम्मान हमारी कई मांगों में से केवल एक की पूर्ति है।

उन्होंने कहा, 2007 में जब हम लोगों की सरकार बनी है, तब से हर साल.. पहले, जब कांग्रेस केंद्र में सत्ता में थी, तब भी और अब, जब इनकी सरकार है, तो अब भी हम अनुरोध करते और लिखते रहे कि जननायक कर्पूरी ठाकुर जी को भारत रत्न प्रदान किया जाए। पर ए लोग ऐसा नहीं कर रहे थे और अब कल उन्होंने उन्हें भारत रत्न प्रदान करने की घोषणा कर दी है, तो मुझे खुशी है। मैं इसके लिए केंद्र सरकार और प्रधानमंत्री जी को भी बधाई देता हूं कि उन्होंने हमारी मांग को स्वीकार कर लिया है। अब सबको लगने लगा है कि उनका सम्मान करेंगे, तभी उन्हें कुछ मिल (हासिल) हो सकता है।

नीतीश कुमार ने कहा कि इस रैली में भाग लेने से पहले समस्तीपुर में वह कर्पूरी ठाकुर के पैतृक गांव गए थे, जैसा कि वह उनकी जयंती पर कई वर्षों से करते आ रहे हैं, जहां उन्होंने दिवंगत नेता के बेटे और जदयू महासचिव रामनाथ ठाकुर समेत परिवार के सदस्यों से मुलाकात की। यहां इस कार्यक्रम में रामनाथ ठाकुर नीतीश कुमार के साथ मंचासीन थे। जदयू के राज्यसभा सदस्य रामनाथ ठाकुर की ओर इशारा करते हुए उन्होंने यह भी खुलासा किया, मुझे मेरे भाई रामनाथ ठाकुर ने बताया कि (भारत रत्न की घोषणा के बाद) प्रधानमंत्री ने उन्हें फोन किया था। हालांकि, उन्होंने मुझे फोन नहीं किया फिर भी यहां उपस्थित मीडियाकर्मियों के माध्यम से हम भी उन्हें बधाई दे देते हैं।

कर्पूरी ठाकुर को भारत रत्न से सम्मानित करना गरीबों, पिछड़ों का सम्मान: अमित शाह

भाषा। नई दिल्ली

केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने बुधवार को कहा कि बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री कर्पूरी ठाकुर को भारत रत्न से सम्मानित करने का सरकार का फैसला पिछड़े और दलित समुदायों से जुड़े करोड़ों गरीब लोगों का सम्मान है। केंद्र सरकार ने दो बार बिहार के मुख्यमंत्री रहे कर्पूरी ठाकुर को मंगलवार को देश के सर्वोच्च नागरिक सम्मान से सम्मानित करने की घोषणा की। मोदी सरकार में 27 मंत्रियों के अन्य पिछड़ा वर्ग (ओबीसी) समुदायों से होने का उल्लेख करते हुए शाह ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ओबीसी के विकास के पुरजोर समर्थक रहे हैं।

कर्पूरी ठाकुर के जन्म शताब्दी समारोह को संबोधित करते हुए गृह मंत्री ने कहा कि मोदी सरकार ने ओबीसी की सूची संशोधित की है, राज्यों को उनकी अपनी ओबीसी सूची तैयार करने के अधिकार दिए हैं, आईआईटी और आईआईएम संस्थानों में तथा पेट्रोल पंपों के आवंटन में भी ओबीसी को आरक्षण दिया है। अयोध्या में राम मंदिर प्राण प्रतिष्ठा समारोह का उल्लेख करते हुए शाह ने कहा, प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदीजी ने 22 जनवरी को राम मंदिर प्राण प्रतिष्ठा समारोह के साथ 500 सालों के इंतजार को खत्म किया और अगले ही दिन 23 जनवरी को उन्होंने कर्पूरी ठाकुर जी को भारत रत्न देने का फैसला करके गरीबों के लिए एक अच्छे काम को पूरा किया।

गृह मंत्री अमित शाह ने कहा कि ठाकुर ने प्रशासन और शिक्षा क्षेत्र में हिंदी को बढ़ावा देने के लिए काम किया था और अब मोदी सरकार नई शिक्षा नीति के तहत स्थानीय भाषाओं को प्रोत्साहित कर रही है। उन्होंने कहा कि ठाकुर को मरणोपरांत भारत रत्न से सम्मानित करने की घोषणा करके प्रधानमंत्री ने करोड़ों गरीबों को सम्मान और न्याय दिया है। गृह मंत्री ने कहा कि मोदी सरकार गरीबों और पिछड़े वर्गों के उत्थान के लिए गंभीरता से काम कर रही है। अमित शाह ने कहा कि सरकार ने पिछले 10 वर्षों में तीन करोड़ लोगों को बिजली कनेक्शन दिए हैं, 10 करोड़ लोगों को मुफ्त एलपीजी कनेक्शन दिए हैं, 14 करोड़ लोगों तक नल से जल पहुंचाया है और 80 करोड़ लोगों को मुफ्त अनाज दे रही है।

जदयू विधायक ने रैली में राम मंदिर के खिलाफ की विवादित टिप्पणी

पटना। बिहार में सत्तारूढ़ जनता दल यूनाइटेड (जदयू) के नेताओं को बुधवार को उस समय असहज स्थिति का सामना करना पड़ा जब यहां आयोजित एक रैली को संबोधित करते हुए उसके एक नेता ने अयोध्या में नवनर्मित राम मंदिर के खिलाफ कथित टिप्पणी की। भागलपुर जिले के गोपालपुर विधानसभा क्षेत्र से पार्टी के विधायक गोपाल मंडल ने कथित टिप्पणी यहां पार्टी द्वारा आयोजित अति पिछड़ा सम्मेलन को संबोधित करते हुए की। मंडल पहले भी पत्रकारों से मारपीट और ट्रेन में अधोवस्त्र पहनकर घूमने समेत कई मुद्दों को लेकर चर्चा में रहे हैं। उन्होंने पार्टी अध्यक्ष मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के कार्यक्रम स्थल पर पहुंचने से काफी पहले ही मंच संभाल लिया था। मंडल ने कहा, अयोध्या में राम मंदिर का प्राण प्रतिष्ठा समारोह व्यवस्थित नहीं था। इसे अधूरे ढांचे के अंदर आयोजित किया गया और प्रधानमंत्री अपनी पत्नी के बिना पूजा की वेदी पर बैठे थे। मंडल द्वारा राम मंदिर के खिलाफ विवादित टिप्पणी किए जाने पर उनके ठीक पीछे खड़े जदयू प्रदेश अध्यक्ष उमेश सिंह कुशवाहा ने उन्हें टोका और कान में कुछ बताने की कोशिश की लेकिन उनपर असर होता नहीं दिखा। कुशवाहा ने अंततः मंडल को एक पर्ची दी जिसमें संभवतः उन्हें अपना भाषण संक्षिप्त करने को कहा गया। इसके बाद माइक पर ही मंडल ने कहा, ठीक है, मैं इसे रहने देता हूंअ लेकिन इतना समझाइए मत। हम समझदार हैं। मुझे बोलने से कौन रोक सकता है। हम पांच हजार लोगों को रैली में लाए हैं। रैली में मंडल की टिप्पणी राम मंदिर पर जदयू का रुख पार्टी के राष्ट्रीय सलाहकार और प्रवक्ता केसी त्यागी द्वारा स्पष्ट किए जाने के एक दिन बाद आई है। त्यागी ने संवाददाताओं से कहा था, राम मंदिर का निर्माण उच्चतम न्यायालय के फैसले के अनुसार किया गया। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ने इसे एक राजनीतिक मुद्दा बनाने की कोशिश की है, जिसे हम स्वीकार नहीं करते हैं। हालांकि, उन्होंने यह भी कहा था, हम अपने इंडिया गठबंधन के कुछ सहयोगियों द्वारा मंदिर के बारे में की गई नकारात्मक टिप्पणियों का समर्थन नहीं करते हैं। राम सभी के हैं। हमारे विचारक राम मनोहर लोहिया ने देवताओं के बारे में बहुत अच्छी बातें कही हैं। हमें उम्मीद है कि वेटिकन सिटी और मक्का की तरह अयोध्या भी एक अंतरराष्ट्रीय धार्मिक स्थल के रूप में उभरेगा।

सरकार देश के स्वास्थ्य सेवा परिदृश्य को बदलने को प्रतिबद्ध

नई दिल्ली। स्वास्थ्य मंत्री मनसुख मांडविया ने बुधवार को कहा कि केंद्र सरकार देश के स्वास्थ्य सेवा परिदृश्य के संपूर्ण पहलू को बदलने के लिए प्रतिबद्ध है। इसके साथ ही उन्होंने जोर दिया कि इस सरकार ने कई नए एम्स खोले, मेडिकल कॉलेजों की संख्या लगभग दोगुनी कर दी और 10,000 से अधिक जन औषधि केंद्रों की शुरुआत की है। मांडविया उत्तर प्रदेश के कानपुर में गणेश शंकर विद्यार्थी मेमोरियल मेडिकल कॉलेज में एक सुपर स्पेशलिटी ब्लॉक का वर्चुअल उद्घाटन करने के बाद लोगों को संबोधित कर रहे थे। कानपुर में ऑल इंडिया इंस्टीट्यूट ऑफ स्पीच एंड हियरिंग (एआईआईएसएच) सैटेलाइट सेंटर की आधारशिला भी रखी।

मांडविया ने कहा, यह सुपर स्पेशियलिटी ब्लॉक लोगों को 12 सुपर-स्पेशियलिटी सेवाएं प्रदान करेगा जिससे लोगों को स्थानीय स्तर पर इन विशेष सेवाओं को लेने में मदद मिलेगी,

जिससे उनका बहुमूल्य समय और संसाधनों की बचत होगी। कानपुर में एआईआईएसएच सेंटर उत्तर भारत का पहला ऐसा अत्याधुनिक सेंटर होगा, जो न केवल डॉक्टरों को प्रशिक्षित करेगा बल्कि लोगों की देखभाल भी करेगा।

मांडविया ने कहा, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का सपना है कि एआईआईएसएच मैसूर की तर्ज पर पूरे देश में एआईआईएसएच संस्थान स्थापित किए जाएं। उन्होंने कहा, यह देश के स्वास्थ्य सेवा परिदृश्य के संपूर्ण पहलू को बदलने के लिए केंद्र सरकार की प्रतिबद्धता है... देश में एम्स की संख्या 6 से बढ़कर 23 हो गई है, मेडिकल कॉलेजों की संख्या लगभग दोगुनी होकर 710 हो गई है।

मुंबई में एनसीपी विधायक रोहित पवार के साथ सांसद सुप्रिया सुले ईडी आफिस से निकलते हुए।

कार चालक के अचानक ब्रेक लगाने से ममता के माथे पर चोट लगी

बर्द्धमान। प. बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी के माथे पर बुधवार को यहां उस समय चोट लग गई जब उनकी कार के चालक को एक अन्य वाहन से टकराने से बचाने के लिए अचानक ब्रेक लगाना पड़ा। एक वरिष्ठ अधिकारी ने बताया कि ममता बनर्जी कार में आगे, चालक के बगल में बैठी थीं और उनका माथा सामने के शीशे से टकरा गया। यह हादसा उस समय हुआ जब ममता पूर्वी बर्द्धमान में प्रशासनिक समीक्षा बैठक के बाद कोलकाता लौट रही थीं। बाद में शाम को वह राज्यपाल सीवी आनंद बोस से मिलने राजभवन गईं। ममता बनर्जी को पिछले साल उत्तर बंगाल के सिवोके में हेलीकॉप्टर से उतरते समय घुटने में चोट लग गई थी। कांग्रेस महासचिव जयराम रमेश ने ममता के शीघ्र स्वस्थ होने की कामना की। रमेश इस समय राहुल गांधी की भारत जोड़ो न्याय यात्रा के साथ असम में हैं। उन्होंने सोशल मीडिया मंच एक्स पर कहा, हमने एक कार दुर्घटना में बनर्जी जी को चोट लगने के बारे में अभी सुना।

राजग लोकसभा चुनाव से पहले केरल में राज्यव्यापी पदयात्रा का आयोजन करेगा

तिरुवनंतपुरम। केरल में भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) नीत राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) आगामी लोकसभा चुनाव से पहले जमीनी स्तर की तैयारियों के तहत 27 जनवरी से एक महीने तक राज्यव्यापी पदयात्रा का आयोजन करेगा। पार्टी से जुड़े सूत्रों ने बुधवार को बताया कि इस अभियान का प्राथमिक उद्देश्य लोकसभा चुनाव से पहले राज्य में लोगों से समर्थन मांगना है जहां विपक्षी दलों का दबदबा है। भाजपा अध्यक्ष जेपी नड्डा 27 जनवरी को कासरगोड जिले में पदयात्रा का उद्घाटन करेंगे। भाजपा की केरल इकाई के प्रमुख के. सुरेंद्रन के नेतृत्व में एक महीने तक चलने वाला यह अभियान 27 जनवरी की शाम को थलिप्पदुपु मैदान से शुरू होगा। पार्टी के यहां जारी एक बयान में बताया गया कि इस पदयात्रा को राजग केरल पदयात्रा नाम दिया गया है जो 27 फरवरी को पलक्कड़ में समाप्त होगी। यह पदयात्रा राज्य के विभिन्न जिलों के लोकसभा क्षेत्रों से होकर गुजरेगी। सुरेंद्रन यात्रा के दौरान धार्मिक एवं सामाजिक नेताओं तथा सांस्कृतिक हस्तियों से मिलेंगे और विभिन्न केंद्रीय योजनाओं के लाभार्थियों के साथ बातचीत करेंगे। नड्डा के अलावा केंद्रीय मंत्री और राष्ट्रीय नेता हर दिन विभिन्न जिलों में पदयात्रा का उद्घाटन करेंगे और जनसभा को संबोधित करेंगे। इसमें कहा गया है कि पदयात्रा क्रमशः 9, 10 एवं 12 फरवरी को कोट्टयम, अलप्पुझा एवं तिरुवनंतपुरम निर्वाचन क्षेत्रों से होकर गुजरेगी और केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह राज्य की राजधानी में पदयात्रा का उद्घाटन करेंगे। प्रत्एक निर्वाचन क्षेत्र में विभिन्न क्षेत्रों में अपनी पहचान बनाने वाले लोगों सहित कम से कम 25,000 लोग पदयात्रा में भाग लेंगे।

ईडी ने तृणमूल कांग्रेस नेता शाहजहां शेख के आवास पर फिर से छापेमारी की

कोलकाता। प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) के एक दल पर हमला किए जाने के 19 दिन बाद जांच एजेंसी के अधिकारियों ने कथित तौर पर करोड़ों रुपए के राशन वितरण घोटाला मामले में अपनी जांच के सिलसिले में फरार तृणमूल कांग्रेस नेता शाहजहां शेख के उत्तर 24 परगना जिला स्थित आवास पर बुधवार को फिर छापेमारी की। एक अधिकारी ने यह जानकारी दी। उन्होंने बताया कि ईडी ने घर को सील कर दिया और शेख को राशन वितरण घोटाला मामले की जांच के सिलसिले में 29 जनवरी तक पूछताछ के लिए व्यक्तिगत रूप से पेश होने के लिए नोटिस जारी किया।

अधिकारी ने बताया कि उत्तर 24 परगना जिले में घर के अंदर छह घंटे की तलाशी के दौरान अलमारियों या सूटकेस में कोई महत्वपूर्ण सामग्री नहीं मिली। उन्होंने कहा, ऐसा लगता है कि पिछले एक पखवाड़े के दौरान इस घर से दस्तावेज हटा दिए गए हैं। हमने घर सील कर दिया है। उन्होंने कहा कि ईडी अधिकारियों को कुछ पुराने वीजा-संबंधित कागजात, कुछ अनुबंध संबंधी दस्तावेज और लेखों के अलावा कुछ कपड़े भी मिले। उन्होंने कहा कि पूरे तलाशी अभियान की वीडियोग्राफी ईडी के आठ अधिकारियों में से एक ने की थी।

उन्होंने कहा, हमने शाहजहां को 29 जनवरी को कोलकाता स्थित हमारे कार्यालय में पूछताछ के लिए व्यक्तिगत रूप से पेश होने के लिए कहा है। आज के तलाशी अभियान के बाद संदेशखली में उनके आवास पर इस संबंध में एक नोटिस लगाया गया है। अधिकारी ने बताया कि केंद्रीय सशस्त्र पुलिस बल के 120 से अधिक कर्मियों के साथ पहुंचे ईडी अधिकारियों ने स्थानीय पुलिस और गवाहों के रूप में दो स्थानीय लोगों की उपस्थिति में संदेशखली इलाके में शेख के आवास के दरवाजे तोड़े। उन्होंने बताया कि घर में प्रवेश करने के बाद ईडी अधिकारियों ने अंदर से दरवाजा बंद कर दिया और तलाशी शुरू कर दी।

इससे पहले ईडी अधिकारियों को स्थानीय पुलिस ने तृणमूल कांग्रेस नेता के आवास में प्रवेश करने से रोक दिया था, जिसके बाद पुलिस को वहां तलाशी अभियान चलाने का आदेश दिखाया गया। बशीरहाट जिला पुलिस के एक वरिष्ठ अधिकारी ने बताया, हमें अपने अधिकार क्षेत्र के भीतर किसी भी स्थान पर तलाशी अभियान चलाने के लिए आदेश देखना आवश्यक है। यही नियम है। उन्होंने (ईडी अधिकारियों ने) आदेश दिखाया और उसके बाद हमने उन्हें गेट तोड़ने और अंदर तलाशी शुरू करने की अनुमति दी। हम उनके साथ सहयोग करेंगे और देखेंगे कि उन्हें किसी समस्या का सामना न करना पड़े। उन्होंने कहा कि पुलिस ईडी के साथ सहयोग करेगी और देखेगी कि उन्हें परेशानी न हो।

हिंदू मंदिर प्रबंधन को धमकी देने पर पन्नू के खिलाफ मामला दर्ज किया

अमृतसर। पंजाब पुलिस ने प्रतिबंधित संगठन सिख फॉर जस्टिस के गुरपतवंत सिंह पन्नू के खिलाफ धर्म और नस्ल के आधार पर विभिन्न समूहों के बीच कटुता को बढ़ावा देने के आरोप में एक मामला दर्ज किया है। पुलिस ने बुधवार को बताया कि यह प्राथमिकी 23 जनवरी को अमृतसर के सुल्तानविंड थाने में दर्ज की गई। केंद्रीय गृह मंत्रालय ने पन्नू को गैरकानूनी गतिविधियां (रोकथाम) अधिनियम के तहत आतंकवादी घोषित किया है और सिख फॉर जस्टिस पर प्रतिबंध लगा दिया है।

पन्नू ने सोशल मीडिया में पोस्ट किए गए एक वीडियो में कथित तौर पर दावा किया कि अमृतसर के श्री दुर्गियाना मंदिर का हिंदू धर्म में कोई ऐतिहासिक महत्व नहीं है। खालिस्तान समर्थक नेता ने मंदिर प्रबंधन को अपने गेट बंद करने और उसकी चाबियां स्वर्ण मंदिर प्रशासन को सौंपने की भी कथित तौर पर चेतावनी दी। पुलिस के अनुसार सोशल मीडिया पर पोस्ट वीडियो के आधार पर पन्नू के खिलाफ मामला दर्ज किया गया है। पन्नू के खिलाफ आईटी कानून के साथ ही भारतीय दंड संहिता की धारा 153ए (धर्म, नस्ल के आधार पर विभिन्न समूहों के बीच कटुता को बढ़ावा देना), 153बी (विभिन्न धार्मिक, नस्लीय, भाषाई या क्षेत्रीय समूहों के बीच नफरत को बढ़ावा देने वाले बयान देना) और 505 (अफवाह फैलाना) के तहत मामला दर्ज किया गया है।

इससे पहले 16 जनवरी को पन्नू ने पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत मान और पुलिस महानिदेशक गौरव यादव को परोक्ष रूप से धमकी दी थी। कुछ पत्रकारों को भेजे गए एक ईमेल और पीटीआई-भाषा को प्राप्त दो वीडियो में पन्नू ने मान की तुलना पंजाब के पूर्व मुख्यमंत्री बेअंत सिंह से की थी, जिनकी 31 अगस्त, 1995 को एक बम विस्फोट में हत्या कर दी गई थी। पन्नू ने पंजाब पुलिस के महानिदेशक यादव की तुलना पुलिस अधिकारी गोबिंद राम से की जिनकी 1990 में एक बम विस्फोट में मृत्यु हो गई थी।

फ्रांस के राष्ट्रपति गणतंत्र दिवस पर मुख्य अतिथि होंगे

● भारत यात्रा की शुरुआत जयपुर से करेंगे

भाषा। नई दिल्ली

फ्रांस के राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रों बृहस्पतिवार को भारत के दो-दिवसीय दौरे पर आ रहे हैं और इस यात्रा की शुरुआत वह राजस्थान की राजधानी जयपुर से करेंगे। वह गुलाबी शहर के नाम से मशहूर जयपुर में आमेर का किला, हवा महल और खगोलीय वेधशाला जंतर मंतर जाएंगे। मैक्रों 26 जनवरी को दिल्ली के कर्तव्य पथ पर होने जा रहे 75वें गणतंत्र दिवस समारोह में मुख्य अतिथि होंगे। वह इस भव्य कार्यक्रम में शामिल होने वाले फ्रांस के छठे नेता होंगे। फ्रांस के राष्ट्रपति का जयपुर में करीब छह घंटे रुकने का कार्यक्रम है। मैक्रों प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के साथ रोड शो में भी हिस्सा लेंगे। दोनों नेता भारत-फ्रांस के बीच द्विपक्षीय संबंधों और विभिन्न भू-राजनीतिक घटनाक्रमों पर होटल ताज रामबाग पैलेस में व्यापक बातचीत करेंगे।

पीएमओ ने एक बयान में कहा कि प्रधानमंत्री मोदी शाम करीब साढ़े पांच बजे मैक्रों का स्वागत करेंगे और दोनों नेता जंतर मंतर, हवा महल और अल्बर्ट हॉल संग्रहालय सहित नगर के सांस्कृतिक और ऐतिहासिक महत्व के विभिन्न स्थानों पर जाएंगे। फ्रांस के राष्ट्रपति का विमान बृहस्पतिवार को दोपहर ढाई बजे जयपुर हवाई अड्डे पर उतरेगा और उसी दिन रात आठ बजकर 50 मिनट पर दिल्ली के लिए रवाना होगा। रोड शो शाम छह बजे जंतर-मंतर इलाके से शुरू होगा, वहीं मोदी और मैक्रों के बीच वार्ता शाम सवा सात बजे प्रारंभ होगी। डिजिटल क्षेत्र, रक्षा, व्यापार, स्वच्छ ऊर्जा और भारतीय छात्रों के लिए वीजा मानदंडों को आसान बनाने सहित विभिन्न क्षेत्रों में द्विपक्षीय सहयोग बढ़ाने के तरीकों पर बातचीत केन्द्रित रहेगी।

उम्मीद की जा रही है कि बातचीत के दौरान फ्रांस से 26 राफेल-एम (समुद्री संस्करण) लड़ाकू विमान और तीन स्कार्पीन पनडुब्बियों की खरीद के भारतीय प्रस्ताव पर भी चर्चा होगी। राफेल-एम जेट और तीन स्कार्पीन पनडुब्बियों की खरीद पर बातचीत सही दिशा में आगे बढ़ रही है। अभी यह स्पष्ट नहीं है कि अरबों डॉलर के इन दो सौदों पर मुहर लगने की घोषणा होगी या नहीं। माना जा रहा है कि मोदी और मैक्रों हिंद-प्रशांत क्षेत्र में समुद्री सहयोग बढ़ाने, लाल सागर में हालात, हमास-इजराइल संघर्ष और यूक्रेन युद्ध पर भी चर्चा कर सकते हैं। मैक्रों शुक्रवार को मुख्य अतिथि के तौर पर गणतंत्र दिवस समारोह में शामिल होंगे।

रूस ने यूक्रेन पर लगाया उसके सैन्य विमान को गिराने को आरोप

● विमान में सवार 65 युद्धबंदियों की मौत

भाषा। मॉस्को

रूस के रक्षा मंत्रालय ने बुधवार को यूक्रेन पर उसके सैन्य मालवाहक विमान को मार गिराने का आरोप लगाया। विमान में सवार 65 यूक्रेनियाई युद्धबंदियों सहित 74 लोगों की मौत हो गई। यूक्रेन के अधिकारियों ने रूस के बेलगोरोड सीमा क्षेत्र में दुर्घटना के बारे में रूस के दावों की तुरंत पुष्टि या खंडन नहीं किया। हालांकि, उन्होंने कहा कि वे इस पर गौर कर रहे हैं। एसोसिएटेड प्रेस इस बात की पुष्टि नहीं कर सका कि विमान में कौन सवार थे। गत 700 दिन से चल रहे युद्ध में रूस और यूक्रेन एक दूसरे पर आरोप लगाते रहे हैं और तथ्यों को स्थापित करना अक्सर मुश्किल रहा है क्योंकि युद्ध क्षेत्र में जाना आसान नहीं है। प्रत्एक पक्ष की ओर से जानकारी नियंत्रित है।

सोशल मीडिया पर साझा की गई दुर्घटना की तस्वीरों में दिख रहा है कि बर्फ से ढके एक ग्रामीण इलाके में विमान गिरा और उसमें आग लग गई। रूस के रक्षा मंत्रालय ने बताया कि विमान में 65 युद्धबंदियों के अलावा चालक दल के छह सदस्य और तीन अन्य लोग सवार थे। रूसी राडार ने बेलगोरोड की सीमा से लगे यूक्रेन के खार्किव क्षेत्र से दो यूक्रेनी मिसाइलों के प्रक्षेपण को दर्ज किया। मंत्रालय ने हमले को आतंकवादी कृत्य करार दिया है लेकिन यूक्रेन के हमले को लेकर कोई सबूत साझा नहीं किया है। सरकारी समाचार एजेंसी तास ने एक स्थानीय आपातकालीन सेवा अधिकारी के हवाले से बताया कि अग्निशमन दल, एम्बुलेंस और पुलिस बेलगोरोड के कोरोचान्स्की जिले में दुर्घटनास्थल पर पहुंची।

रूसी सेना ने कहा कि युद्धबंदियों को कैदियों की अदला-बदली के लिए इस क्षेत्र में ले जाया जा रहा था, तभी स्थानीय समयानुसार सुबह 11:15 बजे (भारतीय समयानुसार अपराह्न एक बजकर 45 मिनट पर) विमान को गिरा दिया गया। यूक्रेनियाई सैन्य खुफिया के प्रवक्ता एंड्री युसोव ने मीडिया में पुष्टि की कि कैदियों की अदला-बदली बुधवार को होनी थी, लेकिन ऐसा नहीं हो सका। उन्होंने कहा कि एजेंसी जांच कर रही है कि विमान में यूक्रेनियाई युद्धबंदी थे या नहीं। बयान में कहा गया है कि विमान मॉस्को क्षेत्र के चाकलोव्स्की हवाई क्षेत्र से बेलगोरोड क्षेत्र की ओर जा रहा था, और युद्धबंदियों की अदला-बदली रूस-यूक्रेन सीमा के कोलोटिलोव्का क्रॉसिंग पर होने वाली थी। यह क्रॉसिंग विमान गिरने के स्थान याब्लोनोवो गांव से लगभग 135 किमी (85 मील) पश्चिम में है।

रूसी अधिकारियों और सांसदों ने घटना पर नाराजगी व्यक्त की और सवाल किया कि क्या आगे कैदियों की अदला-बदली होनी चाहिए। कैदियों की हालिया अदाल-बदली संयुक्त अरब अमीरात की मध्यस्थता में इस महीने हुआ था और अब तक का सबसे बड़ा था। इसमें 230 यूक्रेनियाई युद्धबंदियों को 248 रूसी बंदियों के बदले में छोड़ा गयाथा। युद्ध शुरू होने के बाद लगभग पांच महीनों में यह पहला और 49वां कैदियों की अदला-बदली थी। यूक्रेन का खार्किव क्षेत्र और रूस का बेलगोरोड क्षेत्र लंबे समय से लड़ाई का केंद्र रहे हैं। इन इलाकों में विशेष रूप से मिसाइलों और ड्रोन से हवाई हमले होते रहे हैं।

दुर्घटना से कुछ समय पहले बेलगोरोड के गवर्नर व्याचेस्लाव ग्लैदकोव ने अपने टेलीग्राम चैनल पर कहा था कि क्षेत्र में मिसाइल अलर्ट लागू है और निवासियों को सुरक्षित आश्रय लेने की चेतावनी दी जाती है। युद्धबंदियों से निपटने वाले यूक्रेन के समन्वय मुख्यालय ने कहा कि वह दुर्घटना की जांच कर रहा है लेकिन उसने तुरंत कोई जानकारी नहीं दी। इसके बजाय, इसने गैर प्रमाणित जानकारी साझा करने के प्रति आगाह किया। टेलीग्राम चैनल पर जारी बयान में कहा गया, हम इस बात पर जोर देते हैं कि दुश्मन सक्रिय रूप से यूक्रेन के खिलाफ दुष्प्रचार अभियान चला रहा है जिसका उद्देश्य यूक्रेनी समाज को अस्थिर करना है।

रूस के रक्षा मंत्रालय ने कहा कि अधिकारी दुर्घटना के कारणों की जांच कर रहे हैं और एक विशेष सैन्य आयोग दुर्घटनास्थल के लिए रवाना हुआ है। मंत्रालय ने बताया कि विमान में युद्धबंदियों के अलावा चालक दल के छह सदस्य और तीन अन्य सवार थे। रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन के प्रवक्ता दिमित्री पेसकोव ने बुधावार की सुबह संवाददाताओं से कहा कि वह दुर्घटना पर टिप्पणी नहीं कर सकते क्योंकि उनके पास इसके बारे में पर्याप्त जानकारी नहीं है। रूसी सैन्य निर्यात एजेंसी ने बताया कि विमान को सैनिकों, सामान, सैन्य उपकरणों और हथियारों को ढोने के लिए डिजाइन किया गया है और यह 225 सैनिकों को ले जा सकता है। इससे पहले बुधवार को यूक्रेन के राष्ट्रपति वोलोदिमीर जेलेंस्की ने कहा था कि एक बड़े रूसी मिसाइल हमले में 18 लोग मारे गए और 130 अन्य घायल हुए हैं।

उनका दावा है कि इस हमले को यूक्रेन की हवाई सुरक्षा को प्रभावित करने के लिए अंजाम दिया गया। यूक्रेन पर रूस के हमले शुरू होने के 700 दिन पूरे हो गए हैं। जेलेंस्की ने सोशल मीडिया मंच एक्स पर पोस्ट किया, मंगलवार तड़के 40 से अधिक बैलिस्टिक, क्रूज, विमान रोधी और निर्देशित मिसाइलों से तीन यूक्रेनी शहरों के 130 रिहायशी इमारतों पर हमला किया गया। रूस ने यूक्रेन की राजधानी कीव और दूसरे सबसे बड़े शहर खार्किव में हमले तेज कर दिए हैं और यह हमला पिछले कई हफ्तो में सबसे घातक था। इसकी वजह से जेलेंस्की को अपने पश्चिमी सहयोगियों से और अधिक सैन्य मदद की अपील करनी पड़ी है। जेलेंस्की ने देर रात मंगलवार को एक्स पर पोस्ट कर कहा, इस साल, मुख्य प्राथमिकता हमारे शहरों और कस्बों की सुरक्षा के साथ-साथ अग्रिम मोर्चे को मजबूत करने के लिए वायु रक्षा को मजबूत करना है। यूक्रेन के क्षेत्रीय गवर्नर ओलेह सिनीहुबोव ने कहा कि रूसी एस-300 मिसाइलों ने मंगलवार देर रात खार्किव के आवासीय इलाकों पर हमला किया, जिसमें नौ लोग घायल हो गए और कई आवासीय इमारतों को नुकसान पहुंचा।

पश्चिम एशिया में संघर्ष हिंद महासागर में समुद्री वाणिज्यिक यातायात सुरक्षा को प्रभावित कर रहा: भारत

वाशिंगटन। भारत के एक शीर्ष राजनयिक ने मंगलवार को संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद (यूएनएससी) के सदस्यों को बताया कि पश्चिम एशिया में इजराइल और हमास के बीच जारी संघर्ष से हिंद महासागर में समुद्री वाणिज्यिक यातायात सुरक्षा प्रभावित हो रही है, जिसमें भारत से जुड़े जहाजों पर हुए कुछ हमले भी शामिल हैं। संयुक्त राष्ट्र में भारत के उप स्थाई प्रतिनिधि आर. रवींद्र ने यूएनएससी में खुली चर्चा के दौरान अपनी टिप्पणी में कहा, (पश्चिम एशिया में) जारी संघर्ष से हिंद महासागर में समुद्री वाणिज्यिक यातायात की सुरक्षा पर भी असर पड़ रहा है जिसमें भारत से जुड़े जहाजों पर कुछ हमले भी शामिल हैं। रवींद्र ने कहा, यह अंतरराष्ट्रीय समुदाय के लिए बहुत चिंता का विषय है और इसका भारत की ऊर्जा और आर्थिक हितों पर सीधा असर पड़ता है। यह भयावह स्थिति किसी भी पक्ष को लाभ नहीं पहुंचाएगी और इसे स्पष्ट रूप से समझा जाना चाहिए। इस संघर्ष की शुरुआत से ही भारत ने जो संदेश दिया है वह स्पष्ट और सुसंगत है कि मानवीय सहायता की निरंतर आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए यह जरूरी है कि संघर्ष बढ़े नहीं। उन्होंने कहा कि मानवीय स्थिति पर गंभीरता से ध्यान देने की जरूरत है और भारत इस संबंध में संयुक्त राष्ट्र और अंतरराष्ट्रीय समुदाय के प्रयासों का स्वागत करता है। भारत ने गाजा में फलस्तीनी लोगों को राहत सामग्री की खेप पहुंचाई है।

द्वि-राष्ट्र समाधान से इजराइल का इनकार वैश्विक शांति को खतरे में डाल सकता है : संरा प्रमुख

भाषा। संयुक्त राष्ट्र

संयुक्त राष्ट्र प्रमुख एंतोनियो गुतारेस ने मंगलवार को इजराइल को आगाह किया कि प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू का द्वि-राष्ट्र समाधान से इनकार यकीनन संघर्ष को बढ़ाएगा जो पहले ही वैश्विक शांति के लिए खतरा है और हर कहीं अतिवादियों का साहस बढ़ा रहा है। गुतारेस ने इजरायल-हमास युद्ध पर अपनी अब तक की सबसे सख्त भाषा में संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की एक मंत्रिस्तरीय बैठक में कहा एक पूर्ण स्वतंत्र देश का निर्माण करना फलस्तीन के लोगों का अधिकार है और सभी को इसे मान्यता देनी चाहिए, साथ ही द्वि-राष्ट्र समाधान को मानने से किसी के भी इनकार को दृढ़ता से अस्वीकार किया जाना चाहिए।

इतनी बड़ी संख्या में फलस्तीनियों में सही मायनों में स्वतंत्रता, अधिकार और सम्मान नहीं होने से एक-राष्ट्र समाधान का विकल्प .... अकल्पनीय है। संयुक्त राष्ट्र प्रमुख ने लेबनान, यमन, सीरिया, इराक और पाकिस्तान का जिक्र करते हुए यह भी चेतावनी दी कि संघर्ष का असर क्षेत्रीय स्तर पर पड़ने का जोखिम अब वास्तविकता बन रहा है। उन्होंने सभी पक्षों से संयम बरतने का आग्रह किया। युद्ध के बाद फलस्तीनी देश के किसी भी परिदृश्य से नेतन्याहू के इनकार ने इजराइल और उसके सबसे करीबी राष्ट्र अमेरिका के बीच दरार पैदा की है। अमेरिका का कहना है कि द्वि-राष्ट्र समाधान की दिशा में बातचीत होनी चाहिए जहां इजराइल और फलस्तीन शांति से आस-पास रह सकें। अनेक देशों ने इस बात का समर्थन किया है। गुतारेस ने साथ ही मानवीय युद्ध विराम की अपनी लंबित मांग दोहराई। अनेक देश चाहते हैं कि इजराइल और हमास के बीच जारी युद्ध मानवीय आधार पर रुकना चाहिए ताकि जरूरतमंदों को भोजन, पानी और दवाएं आदि पहुंचाई जा सकें। लेकिन संयुक्त राष्ट्र के लिए इजराइल के राजदूत गिलार्ड एर्दान ने युद्ध विराम को खारिज कर दिया और कहा कि हमास फिर से हमला करने और इजराइल को नष्ट करने पर तुला हुआ है और लड़ाई को रोकने से आंतकवादियों को फिर से संगठित होने और हथियार प्राप्त करने में मदद मिलेगी। उन्होंने सुरक्षा परिषद से संघर्ष की जड़ को खत्म करने का अनुरोध किया। एर्दान का कहना है कि फसाद की जड़ ईरान है।

इजराइल-हमास संघर्ष का असर भारत के ऊर्जा और आर्थिक हितों पर पड़ता है : भारत

वाशिंगटन। भारत के एक शीर्ष राजनयिक ने मंगलवार को संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद (यूएनएससी) के सदस्यों को बताया कि पश्चिम एशिया में इजराइल और हमास के बीच जारी संघर्ष से हिंद महासागर में समुद्री वाणिज्यिक यातायात सुरक्षा प्रभावित हो रही है और इसका सीधा असर देश के ऊर्जा एवं आर्थिक हितों पर पड़ रहा है। संयुक्त राष्ट्र में भारत के उप स्थाई प्रतिनिधि आर. रवींद्र ने यूएनएससी में खुली चर्चा के दौरान अपनी टिप्पणी में कहा, (पश्चिम एशिया में) जारी संघर्ष से हिंद महासागर में समुद्री वाणिज्यिक यातायात की सुरक्षा पर भी असर पड़ रहा है भारत से जुड़े जहाजों पर कुछ हमले भी शामिल हैं। यह टिप्पणी लाल सागर में जहाजों पर हूती विद्रोहियों के हमलों में वृद्धि के बीच आई है।

रवींद्र ने हूती विद्रोहियों का नाम लिए बगैर कहा, यह अंतरराष्ट्रीय समुदाय के लिए बहुत चिंता का विषय है और इसका भारत के ऊर्जा और आर्थिक हितों पर सीधा असर पड़ता है। यह भयावह स्थिति किसी भी पक्ष को लाभ नहीं पहुंचाएगी और इसे स्पष्ट रूप से समझा जाना चाहिए। क्षेत्र में समुद्री यातायात की सुरक्षा को लेकर चिंताएं रही हैं। हूतियों ने कहा है कि ए हमले गाजा में इजराइल के युद्ध के जवाब में और फलस्तीनियों के प्रति अपना समर्थन दिखाने के लिए हैं।

इस संघर्ष की शुरुआत से ही भारत ने जो संदेश दिया है वह स्पष्ट और सुसंगत है कि मानवीय सहायता की निरंतर आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए यह जरूरी है कि संघर्ष बढ़े नहीं। मानवीय स्थिति पर गंभीरता से ध्यान देने की जरूरत है और भारत इस संबंध में संयुक्त राष्ट्र और अंतरराष्ट्रीय समुदाय के प्रयासों का स्वागत करता है। भारत ने गाजा में फलस्तीनी लोगों को राहत सामग्री की खेप पहुंचाई है। हमने फलस्तीनी शरणार्थियों के लिए संयुक्त राष्ट्र राहत और कार्य एजेंसी (यूएनआरडब्ल्यूए) को दिसंबर के अंत में 25 लाख अमेरिकी डॉलर सहित 50 लाख अमेरिकी डॉलर की सहायता भी प्रदान की है जो एजेंसी के मुख्य कार्यक्रमों और फलस्तीनी शरणार्थियों को शिक्षा, स्वास्थ्य देखभाल, राहत और सामाजिक सेवाओं में सहयोग करने के मद में है। केवल द्वि-राष्ट्र समाधान ही अंतिम विकल्प है और यही स्थाई शांति प्रदान करेगा जिसकी इजराइल और फलस्तीन के लोग इच्छा रखते हैं और इसके हकदार हैं। सभी पक्षों से तनाव कम करने, हिंसा से दूर रहने, उत्तेजक और तनाव बढ़ाने वाली कार्वाइयों से बचने और सीधी शांति वार्ता को जल्द से जल्द फिर से शुरू करने के लिए स्थितियां बनाने की दिशा में काम करने का आग्रह करते हैं। अमेरिका की नागरिक सुरक्षा, लोकतंत्र और मानवाधिकार मामलों की विदेश उप मंत्री उजरा जेया ने इजराइली नेताओं से अंतरराष्ट्रीय कानून के अनुरूप नागरिक क्षति को कम करने के लिए संभावित सावधानी बरतने का आह्वान किया।

चीन के जियांग्शी प्रांत में इमारत में आग लगने से 39 लोगों की मौत

बीजिंग। पूर्वी चीन के जियांग्शी प्रांत में बुधवार को एक इमारत में आग लगने से कम से कम 39 लोगों की मौत हो गई जबकि नौ लोग घायल हो गए। इमारत में अब भी कुछ लोगों के फंसे होने की आशंका है। आधिकारिक मीडिया ने यह जानकारी दी। सरकारी समाचार एजेंसी शिन्हुआ ने स्थानीय अग्निशमन आपातकालीन मुख्यालय के हवाले से बताया कि शिन्यू शहर में एक दुकान में आग लगी जिसने विकराल रूप ले लिया। एजेंसी ने बताया कि इस हादसे में कम से कम 39 लोग मारे गए और नौ अन्य घायल हो गए। सोशल मीडिया पर प्रसारित वीडियो में इमारत से गहरा धुआं निकलता दिख रहा है। घटनास्थल पर दमकल गाड़ियां और एम्बुलेंस मौजूद हैं। सेंट्रल चाइना टेलीविज़न की रिपोर्ट के अनुसार जिस इमारत में आग लगी, उसमें इंटरनेट कैफे और प्रशिक्षण संस्थान थे। आग लगने का कारण अब तक स्पष्ट नहीं है और इस संबंध में जांच जारी है। चीनी राष्ट्रपति शी चिनफिंग ने ऐसी दुर्घटनाओं की पुनरावृत्ति को रोकने और लोगों के जीवन और संपत्ति की रक्षा के लिए कदम उठाने का आदेश दिया है। चीन में भवन निर्माण और सुरक्षा मानकों को लागू करने में शिथिलता के कारण आग लगने की घटना सामान्य बात है। 20 जनवरी को मध्य चीन के हेनान प्रांत में एक स्कूल छात्रावास में आग लगने से 13 छात्रों की मौत हो गई। पिछले साल नवंबर में, शांक्सी प्रांत में एक कार्यालय में भीषण आग लगने से 26 लोगों की मौत हो गई थी। पिछले अप्रैल में बीजिंग में एक अस्पताल में आग लगने से 29 लोगों की मौत हो गई थी। मृतकों में ज्यादातर मरीज थे।

चीन में भूस्खलन से मरने वाले लोगों की संख्या बढ़कर तीस हुई, दस लापता

बीजिंग। दक्षिण-पश्चिम चीन के दूरस्थ और पर्वतीय क्षेत्र में भूस्खलन के कारण मरने वाले लोगों की संख्या बुधवार को बढ़कर 34 हो गई जबकि 10 व्यक्ति अब भी लापता हैं। चीन के सरकारी मीडिया ने यह जानकारी दी। यह आपदा युन्नान प्रांत के उत्तरपूर्वी हिस्से के लियांगशुई गांव में गत सोमवार तड़के आई। कड़ाके की सर्दी और बर्फबारी के बीच खोज और बचाव अभियान जारी रहा। आपातकालीन प्रबंधन मंत्रालय ने मंगलवार को कहा कि 1,000 से अधिक बचावकर्मी उत्खननकर्ताओं, ड्रोन और श्वान दस्ते की मदद से घटन स्थल पर काम कर रहे थे। सोमवार को जीवित पाए गए दो लोगों का एक स्थानीय अस्पताल में इलाज चल रहा है और उनकी हालत में सुधार है। चीन की सरकारी समाचार एजेंसी शिन्हुआ ने स्थानीय विशेषज्ञों की प्रारंभिक जांच का हवाला देते हुए कहा कि भूस्खलन एक खड़ी चट्टान के ऊपरी हिस्से के ढहने से हुआ था। इसमें यह नहीं बताया गया कि इसके ढहने का क्या कारण था। शिन्हुआ द्वारा पोस्ट की गई हवाई तस्वीरों में दिखाया गया है कि एक भारी सीढ़ीदार पहाड़ का हिस्सा गांव के कई घरों पर गिरा है। 900 से अधिक ग्रामीणों को स्थानांतरित किया गया है।

सुरक्षा चौकी पर आतंकवादियों का हमला, तीन की मौत

पेशावर। पाकिस्तान के अशांत खैबर पख्तूनख्वा प्रांत में आतंकवादियों ने एक सुरक्षा जांच चौकी पर हमला कर कम से कम तीन लोगों की हत्या कर दी। पुलिस ने यह जानकारी देते हुए बताया कि हमले में दो लोग घायल हुए हैं। आतंकवादियों ने दक्षिण वज़ीरिस्तान की सीमा से लगते डिखान जिले में मंगलवार को अबा शहीद जांच चौकी पर हमला किया। हमले में दो मज़दूरों और एक सुरक्षा कर्मी की मौत हो गई। उसने बताया कि थर्मल विज़न कैमरों के जरिए आतंकवादियों की मौजूदगी देखी गई। पुलिस ने बताया कि खोज अभियान के दौरान बुधवार को शव बरामद हुए। पुलिस के मुताबिक, हमले में दो मज़दूर जख्मी हुए हैं जिन्हें डेरा जिला अस्पताल में भर्ती कराया गया है। किसी भी समूह ने हमले की तत्काल जिम्मेदारी नहीं ली है। प्रतिबंधित समूह पाकिस्तान तहरीक-ए-तालिबान (टीटीपी) के साथ 2022 में सरकार का संघर्ष विराम खत्म होने के बाद से मुल्क में सुरक्षा कर्मियों पर हमले बढ़े हैं। आधिकारिक आंकड़ों के मुताबिक, खैबर पख्तूनख्वा में साल 2023 में ही 300 से ज्यादा हमले किए गए हैं और ज्यादातर हमलों की जिम्मेदारी टीटीपी ने ली है जिसकी स्थापना 2007 में हुई थी।

चीन ने ताइवान से संबंध तोड़े जाने के बाद नाउरू के साथ राजनयिक संबंध बहाल किए

बीजिंग। नाउरू के ताइवान के साथ अपने संबंध खत्म किए जाने के बाद चीन ने इस प्रशांत द्वीपीय देश के साथ अपने राजनयिक संबंध बुधवार को औपचारिक रूप से बहाल कर लिए हैं। चीन का यह कदम ताइपे की लोकतांत्रिक सरकार को अलग-थलग करने का प्रयास है। चीन के विदेश मंत्री वांग ई ने नाउरू के विदेश और व्यापार मंत्री लियोनेल एंजीमिया से बीजिंग में मुलाकात की। वांग ने कहा कि संबंधों को बहाल करना दुनिया को एक बार फिर दिखाता है कि एक-चीन सिद्धांत का पालन एक अनूठी ऐतिहासिक प्रवृत्ति है। एंजीमिया के अनुसार, नाउरू इस तथ्य के बावजूद ताइवान को चीन का हिस्सा मानता है कि पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना ने कभी इस द्वीप पर शासन नहीं किया और ताइवान के 2.3 करोड़ लोगों ने बीजिंग के दावों को नकार दिया है। उन्होंने कहा, हम नाउरू और चीन के बीच किए जा रहे व्यावहारिक सहयोग को लेकर उत्साहित हैं।

नाउरू ने ताइवान के राष्ट्रपति चुनाव के महज दो दिन बाद ही 15 जनवरी को यह घोषणा की थी कि वह ताइवान के साथ अपने संबंध खत्म कर रहा है। नाउरू के इस कदम के बाद ताइवान के अब 12 देशों के साथ राजनयिक संबंध रह गए हैं। हालांकि, अमेरिका, जापान और अन्य देशों के साथ उसके मजबूत अनौपचारिक संबंध हैं। अमेरिकी अधिकारियों ने इस फैसले पर नाखुशी जताई। अमेरिका के चीन के साथ राजनयिक संबंध हैं लेकिन वह ताइवान के साथ भी व्यापक पैमाने पर अनौपचारिक संबंध रखता है और उसे अपनी रक्षा के लिए लड़ाकू विमान तथा अन्य हथियार बेचता है। नाउरू ने सबसे पहले 1980 में ताइवान के साथ राजनयिक संबंध स्थापित किए थे फिर 2002 में बीजिंग के साथ संबंध स्थापित किए थे और 2005 में फिर से ताइवान से संबध जोड़ लिए थे।

चीन यह दावा करता रहा है कि ताइवान उसका हिस्सा है और वह उसकी सरकार या उसकी राजनयिक मान्यता, संयुक्त राष्ट्र जैसे वैश्विक निकाय में भागीदारी या विदेशी राजनीतिक संस्थाओं के साथ किसी आधिकारिक संपर्क के अधिकार को मान्यता नहीं देता है। नाउरू सरकार ने ताइवान से संबंध तोड़ने की घोषणा करते हुए एक समाचार विज्ञप्ति में कहा था, यह नीति परिवर्तन नाउरू के लिए विकास के साथ आगे बढ़ने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहला कदम है।

चीन ताइवान की सत्तारूढ़ डेमोक्रेटिक प्राग्रेसिव पार्टी (डीपीपी) को सजा देने के लिए ताइवान के राजनयिक सहयोगियों को अपने पाले में लाने की कोशिश करता रहा है। ताइवान की सत्तारूढ़ पार्टी यथास्थिति बनाए रखने की वकालत करती है जिसके तहत ताइवान की अपनी सरकार हो और उस पर चीन का नियंत्रण न हो। डीपीपी अध्यक्ष साई इंग-वेन के 2016 में शुरुआती चुनाव के बाद से 10 देशों ने ताइपे से संबंध तोड़कर बीजिंग से स्थापित कर लिए हैं। चीन का कहना है कि ताइवान को किसी न किसी बिंदु पर उसके नियंत्रण में आना होगा और उसने अपना दृढ़ संकल्प प्रदर्शित करने के लिए द्वीप के चारों ओर सैन्य अभ्यास किया है।

फ्रांस में किसानों ने निम्न भत्तों, अत्यधिक नियमन के खिलाफ सड़के अवरुद्ध की

पेरिस। फ्रांस के किसानों ने निम्न भत्तों, अत्यधिक नियमन, बढ़ती लागत और अन्य समस्याओं को लेकर बुधवार को देश भर में और ब्रसेल्स में विरोध प्रदर्शन किया। प्रदर्शनकारियों की ओर से लगाए गए एक अवरोधक में एक वाहन की टक्कर से एक किसान और उसकी बेटी की मौत के बाद अनेक क्षेत्रों में सड़कें अवरुद्ध की गईं। किसानों का आरोप है कि कृषि संबंधी नीतियां बेतुकी हैं। विरोध स्वरूप उन्होंने सड़कों पर लगे दिशा सूचक बोर्ड की दिशा भी बदल दी है। कुछ किसान यूरोपीय संघ के मुख्यालय ब्रसेल्स में भी विरोध प्रदर्शन की योजना बना रहे हैं और वहां फ्रांस के किसानों के संघ रूरल कॉर्डिनेशन ने प्रदर्शन का आह्वान किया है। इन प्रदर्शनों को नवनियुक्त प्रधानमंत्री ग्रेब्रिएल अत्तल के लिए पहली प्रमुख चुनौती के तौर पर देखा जा रहा है। अत्तल ने मंगलवार को किसान संघों के प्रतिनिधियों से मुलाकात की थी। इस बैठक के बाद कृषि मंत्री मार्क फेसनेऊने संकट के समाधान के लिए सप्ताह के अंत तक नए प्रस्ताव पेश करने का वादा किया। देश के प्रमुख किसान संघ एफएनएसईए के प्रमुख आर्नाउद रूसो ने कहा कि उनका संगठन बुधवार को 40 जरूरी उपायों की एक सूची जारी करेगा।

राम मन्दिर पर पश्चिमी मीडिया की कवरेज पक्षपातपूर्ण: विहिप

भाषा। वाशिंगटन

अमेरिका, कनाडा और ऑस्ट्रेलिया में विश्व हिंदू परिषद (विहिप) की शाखाओं ने अयोध्या स्थित राम मंदिर में प्राण प्रतिष्ठा समारोह के पक्षपातपूर्ण कवरेज को लेकर अपने-अपने देशों में पश्चिमी मीडिया और मुख्यधारा के मीडिया संस्थानों की मंगलवार को आलोचना की और उन समाचार लेखों को तुरंत हटाने की मांग की। विहिप ने द्वारा जारी एक बयान में कहा गया, विहिप की अमेरिका शाखा मांग करती है कि एबीसी, बीबीसी, सीएनएन, एमएसएनबीसी और अल जजीरा अपनी वेबसाइट से समाचार लेखों को तत्काल हटाएं। हम झूठी सूचना के प्रसार के कारण हिंदू समुदाय को हुई परेशानी के लिए उनसे सार्वजनिक तौर पर माफी मांगने का आह्वान करते हैं।

विहिप अमेरिका ने कहा, हम इन समाचार मंचों से आग्रह करते हैं कि वे ऐतिहासिक संदर्भ और राम मंदिर के निर्माण का समर्थन करने वाले भारतीय उच्चतम न्यायालय के फैसले जैसे सभी प्रासंगिक तथ्यों को शामिल करने के बाद ही लेखों को दोबारा प्रकाशित करें। संगठन ने यह भी कहा कि पक्षपातपूर्ण कवरेज के जरिए झूठी कहानियों के कारण न केवल असामाजिक भावनाओं को बढ़ावा मिलता है, बल्कि शांतिप्रिय, मेहनती और योगदान देने वाले हिंदू अमेरिकी समुदाय के लिए भी खतरा पैदा होता है। उसने कहा कि इस तरह का कार्य गैर-जिम्मेदाराना पत्रकारिता के समान हैं, जिस पर ध्यान दिया जाना चाहिए।

इसी तरह के बयान विहिप कनाडा और विहिप ऑस्ट्रेलिया की ओर से भी जारी किए गए। विहिप कनाडा ने कहा, दुनिया भर में हिंदू समुदाय एक शांतिप्रिय, प्रगतिशील और समावेशी समुदाय है जो वसुधैव कुटुंबकम (यानी पूरी दुनिया एक परिवार है) के मूल्यों में विश्वास रखता है। इस तरह की भ्रामक और तथ्यात्मक रूप से गलत पत्रकारिता का उद्देश्य हिंदू कनाडाई समुदाय के खिलाफ नफरत फैलाना है, जिससे देश में हिंदुओं के प्रति नफरत बढ़ने और शांतिपूर्ण कनाडाई समाज के भीतर अशांति पैदा होने का खतरा है। ऐसा ही बयान विहिप की आस्ट्रेलिया शाखा ने भी जारी किए।

विहिप ऑस्ट्रेलिया ने कहा, हम पूछना चाहते हैं कि क्यों और किस आधार पर एबीसी , एसबीएस और 9न्यूज ने अवनि डायस, मेघना बाली और सोम पाटीदार जैसे हिंदू विरोधियों से पक्षपातपूर्ण प्रतिक्रिया ली और गलत तथ्य पेश किए। हम नहीं मानते कि इन तीनों संस्थानों को कोई ऐसा रिपोर्टर नहीं मिला होगा जो निष्पक्ष और तथ्यात्मक दृष्टिकोण प्रस्तुत कर सके।

पश्चिमी चीन में 7.1 तीव्रता के भूकंप के बाद 12,000 से अधिक लोग बेघर

उचतुरपन (चीन)। चीन के पश्चिमी क्षेत्र में सोमवार को आए भूकंप के कारण 12,000 से अधिक लोग बेघर हो गए हैं और ठंड से बचने के लिए उन्होंने तंबुओं या अन्य आश्रय स्थलों पर शरण ली हुई है। बुधवार को भी भूकंप के बाद झटके (आफ्टरशॉक) जारी रहे। चीन के शिनजियांग क्षेत्र के एक दूरस्थ इलाके में सोमवार देर रात आए 7.1 तीव्रता के भूकंप में अब तक तीन लोगों की मौत हो चुकी है, पांच घायल हैं, और सैकड़ों इमारतें क्षतिग्रस्त हो गई हैं।

कड़कड़ाती ठंड के बीच भूकंप के कारण काफी नुकसान हुआ, लेकिन कजाखस्तान की सीमा के पास स्थित और भूकंप का केंद्र रहे उचतुरपन काउंटी में विरल आबादी होने के कारण जान-माल का नुकसान अपेक्षाकृत कम हुआ है। सरकारी प्रसारणकर्ता सीसीटीवी के फुटेज में दिखाया गया कि सुरक्षित निकाले गए लोगों ने तंबुओं में शरण ली है और ठंड से बचाव के लिए वहां अलाव भी जलाए गए हैं। उचतुरपन के 16 वर्षीय छात्र जियान गेवा ने बताया कि जब भूकंप आया तब वह शौचालय में था। उसने कहा कि पूरा भवन जोर-जोर से हिल रहा था।

जियान ने कहा, मैंने सुरक्षित स्थान की तरफ भागने की कोशिश की। अब उन्होंने अपने दादा के साथ एक स्कूल के छात्रावास में आश्रय लिया हुआ है। उनके अलावा यहां लगभग 200 अन्य लोग भी रह रहे हैं। स्थानीय अधिकारियों ने बताया कि लोगों को घरों में जाने की इजाजत देने से पहले उनके ढांचे की स्थिरता की जांच करने की योजना बनाई गई है। किजिलसु किर्गिज प्रांत के एक अधिकारी ने बताया कि उनके प्रांत में भूकंप के कारण 851 इमारतों को किसी न किसी स्तर पर नुकसान हुआ है। भूकंप के केंद्र के पास वाले क्षेत्र में 93 ढांचे ढह गए हैं और 910 पशु मारे गए हैं। यहां बचाव कार्य के लिए 2,300 से अधिक कर्मियों को तैनात किया है और अक्की काउंटी में 7,338 लोगों को सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाया गया है।

रिश्तेदार को स्टोर पर काम के लिए मजबूर करने पर भारतीय मूल के दपंति दोषी करार

वाशिंगटन। अमेरिका में भारतीय मूल के एक सिख दंपति को एक रिश्तेदार को अपने स्टोर पर लंबे समय तक जबरन काम कराने, शारीरिक रूप से प्रताड़ित करने, धमकी देने और आव्रजन दस्तावेज जब्त करने के मामले में दोषी ठहराया गया है। एक अमेरिकी अधिवक्ता ने यह जानकारी दी। न्याय विभाग ने सोमवार को एक बयान में कहा कि हरमनप्रीत सिंह (30) और कुलबीर कौर (43) को अपने नॉर्थ चेस्टरफील्ड के एक स्टोर में रिश्तेदार से कम वेतन पर जबरन काम कराने और अन्य आरोपों के लिए दोषी पाया गया है।

अदालत के दस्तावेज के अनुसार दंपति ने पीड़ित लड़के को स्कूल में दाखिला दिलाने का वादा करके वर्ष 2018 में अमेरिका बुलाया था। उस समय वह नाबालिग था। अभियोजकों ने बताया कि अमेरिका आने के बाद सिंह और कौर ने पीड़ित से आव्रजन दस्तावेज छीन लिए और उससे जबरन काम कराने लगे। इसके अनुसार पीड़ित को कई दिन तक स्टोर के अंदर ही सोने के लिए मजबूर किया जाता था और उसे खाना तक नहीं दिया जाता था। जब उसने भारत लौटने की बात रखी तो ऐसा करने से करने से इनकार कर दिया तथा वीजा की अवधि से अधिक समय तक रुकने के लिए मजबूर किया।

अभियोजकों ने बताया कि जब पीड़ित ने अपने आव्रजन दस्तावेज मांगे और वहां से निकलने का प्रयास किया तो सिंह ने उसके साथ मारपीट भी की। कई बार जब पीड़ित ने छुट्टी लेने और स्टोर पर काम नहीं करने की इच्छा जताई तो सिंह ने बंदूक दिखाकर उसे धमकाया भी। अभियोजकों ने कहा कि दुर्व्यवहार और जबरन काम कराने का यह सिलसिला मार्च 2018 में शुरू हुआ और मई 2021 तक जारी रहा। न्याय विभाग के नागरिक अधिकार प्रभाग के असिस्टेंट अटॉर्नी जनरल क्रिस्टन क्लार्क ने कहा कि पीड़ित अमेरिका के स्कूल में पढ़ना चाहता था, उसकी इसी इच्छा और भरोसे का सिंह दंपति ने फायदा उठाया तथा फिर अपने लाभ के लिए उसे शारीरिक और मानसिक रूप से प्रताड़ित किया।

वर्जीनिया ईस्टर्न डिस्ट्रिक्ट के लिए अमेरिकी अटॉर्नी जेसिका डी अबेर ने कहा, प्रतिवादी ने अपने लाभ के लिए पीड़ित को अमेरिका में पढ़ाई कराने का लालच दिया। यहां लाने के बाद उसका मानसिक और शारीरिक शोषण किया तथा अपमानजनक स्थिति में रहने के लिए मजबूर किया। इस मामले में आठ मई को सजा स

सूर्यकुमार आईसीसी के सर्वश्रेष्ठ टी20 क्रिकेटर बने

दुबई। भारत के आक्रामक बल्लेबाज सूर्यकुमार यादव को लगातार दूसरे साल अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आईसीसी) ने वर्ष का सर्वश्रेष्ठ टी20 क्रिकेटर चुना है।आईसीसी ने उन्हें इस प्रारूप में भारत के मध्यक्रम की रीढ कहा है। यादव ने 2023 में 50 के करीब औसत और 150 से अधिक की स्ट्राइक रेट से टी20 क्रिकेट में रन बनाए। वह फिलहाल जर्मनी में ग्रोइन की सर्जरी के बाद रिहैबलिटेशन में हैं। वह मार्च में आईपीएल में वापसी कर सकते हैं जिसमें वह मुंबई इंडियंस के लिए खेलेंगे। आईसीसी ने कहा , भारतीय मध्यक्रम की रीढ इस बल्लेबाज ने कई मैच जिताए हैं। लगातार दूसरी बार उन्हें यह पुरस्कार दिया जा रहा है। यादव ने साल की शुरूआत श्रीलंका के खिलाफ सात रन बनाकर की लेकिन उसके बाद लगातार अच्छा प्रदर्शन किया है। आईसीसी ने कहा , वह लगातार 20 . 40 में रन बनाते रहे और वेस्टइंडीज के खिलाफ 44 गेंद में 83 रन बनाए। उन्होंने फ्लोरिडा में वेस्टइंडीज के खिलाफ 45 गेंद में 61 रन बनाए।साल के आखिर में कप्तानी का बोझ होने पर भी उन्होंने अच्छी बल्लेबाजी की।

अब इंग्लैंड के बैजबॉल से होगा भारत की स्पिन बॉल का सामना

भाषा। हैदराबाद

अपनी सरजमीं पर पिछले 12 साल से टेस्ट क्रिकेट में चले आ रहे भारत के दबदबे को कड़ी चुनौती मिलेगी जब आक्रामकता की नई परिभाषा गढने वाली इंग्लैंड टीम से बृहस्पतिवार से शुरू हो रहे पहले टेस्ट में रोहित शर्मा की टीम का सामना होगा। भारत को आखिरी बार अपनी धरती पर 2012 में एलेस्टेयर कुक की कप्तानी वाली इंग्लैंड टीम ने टेस्ट श्रृंखला में 2 . । से हराया था। उसके बाद से भारत ने लगातार 16 श्रृंखलाएं जीती है जिनमें सात में क्लीन स्वीप किया है। इस दौरान भारत ने अपनी मेजबानी में 44 टेस्ट खेले और सिर्फ तीन में पराजय का सामना किया। अगर दबदबे की बात की जाए और अस्सी के दशक की वेस्टइंडीज या उसके बाद की आस्ट्रेलियाई टीम भी कहीं नहीं ठहरती। पिछले एक दशक में इस प्रदर्शन के पीछे अनुकूल पिचों और गेंदबाजों का भी योगदान रहा जिन्हें पता था कि इन पिचों का फायदा कैसे उठाना है। भारत की कामयाबी की गाथा लिखने में आफ स्पिनर रविचंद्रन अश्विन और बाएं हाथ के स्पिनर रविंद्र जडेजा की भी अहम भूमिका रही। टर्न लेने वाली पिच पर पहले मैच में अश्विन और जडेजा एक बार फिर भारतीय चुनौती की अगुवाई करेंगे। इंग्लैंड टीम अतीत में दोनों का सामना कर चुकी है और खास तौर पर अश्विन को लेकर काफी चिंतित होगी।

सैतीस वर्ष के अश्विन में अभी भी 17 साल के युवा जैसा जोश है। वह 2012 से अब तक 46 टेस्ट में 283 विकेट ले चुके हैं। जडेजा को उनका सहयोगी कहा जा सकता है लेकिन अपने आप में भी वह काफी खतरनाक गेंदबाज हें। उनकी सटीक पड़ती गेंदें टर्निंग पिच पर बल्लेबाजों को चकमा देने के लिए काफी हैं। उन्होंने इस दौरान 39 टेस्ट में 191 विकेट लिए हैं। दोनों मिलकर 21 की औसत से 500 के करीब विकेट ले चुके हैं। भारतीय टीम में तीसरे स्पिनर के तौर पर अक्षर पटेल का कुलदीप यादव को उतारा जा सकता है और संभावना अक्षर की अधिक लग रही है। इंग्लैंड टीम को पता है कि भारत में खेलने के लिए कितनी भी तैयारी कम है और इसके लिए उन्हें मानसिक मजबूती की भी जरूरत होगी। उनके लिए राहत की बात यह है कि पहले दो टेस्ट में रन मशीन विराट कोहली नहीं खेलेंगे जो निजी कारणों से बाहर हैं। कोहली ने इंग्लैंड के खिलाफ 28 मैचों में 1991 रन बनाए हैं जिनमें पांच शतक शामिल हैं। मध्यक्रम के बल्लेबाज रजत पाटीदार कोहली के विकल्प के तौर पर हैदराबाद और विशाखापत्तनम टेस्ट के लिए टीम में शामिल होंगे। चौथे और पांचवें नंबर पर श्रेयस अय्यर और केएल राहुल उतर सकते हैं जबकि कोना भरत विकेटकीपिंग करेंगे। इंग्लैंड ने 2022 के आखिर में पाकिस्तान को टेस्ट श्रृंखला में 3 . 0 से हराया लेकिन यहां चुनौती काफी कठिन होगी।

भारत : रोहित शर्मा (कप्तान), शुभमन गिल, यशस्वी जायसवाल, श्रेयस अय्यर, केएल राहुल, केएस भरत, ध्रुव जुरल, रविचंद्रन अश्विन, रविंद्र जडेजा, अक्षर पटेल, कुलदीप यादव, मोहम्मद सिराज, मुकेश कुमार, जसप्रीत बुमराह, आवेश खान

इंग्लैंड : बेन स्टोक्स (कप्तान), रेहान अहमद, जेम्स एंडरसन, गुस एटकिंसन, जॉनी बेयरस्टो, डान लॉरेंस, जाक क्राली, बेन डकेट, बेन फोक्स, टॉम हार्टली, जैक लीच, ओली पोप, ओली रॉबिनसन, जो रूट, मार्क वुड। (मैच का समय : सुबह 9 . 30 से)

युवाओं को मौके कब मिलेंगे, पुजारा-रहाणे कीअनदेखी पर बोले रोहित

हैदराबाद। भारतीय कप्तान रोहित शर्मा ने बुधवार को संकेत दिया कि चेतेश्वर पुजारा और अजिंक्य रहाणे जैसे दिग्गजों का टेस्ट कैरियर लगभग खत्म माना जा सकता है क्योंकि फोक्स युवाओं को अधिक मौके देने पर है। इंग्लैंड के खिलाफ पहले दो टेस्ट में विराट कोहली के बाहर रहने के फैसले के बाद संभावना जताई जा रही थी कि पुजारा या रहाणे को मौका दिया जाएगा लेकिन अजित अगरकर की अध्यक्षता वाली चयन समिति पीछे मुड़कर देखने के मूड में नहीं है। कोहली की जगह रजत पाटीदार को मौका दिया गया। रोहित ने पहले टेस्ट से पूर्व इस फैसले के बारे में कहा , हमने सीनियर खिलाड़ियों को लाने के बारे में सोचा लेकिन फिर युवा खिलाड़ियों को मौके कब मिलेंगे। हमने इस बारे में भी सोचा। उन्होंने हालांकि कहा कि सीनियर खिलाड़ियों को बाहर रखने का फैसला आसान नहीं था। रहाणे ने आखिरी बार भारत के लिए 2023 में वेस्टइंडीज के खिलाफ पोर्ट आफ स्पेन में खेला था जबकि पुजारा को आस्ट्रेलिया के खिलाफ पिछले साल विश्व टेस्ट चैम्पियनशिप फाइनल के बाद बाहर किया गया। रोहित ने कहा , सीनियर खिलाड़ियों को बाहर करने का फैसला आसान नहीं होता। उन्होंने इतने रन बनाए है, इतने मैच जिताए है और उनके पास इतना अनुभव है कि उसे अनदेखा करना मुश्किल होता है। उन्होंने कहा , लेकिन कई बार आपको नए खिलाड़ियों को मौका देना होता है। उन्हे अनुकूल हालात में मौका देने के बाद ही विदेशी सरजमीं पर उतारा जाना चाहिए। मुझे लगता है कि युवाओं को मौके देना महत्वपूर्ण है। पाटीदार ने इंग्लैंड लायंस के खिलाफ अहमदाबाद में अनधिकृत टेस्ट में भारत ए के लिए 151 रन बनाए और दो दिवसीय अभ्यास मैच में 111 रन की पारी खेली। घरेलू क्रिकेट में भी उन्होंने काफी रन बनाए है। रोहित ने यह भी कहा , किसी के लिए दरवाजे बंद नहीं हुए है। फिट रहने और रन बनाने पर किसी को भी मौका मिल सकता है। निश्चित तौर पर टीम प्रबंधन के जेहन में अनुभवी खिलाड़ियों की उम्र भी होगी। रोहित (36), कोहली (35) , आर अश्विन (37) और रविंद्र जडेजा (35) कैरियर के आखिरी पड़ाव पर है।

सिराज की चेतावनी , इंग्लैंड के बैजबॉल खेलने पर दो दिन में खत्म होगा मैच

हैदराबाद। भारतीय तेज गेंदबाज मोहम्मद सिराज का मानना है कि इंग्लैंड की बहुचर्चित बैजबॉल शैली भारतीय हालात में कारगर साबित नहीं होगी और अगर वे इसे आजमाते है तो मैच दो दिन के भीतर ही खत्म हो जाएगा। बैजबॉल आक्रामक बल्लेबाजी की इंग्लैंड की रणनीति है जिसे मुख्य कोच ब्रेंडन मैकुलम के उपनाम बैज से बनाया गया है। पिछले साल इंग्लैंड को इससे काफी सफलता मिली लेकिन समान रूप से टर्न और उछाल लेने वाली भारतीय पिचों पर इसकी असल परीक्षा होगी। सिराज ने जियो सिनेमा से कहा , इंग्लैंड अगर भारतीय हालात में बैजबॉल खेलता है तो मैच डेढ या दो दिन में खत्म हो जाएगा। हर गेंद को पीटना आसान नहीं होता क्योंकि कई बार गेंद टर्न लेती है और कई बार सपाट पड़ती है। उन्होंने कहा , यहां बैजबॉल शायद नजर नहीं आए। अगर फिर भी वे ऐसे खेलते है तो हमारे लिए तो अच्छा ही होगा।

इंग्लैंड की निराशा खत्म ऑफ स्पिनर शोएब बशीर को भारत का वीजा मिला

भाषा। लंदन/ हैदराबाद। इंग्लैंड के पाकिस्तानी मूल के ऑफ स्पिनर शोएब बशीर को भारत के खिलाफ शुरू होने वाली पांच मैचों की टेस्ट श्रृंखला में खेलने के लिए बुधवार को वीजा मिल गया जिससे दौरा करने वाली टीम का हताशाजनक इंतजार खत्म हुआ जिसके कप्तान बेन स्टोक्स ने इस विलंब को निराशाजनक बताया था। इंग्लैंड एवं वेल्स क्रिकेट बोर्ड (ईसीबी) ने यह घोषणा की। ईसीबी ने हैदराबाद में गुरुवार से शुरू होने वाले पहले टेस्ट की पूर्व संध्या पर एक्स पेज पर लिखा, शोएब बशीर को अब वीजा मिल गया है और वह इस हफ्ते के अंत में भारत में टीम के साथ शामिल होने के लिए जाएंगे। हमें खुशी है कि मामला सुलझ गया। भारत और इंग्लैंड के बीच टेस्ट श्रृंखला से पहले बशीर को वीजा मिलने में विलंब से विवाद खड़ा हो गया। 20 वर्ष के आफ स्पिनर बशीर इंग्लिश काउंटी टीम समरसेट के लिए खेलते हैं। वह अबुधाबी में टीम के साथ थे लेकिन वीजा नहीं मिलने से भारत नहीं जा सके और उन्हें इंग्लैंड लौटना पड़ा। बशीर पाकिस्तानी मूल के हैं लेकिन उनका जन्म सरे में हुआ था। स्टोक्स ने विलंब को निराशाजनक बताया था जबकि ब्रिटिश सरकार के प्रवक्ता ने इस युवा खिलाड़ी के साथ उचित बर्ताव की मांग की। प्रथम श्रेणी क्रिकेट में छह मैचों में महज 10 विकेट लेने वाले बशीर का चयन हैरानी का सबब रहा। वह बृहस्पतिवार से शुरू हो रहे पहले टेस्ट में टीम में जगह बनाने के दावेदार नहीं थे। स्टोक्स ने पहले टेस्ट से पूर्व प्रेस कांफ्रेंस में कहा , जब मुझे अबुधाबी में यह खबर मिली तो मैने कहा था कि बशीर को वीजा मिलने तक हमें भारत नहीं जाना चाहिए। लेकिन वह जज्बाती प्रतिक्रिया थी, व्यवहारिक नहीं। मैं बहुत दुखी हूं कि बशीर को यह सब झेलना पड़ रहा है। वहीं ब्रिटिश सरकार के एक अनाम प्रवक्ता ने ईएसपीएन क्रिकइन्फो से कहा कि यह पहली बार नहीं हुआ है जब पाकिस्तानी मूल के नागरिक को भारतीय वीजा मिलने में विलंब हुआ है। उन्होंने कहा , इस मसले की तफ्सील से जानकारी भारत सरकार और शोएब बशीर के पास है। लेकिन हम चाहेंगे कि भारत वीजा प्रक्रिया में ब्रिटिश नागरिकों के साथ उचित बर्ताव करे। हम पहले भी पाकिस्तानी मूल के ब्रिटिश नागरिकों को लेकर यह मसला लंदन में भारतीय उच्चायोग के सामने उठा चुके हैं। भारत ने अभी तक इस मामले पर प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं की है।

परिस्थितियों की वजह से तीन स्पिनरों को चुना गया: स्टोक्स

हैदराबाद। इंग्लैंड के कप्तान बेन स्टोक्स ने भारत के खिलाफ गुरुवार से यहां शुरू होने वाले पहले टेस्ट के लिए एक तेज गेंदबाज और तीन स्पिनरों को अंतिम एकादश में शामिल किया। मार्क वुड को अनुभवी जेम्स एंडरसन की जगह इस मैच के लिए चुना गया और स्टोक्स ने कहा कि डरहम के इस गेंदबाज को 150 किमी प्रति घंटे की रफ्तार से गेंदबाजी करने की काबिलियत के कारण ही तरजीह दी गई। स्टोक्स ने कहा, निश्चित रूप से, वह काफी रफ्तार से गेंदबाजी करता है। वह काफी प्रभावी गेंदबाजी करता है। 90 मील प्रति घंटे की रफ्तार से स्विर्ल होती गेंद के खिलाफ खेलना निश्चित रूप से बहुत मुश्किल होगा। स्टोक्स ने मैच पूर्व प्रेस कांफ्रेंस में कहा, उसका आप छोटे और सटीक स्पैल में इस्तेमाल कर सकते हो और वह इन छोटे स्पैल में काफी तेज गेंदबाजी कर सकता है। लंबे स्पैल की कोई चिंता नहीं है क्योंकि हम उसका इस हफ्ते ऐसे ही इस्तेमाल करने वाले है। एंडरसन जैसे अनुभवी गेंदबाज की अनदेखी से टीम प्रबंधन किस तरह निपट रहा है। इस पर स्टोक्स ने कहा कि एंडरसन ने इसे काफी पेशेवर तरीके से लिया है।

भारत ने चार देशों की हॉकी में फ्रांस से 2-2 से ड्रा खेला

केपटाउन। भारतीय पुरुष हॉकी टीम बुधवार को यहां चार देशों के टूर्नामेंट के दूसरे मैच में उम्मीदों पर खरा उतरने में विफल रही और उसे फ्रांस से 2-2 से ड्रा से अंक बांटने पड़े। भारत के लिए मंदीप सिंह ने आठवें मिनट में और अमित रोहिदास ने 19वें मिनट में गोल दागा जबकि फ्रांस ने वापसी करते हुए टिमोथी क्लेमेंट के 37वें मिनट और बी गैस्पर्ड के 59वें मिनट में किए गए गोल से बराबरी हासिल की। भारतीय टीम ने सोमवार को टूर्नामेंट के शुरूआती मैच में फ्रांस को 4-0 से हराया था।

पडीक्कल, आकाशदीप के दम पर भारत ए ने पहले दिन इंग्लैंड लायंस पर शिकंजा कसा

अहमदाबाद। दाएं हाथ के तेज गेंदबाज आकाशदीप के चार विकेट के चमकदार प्रदर्शन के बाद देवदत्त पडीक्कल के नाबाद 92 रन की बदौलत भारत ए ने बुधवार को यहां चार दिवसीय दूसरे अनौपचारिक टेस्ट के पहले दिन इंग्लैंड लायंस पर शिकंजा कस दिया। इंग्लैंड लायंस का टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करने का फैसला उस पर ही उलटा पड़ गया और भारतीय गेंदबाजों ने मेहमान टीम को 52.4 ओवर में महज 152 रन पर समेट दिया।

नागल को बेंगलुरु ओपन में सीधे प्रवेश मिला

बेंगलुरु। सुमित नागल बुधवार को एटीपी चैलेंजर टूर्नामेंट बेंगलुरु ओपन में सीधे प्रविष्टि हासिल करने वाले एकमात्र भारतीय बने। टूर्नामेंट यहां 10 फरवरी से शुरू होगा। पिछले हफ्ते नागल ने सोमदेव देववर्मन के बाद आस्ट्रेलियाई ओपन के दूसरे दौर में पहुंचने वाला दूसरा भारतीय पुरुष खिलाड़ी बनकर इतिहास रच दिया था।

किरण और लक्ष्य सेन इंडोनेशिया मास्टर्स के दूसरे दौर में, प्रणय और श्रीकांत बाहर

भाषा। जकार्ता

लक्ष्य सेन और किरण जॉर्ज ने बुधवार को यहां इंडोनेशिया मास्टर्स सुपर 500 बैडमिंटन टूर्नामेंट के दूसरे दौर में जगह बनाई लेकिन स्टार खिलाड़ी एच एस प्रणय और किदाम्बी श्रीकांत शुरूआती दौर में हारकर बाहर हो गए। पेरिस ओलंपिक के लिए क्वालीफाई करने की कोशिश में जुटे दुनिया के 19वें नंबर के खिलाड़ी सेन ने चीन के वेंग होंग यांग से मलेशिया ओपन के पहले दौर में मिली हार का बदला चुकता किया। उन्होंने चीन के खिलाड़ी पर 24-22 21-15 से जीत हासिल की। 2022 ओडिशा ओपन और 2023 डेनमार्क मास्टर्स में सुपर 100 खिताब जीतने वाले 23 साल के जॉर्ज ने पहले दौर में एक गेम से पिछड़ने के बाद वापसी करते हुए फ्रांस के टोमा जूनियर पोपोव को 18-21 21-16 21-19 से हरा दिया। प्रकाश पादुकोण बैडमिंटन अकादमी के जॉर्ज ने मंगलवार को दो जीत दर्ज करने के बाद मुख्य ड्रा में प्रवेश किया। अब जॉर्ज की भिड़ंत चीन के लु गुआंग जू से होगी। सेन का सामना अगले दौर में डेनमार्क के मलेशिया ओपन चैम्पियन एंडर्स एंटोनसेन या इंडोनेशिया के चिको औरा ड्वी वारडोयो के बीच होने वाले मुकाबले के विजेता से होगा। दुनिया के आठवें नंबर के खिलाड़ी प्रणय को पहले दौर में सिंगापुर के पूर्व विश्व चैम्पियन लोह कीन यिऊ से 18-21 21-19 10-21 से हार गए। इस महीने के शुरू में इंडिया ओपन सुपर 750 के सेमीफाइनल में पहुंचे प्रणय मलेशिया ओपन सुपर 1000 टूर्नामेंट के भी पहले दौर में हार गए थे। प्रणय (31 वर्ष) ने पिछले साल एशियाई खेलों और विश्व चैम्पियनशिप में कांस्य पदक जीता था। पूर्व नंबर एक खिलाड़ी श्रीकांत ने मलेशिया के 10वीं रैंकिंग के ली जि जिया को कड़ी चुनौती दी लेकिन वह 54 मिनट तक चले मुकाबले में 21-19 14-21 11-21 से हार गए। वह सत्र में लगातार दूसरी दफा पहले दौर से बाहर हुए।

भारत ने एफआईएच हॉकी 5 में महिला विश्वकप में पोलैंड को हराया

मस्कट। दीपिका सोरेंग और मुमताज खान के दो दो गोल की मदद से भारतीय महिला हॉकी टीम ने एफआईएच हॉकी5 महिला विश्व कप में बुधवार को पूल सी के पहले मैच में पोलैंड को 5 . 4 से हराया। मुमताज ने चौथे और 23वें मिनट में गोल किया जबकि दीपिका ने छठे और 29वें मिनट में गोल दागा। मरियाना कुजूर ने 33वें मिनट में गोल किया। पोलैंड के लिए जूलिया के (आठवां), कप्तान मारलेना रिबाचा (10वां), पाउला स्लाविंस्का (27वां) और मोनिका पोलव्जाक (29वां) ने गोल दागे। भारत ने चौथे ही मिनट में मुमताज के गोल पर बढत बना ली। इसके दो मिनट बाद दीपिका ने भारत की बढत दुगुनी कर दी।

अल्काराज को बाहर कर आस्ट्रेलियाई ओपन के सेमीफाइनल में पहुंचे ज्वेरेव

मेदवेदेव से भिड़ेंगे

मेलबर्न (आस्ट्रेलिया)। छठे वरीय एलेक्जेंडर ज्वेरेव ने बुधवार रात दूसरी रैंकिंग पर काबिज कार्लोस अल्काराज को हराकर आस्ट्रेलियाई ओपन टेनिस ग्रैंडस्लैम के सेमीफाइनल में प्रवेश किया जिसमें उनका सामना दो बार फाइनल में पहुंचे दानिल मेदवेदेव से होगा। ओलंपिक चैम्पियन ज्वेरेव तीसरे सेट में पिछड़ गए और सर्विस का मौका चूक गए लेकिन उन्होंने चौथे सेट में मिले मौके को गंवाया नहीं और 6-।, 6-3, 6-7 (2), 6-4 से जीत दर्ज की। अल्काराज ने पिछले साल विम्बलडन जीता था और वह 2023 में ग्रैंडस्लैम मैच में 10 बार के आस्ट्रेलियाई ओपन विजेता नोवाक जोकोविच को हराने वाले एकमात्र खिलाड़ी थे। लेकिन 20 साल के स्पेनिश खिलाड़ी को इस बार यह मौका नहीं मिलेगा। यह ज्वेरेव की ग्रैंडस्लैम में शीर्ष पांच रैंकिंग में काबिज खिलाड़ी पर पहली जीत है और वह सातवीं बार मेजर टूर्नामेंट के सेमीफाइनल में पहुंचे। आस्ट्रेलिया में दो बार फाइनल में पहुंचे तीसरी रैंकिंग के खिलाड़ी मेदवेदेव ने नौवीं वरीयता प्राप्त हुबर्ट हुर्काक्ज को 7-6 (4), 2-6, 6-3, 5-7, 6-4 से हराकर चार साल में तीसरी बार सेमीफाइनल में प्रवेश किया। दूसरे सेमीफाइनल में जोकोविच का सामना यानिक सिनर से होगा। मेलबर्न पार्क में 11वें दिन 12वीं वरीय झेंग किनवेन और यूक्रेन की क्वालीफायर डायना यास्त्रेमस्का ने महिला क्वार्टरफाइनल जीत लिए और अब दोनों एक दूसरे के खिलाफ अपना पहला ग्रैंडस्लैम फाइनल खेलेंगी। झेंग ने अन्ना कालिन्सकाया को 6-7 (4), 6-3, 6-। से हराया जबकि यास्त्रेमस्का ने लिंडा नोस्कोवा को 6-3, 6-4 से पराजित किया।

आस्ट्रेलियाई ओपन सेमीफाइनल में पहुंचे बोपन्ना अब सबसे उम्रदराज नंबर एक खिलाड़ी बनेंगे

भाषा। मेलबर्न

भारत के रोहन बोपन्ना अपने जोड़ीदार मैथ्यू एबडेन के साथ आस्ट्रेलियाई ओपन के सेमीफाइनल में पहुंच गए हैं और पुरूष युगल रैंकिग में नंबर एक पर काबिज होने वाले सबसे उम्रदराज खिलाड़ी होंगे। 43 वर्ष के बोपन्ना टूर्नामेंट से पहले विश्व रैंकिंग में तीसरे स्थान पर थे। उन्होंने आस्ट्रेलिया के एबडेन के साथ छठी वरीयता प्राप्त अर्जेंटीना के मैक्सिमो गोंजालेस और आंद्रेस मोल्तेनी को करीब पौने दो घंटे तक चले क्वार्टर फाइनल में 6 . 4, 7 . 6 से हराया। अब उनका सामना थॉमस माचाक और झिंझेन झांग की गैर वरीय जोड़ी से होगा। टूर्नामेंट के आखिर में सोमवार को बोपन्ना युगल रैंकिंग में शीर्ष पर पहुंच जाएंगे। इससे पहले अमेरिका के राजीव राम अक्टूबर 2022 में 38 वर्ष की उम्र में शीर्ष रैंकिंग पर पहुंचे थे। एबडेन रैंकिंग में दूसरे स्थान पर पहुंचेंगे। बोपन्ना 2013 में पहली बार विश्व रैंकिंग में तीसरे स्थान पर पहुंचे थे। वह युगल रैंकिंग में शीर्ष पर पहुंचने वाले लिएंडर पेस, महेश भूपति और सानिया मिर्जा के बाद तीसरे भारतीय होंगे। वह अमेरिका के आस्टिन क्राइजेक से शीर्ष स्थान लेंगे जो क्रोएशिया के इवान डोडिज के साथ दूसरे दौर में हार गए थे। बोपन्ना ने 2017 में कनाडा की गैब्रियला डाब्रोवस्की के साथ फ्रेंच ओपन मिश्रित युगल खिताब जीता। वह पुरूष युगल में 2010 अमेरिकी ओपन में पाकिस्तान के ऐसाम उल हक कुरैशी के साथ और 2023 में एबडेन के साथ उपविजेता रहे थे। बोपन्ना मास्टर्स 1000 टूर्नामेंट में पुरूष युगल खिताब जीतने वाले सबसे उम्रदराज खिलाड़ी भी रहे। उन्होंने पिछले साल एबडेन के साथ इंडियन वेल्स टूर्नामेंट जीता था।

राइट्स लिमिटेड
(भारत सरकार का एक उपक्रम)
सिलर, प्लॉट नं. 1, सेक्टर-29, गुरुग्राम-122001

निम्नलिखित पदों/विषयों के लिए
वॉक-इन/ऑनलाइन साक्षात्कार

यीसी नं.	पद	रिक्तियों की संख्या
40/24	पर्यावरण सामाजिक निगरानी विशेषज्ञ	2
41/24	जूनियर डिज़ाइन इंजीनियर (मैकेनिकल)/ मेडिकल गैस लाइन प्रणाली	3
42/24	जूनियर डिज़ाइन इंजीनियर (इलेक्ट्रिकल)	1
43/24	केज ड्राफ्ट्समैन (स्ट्रक्चरल)	1
44/24	केज ड्राफ्ट्समैन (इलेक्ट्रिकल)	1
45/24	केज ड्राफ्ट्समैन (एचवीएसी)	2
46/24	केज ड्राफ्ट्समैन (जल आपूर्ति)	2
47/24	केज ड्राफ्ट्समैन (बाहरी कार्य)	1
48/24	केज ड्राफ्ट्समैन (उपकरण)	3

पद, वेतनमान, योग्यता, आयु, तिथि एवं स्थान, चयन प्रक्रिया आदि से संबंधित विस्तृत विवरणों के लिए उम्मीदवार राइट्स वेबसाइट www.rites.com पर कॉरियर सेक्शन के अधीन उपलब्ध विस्तृत विज्ञापन को देख सकते हैं।

सीएमवाईके प्रिंटेक के लिए तथा उसी की ओर से मुद्रक एवं प्रकाशक शोबोरी गाँगुली द्वारा टिन टिन प्रिंटेक प्रा.लि. सी-33 अमौसी इंडस्ट्रियल एरिया, नादरगंज लखनऊ से मुद्रित एवं चौथी मंजिल, सहारा शापिंग सेंटर, फैजाबाद रोड, लखनऊ (फोन: 0522-4036600) से प्रकाशित। प्रधान सम्पादक: शोबोरी गाँगुली, स्थानीय सम्पादक: विजय प्रकाश सिंह। पाठकों को सुझाव दिया जाता है कि इस अखबार के किसी भी विज्ञापन पर प्रतिक्रिया करने से पहले पूरी तरह उसके बारे में दिए गए दावों, शर्तों और तथ्यों की जांच कर लें। पायनियर ग्रुप के मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक या उसका कोई भी कर्मचारी विज्ञापनदाता द्वारा उनके किसी उत्पाद तथा सेवा हेतु किए गए किसी दावे की सच्चाई का आश्वासन या उत्तरदायित्व नहीं लेता है। ऐसे विज्ञापनों के बाद किसी आर्थिक क्षति के लिए वे जिम्मेदार भी नहीं हैं।